वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

वर्ष 2, अंक 2

तर्कशील पथ

मार्च - 2015
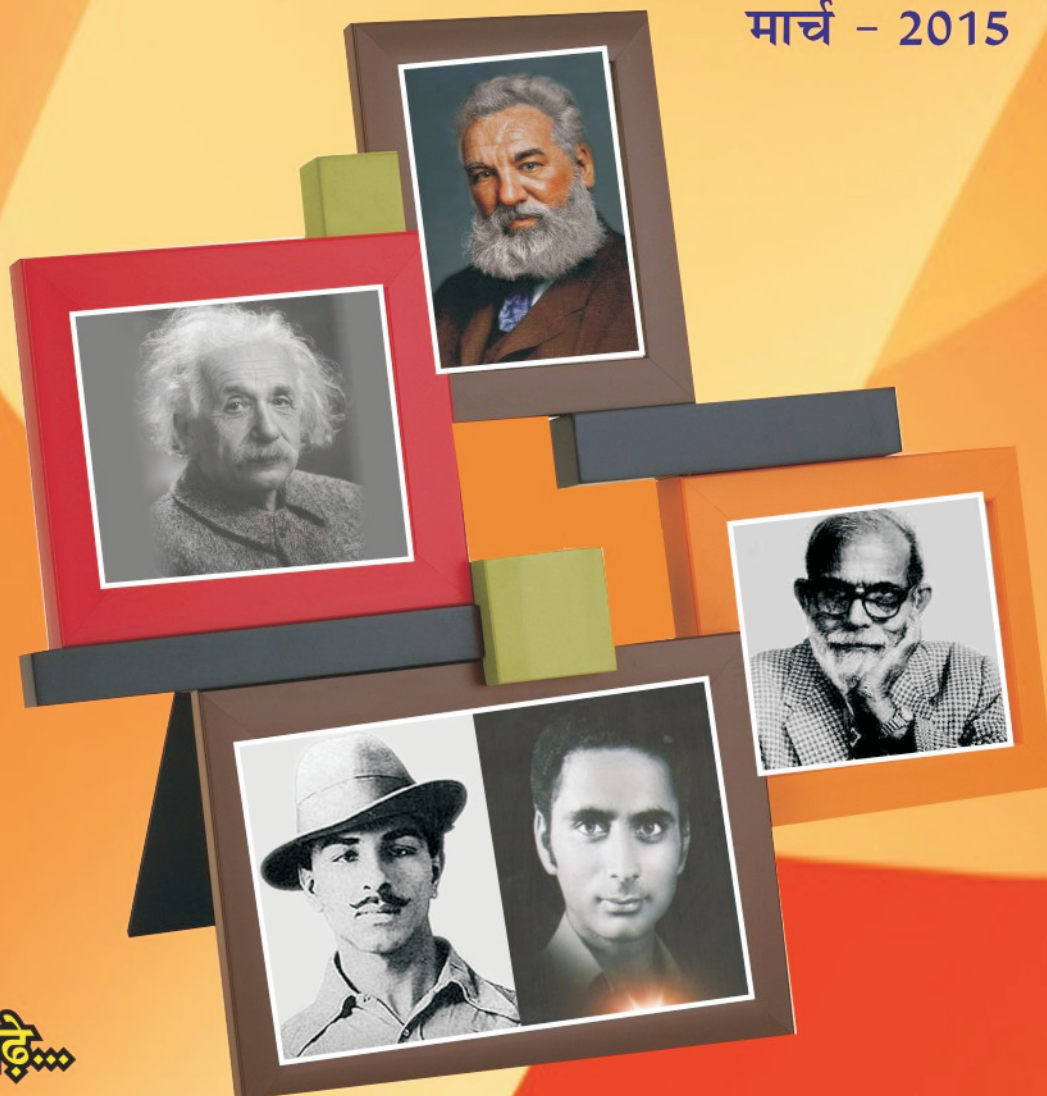
अन्दर पढ़े...

भाग्य और भगवान कमजोर मन को तसल्ली देने के बहाने है ...शहीद भगत सिंह

Reg. No. HARHIN05683/07/1/2013-TC

संपादकः

आर.पी.गांधी - 093154-46140

संपादन सहयोगः-

बलवन्त सिंह - 094163-24802

गुरमीत अम्बाला-094160-36203

अनुपम राजपुराः 094683-89373

बलबीर चन्द लोंगोवालः 098153-17028

हेम राज स्टेनोः 098769-53561

पत्रिका शुल्कः-

वार्षिकः 200/- रू.

विदेशः वार्षिकः 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरणः

गुरमीत अम्बाला

e-mail:tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पताः

बलवन्त सिंह (प्रा.)

म.नं.1062, आदर्श नगर, नज़दीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।

जिला कुरूक्षेत्र-136131 (हरियाणा)

e-mail:tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia

पेज को लाईक करें

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है

http://tarksheelblog.wordpress.com

पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग आन करें

www.tarksheel.org

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग :

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969

E-mail: doabacommunications@gmail.com

संकेतिका

सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक बैठक तरावड़ी जिला करनाल में दिनांक 17–05–2015, दिन रविवार को प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक होगी। नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

संपर्क सूत्रः

पदम सिंह– 9813714732

साधु राम – 9253059070

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 3191855465 में जमा करा सकते है। शुल्क जमा कराते समय 1000 रूपये तक 50 रूपये अतिरिक्त जमा करवायें। और अपना पता मोबाईल 9416336203 पर एस.एम.एस करें।

नोटः किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी, यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद

धर्म निरपेक्षता और समाजवाद भारतीय संविधान में वह सर्वोच्च गुण है जो इसे विश्वपटल पर महान घोषित करता है, यद्यपि मूल संविधान में ये दोनों शब्द शामिल नहीं थे, फिर भी संविधान का चरित्र समाजवादी व धर्म निरपेक्ष था। इन शब्दों को 42वें संशोधन के रूप में 1976 में शामिल किया गया।

धर्म निरपेक्षता व समाजवाद लोकतंत्र की सभी नागरिकों के कल्याण की एक उच्च्य अवधारणा है। विश्व के वे देश जहां भी धर्म निरपेक्षता व समाजवाद का चरित्र रहा है, नागरिकों के लिए कल्याणकारी रहे हैं। इन शब्दों की मूल भावना, सभी नागरिकों को समान समझना व सभी के कल्याण के लिए योजना बनाना लागू करना है।

धर्मनिरपेक्षता पर बड़ा प्रहार संघी संगठन शुरू से ही करते आ रहे हैं, कभी इसे पंथनिरपेक्षता के रूप में भी रखा जाता है, कभी सर्वधर्म समभाव के रूप में, लेकिन मूल रूप में धर्म के आधार पर नागरिकों में भेदभाव न करना इस शब्द का मूल तत्व है। यद्यपि धर्मनिरपेक्ष अंग्रेजी के सेकुलरिज़्म का अनुवाद माना जाता है, जिस का मूल भाव धर्म को स्टेट से खारिज करना है लेकिन भारत में इसे सर्वधर्म समभाव के रूप में अपनाया जाता है, जो फिर भी धार्मिक राज्य की कठोर अवधारणा से मुक्त है और जिसे स्वीकार करने में किसी को भी एतराज नहीं होना चाहिए।

धर्मनिरपेक्षता पर बहस की शुरुआत 26 जनवरी को डी. ए. वी. पी. के एक विज्ञापन से होती है जिसमें धर्मनिरपेक्षता व समाजवाद शब्द गायब थे, लेकिन बाद में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने अपने स्पष्टीकरण में संविधान की मूल प्रति प्रयोग करने को कारण बतलाया। लेकिन शिवसेना के संजय राउत ने इन शब्दों की अहमियत को खारिज करने का ब्यान दिया जो कि चिंता का विषय है। संघी संगठन तो प्रारम्भ से ही संविधान के धर्मनिरपेक्ष चरित्र को निशाना बनाते रहे हैं। इन संगठनों के मुख्यिा तो हिन्दू राष्ट्र का राग भी अलापते रहते हैं या सभी भारतीय धर्मों को हिन्दू घोषित करते हैं, जबकि सिख, बौध व जैन धर्मावलम्बी अपने को अलग धर्म के रूप में परिभाषित करते हैं।

देश में धर्मनिरपेक्षता विरोधी प्रलाप चिन्तनीय है, यद्यपि वामपंथी व समाजवादी पार्टियों के अलावा अन्य धर्मनिरपेक्ष पार्टियों ने इस पर सख्त एतराज किया है। ये दोनों तत्त्व धर्मनिरपेक्षता व समाजवाद भारतीय लोकतंत्र के मजबूत स्तम्भ हैं। इन्हें चाह कर भी कोई कमजोर नहीं कर सकता। इसकी जड़ें बेहद गहरी हैं, परन्तु फिर भी धर्म आधारित राज्य का स्वप्न देखने वालों का सदा विरोध होता रहना चाहिए। यही धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद को अंगीकार करने वालों का कर्त्तव्य है।

इतिहास के झरोखे से

रौलट एक्ट- इसका वर्तमान प्रसंग

-हेमराज स्टेनो

18 मार्च 1919 को हमारे देश भारतवर्ष पर शासन कर रहे ब्रिटिश पूंजीपति शासकों ने एक दमनकारी कानून पास किया था, जोकि रौलट एक्ट के नाम से बदनाम है। यह एक्ट क्या है, क्यों बनाया गया एवं वर्तमान में इससे हमें क्या सबक मिलता है, इस विषय पर चर्चा करते हैं।

28 जुलाई 1914 से आरंभ होकर 11 नवम्बर 1918 तक विश्वयुद्ध चला, जिसे प्रथम विश्वयुद्ध कहा जाता है। इसमें मोटे तौर पर एक तरफ यू.के., फ्रांस एवं रूस था तथा दूसरी ओर जर्मनी, आस्ट्रिया एवं हंगरी इत्यादि देश थे। तब हमारा देश अंग्रेजों का गुलाम था। अंग्रेजों को यह खतरा था कि उन द्वारा इस विश्व युद्ध में उलझ जाने के कारण भारतीय जनता विद्रोह कर सकती है, इसलिए उन्होंने एक कानून बनाया, जिसे डिफेंस आफ़ इंडिया का नाम दिया गया, क्योंकि यह कानून ही विद्रोहों को कुचलने के लिए बनाया गया था इसलिए इसमें हर प्रकार की दमनकारी धाराएं शामिल थी। जब प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ गया तो हमारे देश के अंदर का घटनाक्रम अंग्रेजों की आशा के बिल्कुल विपरीत हुआ। हमारे देश के नेताओं को यह आशा थी कि युद्ध के पश्चात अंग्रेज हमें होमरूल (केंद्र में अंग्रेजों का शासन के रहते प्रांतों में शासन का अधिकार) की अनुमति दे देंगे। इसलिए हमारे देश के नेताओं ने इस युद्ध में अंग्रेजों की हर तरह से मदद की थी। यह मदद इतनी अधिक थी कि हमारे देश के सैनिकों की संख्या अंग्रेज सैनिकों से अधिक थी। इस युद्ध में 47,746 भारतीय सैनिकों की जान चली गई तथा 65,126 सैनिक घायल हुए।

अंग्रेजों ने इस विश्वयुद्ध में अपने सैनिक खर्चों का बहुत बड़ा भार भारत पर डाल दिया। इसका परिणाम यह निकला कि साधारण जनता और अधिक कंगाली की ओर धकेल दी गई। इस युद्ध के दौरान रूस में अक्तूबर 1917 में क्रांति आ गई तथा वह देश समाजवाद की ओर अग्रसर होने लग गया। इस ऐतिहासिक घटना ने विश्व के समस्त देशों के श्रमिकों का ध्यान चुम्बक की भांति अपनी ओर आकर्षित किया। इससे पूर्व अर्थात् 1919 से पूर्व के मुक्ति आंदोलनों का प्रेरणास्रोत मैजिनी आदि राष्ट्रीयता पसंद नेता थे। हमारे देश में भी 1919 का करतार सिंह सराभा एवं अन्य गदरियों का गदर आंदोलन भी प्रभावित हुआ। अंग्रेजों में डर उत्पन्न हो गया कि रूस एक कम्यूनिस्ट देश होने के कारण इन आंदोलनों की सहायता करेगा तथा साथ ही अंग्रेजों के विरुद्ध होने के कारण जर्मनी भी मदद करेगा। इस खतरे को भांपते हुए उन्होंने इस उद्धेश्य के लिए सन् 1918 में एक कमेटी बनाई कि वह यह बताए कि भारत में उठने वाली प्रत्येक बगावत को किस प्रकार सख्ती के साथ कुचला जाए।

यह कमेटी अंग्रेज न्यायाधीश सिडनी रौलट की अध्यक्षता में बनाई गई इस कमेटी ने प्रथम विश्व युद्ध वाले डिफेंस आफ इंडिया रेगूलेशन एक्ट, जिसकी अवधि समाप्त हो चुकी थी, को ही बढ़ाकर नए रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें शामिल किया गया कि :-

सरकार अंग्रेजी राज्य के अधीन रहने वाले किसी भी व्यक्ति को आतंकवादी होने के संदेह के

आधार पर दो वर्ष तक बगैर मुकदमा चलाए जेल में रख सकती है।

प्रैस पर पाबंदी, बिना वारंट के गिरफतारी, बिना मुकदमें की सुनवाई के अनिश्चित समय के लिए बंदी बनाना।

दोषियों को किसी प्रकार की कोई जानकारी सरकार नहीं देगी।

सरकार जब उन्हें छोड़ेगी भी तो उन्हें अपनी जमानत करवानी पड़ेगी तथा वे किसी प्रकार के राजनीतिक, शैक्षणिक अथवा धार्मिक गतिविधियों में भाग नहीं ले सकेंगे।

क्योंकि इस कमेटी की अध्यक्षता सिडनी रौल्ट कर रहा था। इसलिए इसे रौल्ट एक्ट का नाम दे दिया गया। यह एक्ट मार्च 1919 में लागू किया गया।

महात्मा गांधी एवं अन्य भारतीय नेताओं ने इसे 'काला कानून' कहा और इसका विरोध किया। इस विरोध को रौलट सत्याग्रह का नाम दिया गया। इस पर हड़ताल करने का फैसला हुआ। 30 मार्च को दिल्ली में सत्याग्रह प्रारंभ हो गया। स्वामी श्रद्धानंद के नेतृत्व में निकाले जा रहे जुलूस पर पुलिस ने गोली चला दी। पांच व्यक्ति मौके पर ही मारे गए तथा अनेकों घायल हो गए। कलकत्ता एवं दिल्ली मुख्य हिंसक क्षेत्र बन गए थे। इस हड़ताल के दौरान गांधी जी के दृष्टिकोण अनुसार कुछ गड़बड़ियां हुई। इस पर गांधी जी ने तो यह कहते हुए इसके विरोध से मुंह फेर लिया कि यह उनके सत्याग्रह (पूर्णतः अहिंसक) के सिद्धांत के अनुसार नहीं है। परन्तु इस कानून का पंजाब में भी जबरदस्त विरोध हुआ। कांग्रेस के दो नेता डा. सत्यपाल एवं सैफूदीन किचलू गिरफतार कर लिए गए। पंजाब को पुलिस की जगह सेना के हवाले कर दिया गया।

13 अप्रैल, 1919 को वैसाखी के दिन जलियांवाला बाग में एक भारी एकत्रता हुई, परन्तु इससे यह प्रभाव नहीं लिया जाना चाहिए कि यह श्रद्धालुओं की धार्मिक एकत्रता थी। यह रौलट एक्ट एवं उक्त दोनों नेताओं की गिरफतारी के विरोध में हुई एकत्रता थी। इसलिए यहां पर जितने भी शहीद हुए वे ब्रिटिश हुकूमत से भारत वर्ष को मुक्त करवाने वाले शहीद हैं। रौलट एक्ट के इस विरोध को कुचल देने के लिए जनरल डायर ने 379 लोगों को शहीद किया एवं लगभग 1137 लोग घायल हुए। यद्यपि कई हलके इनकी संख्या इससे अधिक दर्शाते हैं।

अतः यहां तक की विचार-चर्चा से साफ देखा जा सकता है कि रौलट एक्ट, अंग्रेजों द्वारा पूर्ववर्ती बनाए गए काले कानूनों की श्रृंखला की ही एक कड़ी था।

कि इस प्रकार के काले कानून शोषक वर्गों द्वारा अपने शोषण एवं राजसत्ता को कायम रखने हेुत बनाए एवं लागू किए जाते हैं।

कि जब भी हुकूमतों को यह डर सताने लग जाता है कि उनके विरुद्ध लोग उठ खड़े हो सकते हैं अथवा खड़े हो रहे हैं तो हुकूमतों को इस प्रकार के काले कानूनों की आवश्यकता पैदा होती है तथा इसी आवश्यकता में से ही ऐसे काले कानून बनाए एवं अमल में लाए जाते हैं।

तात्पर्य यह है कि इस प्रकार के काले कानून शोषक एवं अत्याचारी राजनीति का अभिन्न अंग बने हैं। कोई कह सकता है कि कैसे? मान लो कोई किसी का शोषण नहीं करना चाहता तो उसे किसी को दबाने की क्या जरूरत होगी? बिल्कुल भी नहीं। इसके विपरीत भी देख लो, वह यह कि यदि किसी का किसी प्रकार से शोषण नहीं किया जाता तो उसको विद्रोह के रास्ते पर जाने की क्या जरूरत होगी? बिल्कुल नहीं। अतः जहां पर शोषण है वहां पर अत्याचार भी है तथा जहां पर शोषण एवं अत्याचार वहां पर इसके साथ टकराव भी है।

अब इससे आगे यह बात वर्तमान दौर पर आजमा कर भी देख लो। आज हमारे देश में अपने देश के ही शासक शासन कर रहे हैं। क्या इन्होंने

रौलट एक्ट जैसे कानून नहीं बनाए? बनाए हैं। उदाहरण के तौर पर पंजाब सरकार (सरकारी एवं निजी जायदाद नुक्सान रोधी) बिल 2014में लेकर आई। इसकी एक धारा है 'नुक्सान करने वाली कार्रवाई' यह क्या है? इस धारा में प्रावधान है कि किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह, संगठन अथवा किसी पार्टी चाहे वह सामाजिक, धार्मिक अथवा राजनीतिक हो, की कार्रवाई जैसे कि आंदोलन, हड़ताल, धरना, प्रदर्शन, बंद, मार्च अथवा जुलूस, रेल अथवा सड़क यातायात रोकना इत्यादि जिससे सरकारी अथवा निजी सम्पति की तोड़ फोड़, पूर्णतः विध्वंस होना, इसे नुक्सान करने वाली कार्रवाई माना जाएगा। अब इसका साफ अर्थ है कि कोई भी अपने अधिकारों के प्रति किसी भी प्रकार का कोई विरोध प्रकट नहीं कर सकता। यदि कोई ऐसा करेगा तो उसे सजा अथवा जुर्माना हो जाएगा। यद्यपि इस बिल का जनतांत्रिक शक्तियों द्वारा जबर विरोध हुआ है, जिसे सरकार ने अपने नफा-नुक्सान को देखते हुए अभी तक लागू नहीं किया, परन्तु भविष्य में कभी लागू किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त भी हमारे देश की भिन्न-भिन्न केंद्रीय सरकारों ने तीन दर्जन से भी अधिक ऐसे दमनकारी कानून बनाए हैं तथा विभिन्न राज्यों द्वारा बनाए गए दमनकारी कानून अलग हैं।

पंजाब बारे बिल से ही साफ हो जाता है कि यह जनता के हर प्रकार के विरोध को कुचलने के लिए लाया गया। जैसा कि पहले ही बात की जा चुकी है कि कुचलना किस लिए? अपनी राजसत्ता एवं शोषण को कायम रखने के लिए। इसीलिए स. भगत सिंह ने कहा था कि, 'गोरों के स्थान पर भूरे आ जाएं' तो भारत की जनता को कोई फर्क नहीं पड़ेगा। यह बात जहां पर जनता की अन्य क्षेत्रों में मंदहाली पर खरी उतरती है, वहां पर वर्तमान के हमारे राष्ट्रीय शासकों द्वारा बनाए जाते काले कानूनों पर भी पूरी तरह से खरी उतरती है। अतः जब तक हमारी सामाजिक व्यवस्था शोषक वर्गों की पोषक है, तब तक अंग्रेजों द्वारा बनाए गए रौलट एक्ट की भांति ही हमारी राष्ट्रीय सरकारों द्वारा काले कानून बनाए एवं अमल में लाए जाते रहेंगे। इसलिए 18 मार्च का दिन जहां रौलट एक्ट जैसे आज के काले कानूनों के विरुद्ध संघर्ष करने की जरूरत पैदा कर देता है, वहां इनके विरुद्ध संघर्ष करते हुए इनकी पूर्णतः समाप्ति के लिए समानता वाली सामाजिक व्यवस्था के निर्माण की आवश्यकता को भी उजागर करता है।

मो : 098769-53561

-हिन्दी अनुवाद

बलवंत सिंह लैक्चरार

★★

बड़े काम का नारियल पानी

नारियल स्वादिष्ट होने के साथ-साथ आपकी सेहत का भी साथी होता हैं। खासकर नारियल पानी में कई ऐसे गुणकारी तत्व मौजूद होते हैं, जो त्वचा के लिए फायदेमंद साबित होते हैं। त्वचा को साफ करने में नारियल पानी बेहद उपयोगी है। यह मुंहांसों और झाइयों को भी दूर करने में मददगार होता है। नारियल पानी नेचुरल मॉश्चराइजर भी है। इसके सेवन से मांस पेशियों की ऐंठन भी दूर होती है। यह पोटैटिशयम का मुख्य स्त्रोत है। साथ ही इसमें विटामिन, मिनरल्स, मैग्नीशियम, मैगनीज भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। इसे पीने से शरीर में कोलेस्ट्रोल की मात्रा नियंत्रित होती है। अगर आप चाहते हैं कि आपके बाल घने और चमकदार रहें तो नारियल पानी एक प्राकृतिक कंडीशनर का भी काम करता है। बालों में चमक और मजबूती लाने के लिए इससे बालों को धोएं। हैंगओवर, शरीर में पानी की कमी को दूर करने, स्ट्रोक, हाइपरटेंशन,

अतृप्त मन एवं उत्साहहीन जीवन

सुरजीत सिंह ढिल्लों
0175-3046541

निर्मूल डर, अपूर्ण आशाओं एवं विफल आवेगों से युक्त मानव के जीवन में उस शांति के लिए मामूली सी व्यवस्था है, जिसके लिए प्रत्येक व्यक्ति इच्छित है। शा ने एक बार कहा था : ''जो व्यक्ति स्वर्ग में रहने के लायक नहीं, वह स्वर्ग में यदि पहुंच जाए, तब वहां वह गैर महसूस करता हुआ बेचैन ही रहता रहेगा।''

कुछ ऐसी दशा ही हमारी अपनी है। शांतिमय आसानी के साथ जीवन व्यतीत करने के लिए इस संसार में बहुत कुछ है। यहां बहते हुए पानी हैं, रुमकती हुई पवनें हैं, बादल फुहारों की बौछार कर रहे हैं, हरियाली चारों ओर ताज़गी बिखेर रही है, पुष्प टहक और महक रहे हैं, जबकि भूमि अनाज उगलती जा रही है। यदि स्वर्ग कहीं है भी, तो उसमें भी ऐसा कुछ ही होगा! फिर हम इस स्वर्ग का आनंद क्यों नहीं उठा रहे ? क्या हम अपने स्वभाव के कारण इसका आनंद उठा सकने के योग्य नहीं हैं ?

हमारे समाज में लुभावने शब्द उच्चारण, दूसरों की भलाई चाहने एवं एक-दूसरे के लिए हमदर्दी की भावना रखने वाले व्यक्ति हैं। इसमें संगीतमय स्वर, कलात्मक अनुभव एवं गंभीर सोच-विचार की कमी नहीं है। इसके बावजूद हम आसानी के साथ नहीं रह रहे तथा अंदर ही अंदर जले-भुने हुए बने रहते हैं। इसका कारण हमारा अपना स्वभाव है, जिसकी अगुवाई के अधीन हम अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। दीपक तले अंधेरे की भांति सभी की भलाई चाहने वाली संस्थाओं एवं संस्थानों की ओट में अन्याय, अत्याचार एवं लूट-खसोट पल रहे हैं। लगता है कि हमारे स्वभाव में उस बनमानुष के अंश बचे रह गए हैं, जिससे हम 60 लाख वर्ष पूर्व विकसित होना शुरू हुए थे। शांति के लिए तमन्ना के बावजूद स्वभाव में रचे हुए बनमानुषीय अंशों के कारण हम बिना शांति का जीवन भोगने के लिए मजबूर हैं। शांति मृगतृष्णा बन कर हमें दूर से लुभाती रहती है तथा समीप जाने पर यह बालू की भांति भरभरा कर गिर जाती है।बकौल शायर :

सकून-ए दिल को, जहान-ए बेश-ओ-कम में मुझे ढूंढने वाले,
यहां सभी कुछ मिलता है, सुकून-ए दिल नहीं मिलता।

हमारा स्वभाव हमारे मन में से अंकुरित होते रहने वाली व्यवस्था है तथा मन का निवास, छह हड्डियों के बने हुए कपाल के अंदर सुरक्षित टिके हुए मस्तिष्क में है। यह मस्तिष्क विश्व की सर्वाधिक जटिल बनावट है, जोकि अरबों-खरबों कोशिकाओं का बना हुआ है। इन अरबों-खरबों कोशिकाओं में से प्रस्फुटित शाखाओं का अत्यंत जटिल ताना-बाना मस्तिष्क की रहस्यमय बनावट को और भी उलझाए रखता है। दिमाग की कोशिकाओं की शाखाओं के सिरों में से रिसते हुए रस हमारे बनते-बिगड़ते स्वभाव की अगवाई करते रहते हैं। उधर, आसपास में घटित हो रही घटनाओं के प्रभाव भी दिमाग के अंदर स्मृतियों के रूप में अंकित होते रहते हैं। इस प्रकार अंकित हुई स्मृतियों में से ही हमारी सोच एवं हमारा व्यवहार अंकुरित होते हैं।

हमारा दिमाग स्मृतियां एकत्र करने के लिए अति संवेदनशील है। बच्चे के जन्म से पूर्व ही दिमाग स्मृतियां समेटने के लिए सावधान हो जाता है तथा फिर उम्र भर यही करता रहता है। व्यतीत

होती हुई आयु के साथ एकत्र हो रही स्मृतियों का उपयोग भी व्यक्ति समस्त जीवन करता रहता है। यही उसकी असल पूँजी होती है। ये ही मन एवं सूझ-समझ का स्रोत होती हैं तथा ये ही उसके व्यक्तित्व की रूप रेखा बनाती रहती हैं।

दिमाग के अंदर से अंकुरित होते रहने वाले मन का भी कोई ठोस स्वरूप नहीं है। यह नभ में दिशाहीन भटक रहे बादल की भांति एक पल में कुछ और होता है तथा दूसरे क्षण में कुछ और। एक क्षण में यह लुभावने सपने देख रहा होता है तथा दूसरे क्षण में वह उदासियों में डूबा निराकार शक्तियों की मिन्नतें कर रहा होता हैं। मन की ऐसी अवस्था के कारण ही हम संतापमयी उलझनों में उलझे रहते हैं। हमारे मन में एक के बाद एक विचार उत्पन्न होते रहते हैं तथा भावनाओं की आंधियां चलती रहती हैं। यद्यपि ज्ञान एवं भावनाएं दोनों मन के अंदर साथ-साथ ही स्थित हैं परन्तु मन ज्ञान की अपेक्षा भावनाओं की ओर अधिक झुका रहता है, जोकि मामूली सी ख्वाहिश के साथ ही भड़क उठती हैं। उत्तेजित हुई भावनाओं को न तो नियंत्रित कर सकना संभव होता है और जल्दी से उन्हें संतुष्ट कर देना भी असंभव होता है। विफल रह रही भावनाएं ही आतंकवाद की ओर जाने वाले रास्ते की यात्री बनने के लिए तत्पर रहती हैं।

प्रायः प्रत्येक व्यक्ति को लगता है कि वह अन्य लोगों से अधिक दुखी एवं अशांत है, परन्तु यह निरोल एक भ्रम है। वास्तव में सभी लोग अपने-अपने स्थान पर अपनी ही प्रकार से दुखी एवं अशांत हैं। गंभीर विचारवान, संवेदनशील कलाकार, निपुण कार्यकारी, उच्च पदों पर सुशोभित अधिकारी एवं सत्ता के खिलाड़ी राजनीतिज्ञ इत्यादि सभी देखने में चाहे संतुष्ट एवं शांत लगते हों, परन्तु ये लोग साधारण व्यक्ति से भी अधिक अशांत जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जो लोग धन-दौलत को शांति का दूत समझते हैं, वे भी गलत सोचते हैं। उदाहरण के तौर पर दांत दर्द से पीड़ित व्यक्ति सोचता है कि जिस व्यक्ति के दांत दर्द नहीं होता, वह बहुत सुखी है। स्पष्ट है कि यह गलत राय है तथा यही गलत राय आर्थिक तंगी के साथ संघर्ष कर रहे व्यक्तियों की धन दौलत में घिरे व्यक्तियों के बारे में हैं। पानी की सतह पर तैर रहे हंस को देखकर यह लगता है कि वह अपने अंगों को हिलाए बिना ही शांत तैर रहा है, यद्यपि पानी की सतह के नीचे उसके पैर, चप्पू बनकर, आगे-पीछे तेजी के साथ चल रहे होते हैं। इस प्रकार हम सभी डर, इच्छाओं एवं आवेशों के बुने हुए जाल में उलझा हुआ जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

हमारे मनों के अंदर कुछ-कुछ लुभावना एवं अत्यधिक कुरूप समाया हुआ है। इच्छाएं पूर्ण होने की आशा भी उसी मन में से उत्पन्न होती हैं, जिसमें से इन के न पूर्ण होने का भय उत्पन्न होता है। मोह एवं विवेक के साथ-साथ मन में से ईर्ष्या एवं घृणा भी जन्म लेते रहते हैं। हमारा स्वभाव यह भी है कि जो कुछ हमारे पास है, वह हमारे लिए चाहे कितना भी अनमोल है, उसकी ओर से लापरवाह होकर हम व्यर्थ की वस्तुओं के पीछे पागल हुए भटकते रहते हैं। अपने अहं को संतुष्ट करने के लिए हम में से प्रत्येक ने अलग-अलग अनेकों कारोबार अपना रखे हैं। क्या ये शांति की ओर जाने वाले पथ हैं ?

अंधविश्वास एवं आतंकवाद समेत प्रत्येक प्रकार का विवेकहीन व्यवहार डर के गर्भ में से जन्म ले रहा है। भयभीत होना हमें विरासत में मिला हुआ एक प्राकृतिक दोष है। सुरक्षित जीवन व्यतीत करने के लिए भयभीत होना एक आवश्यक शर्त है। यथायोग्य डर अपनी जगह परन्तु हमने तो अधिकतर तर्कहीन व्यर्थ के डर पाल रखे हैं, जिनका खतरों के अनुभव के साथ कोई भी संबंध नहीं होता। हमारा हाल यह है हम मामूली सरसराहट को भी भूकम्प समझ कर सहम जाते हैं। हमारे निर्मूल डर कायरता का स्रोत है। ये हमें कायर बनाए जा रहे हैं और हम कायर बने हुए रात्रि को भी रात्रि

कहने से झिझक रहे हैं।

गलत बातें खामोशी से सुन लेना,
इसमें फायदे हैं बहुत, मगर अच्छा नहीं लगता।

हमारे जीवन के कमल को खिलाए रखने के दो प्रभावशाली मानसिक साधन हैं : एक उत्साह एवं दूसरा आशा। उत्साह जीवन को मुरझाने नहीं देता तथा आशा इसकी चमक-दमक को बनाए रखती है, परन्तु आशाएं कम ही बनी रह सकती हैं। आशा के टूटने पर बहुत दुख होता है और उस समय जीवन में से उत्साह भी उड़ान भर जाता है। अधिकतर निराधार आशाएं ही टूटती हैं, जोकि हकीकत का सामना होते ही हवा हो जाती हैं। ऐसी आशाएं हम अपनी अधीरता से बचने के लिए पाल लेते हैं। मृत्योपरांत जीवन की आशा अधिकतर लोगों को होती है परन्तु क्या यह हकीकत है?

यूं तो मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन,
दिल को बहलाने के लिए गालिब ये ख्याल अच्छा है

दिल को खुश करने के लिए हमारे बहुत से निराधार विश्वास हैं। ऐसा करके हम अशांत रहने के अवसरों में वृद्धि करते रहते हैं।

जीवन को शांतिमय स्थिरता अर्पण करने एवं विश्वसनीय आशाओं के द्वारा इसको उत्साहित करने के लिए वास्तविकता के बारे में ज्ञानवान होना आवश्यक है। देखा जाए तो जीवन न तो फूलों की सेज है और न ही कांटों का बिछौना। यह इन दोनों का मिश्रण है। इन दोनों में से किसका पलड़ा भारी है, यह व्यक्ति के अपने दृष्टिकोण एवं उसके हकीकत के बारे में ज्ञान पर निर्भर करता है तथा इस पर भी वह जीवन की भावनाओं के झरोखे में से परख रहा है अथवा ज्ञान के झरोखे में से।

जिंदगी तन्हा सफ़र की रात है,
अपने अपने हौसले की बात है।

हिन्दी अनुवाद
बलवंत सिंह लैक्चरार

ज़िंदगी के साथ चल!

-डा० रणजीत

चलना है अगर तुझे तो ज़िंदगी के साथ चल !
जल ज़मीं के साथ चल,
तू रोशनी के साथ चल !

बनना है किसी का गर तो बन अवाम का
खुद के दायरों को तोड़ बन तमाम का
न बेबसी के साथ चल, न बेक़सी के साथ चल!

कट नहीं सकेगी रात ये विहाग से
जल के ही ढलेगी ये तो सुर्ख आग से
काटना है गर इसे, तू आग बन के साथ चल!

जुल्म ज़ोर-ज़ब्र के नशे में चूर है
जाने कितनी दूर पर सुबह का नूर है
बीहड़ों में बढ़ना है तो, बेखुदी के साथ चल!

खून से जो बो रहे हैं क्रांति की फ़सल
बाजुओं के बल जहां को जो रहे बदल
चल उन्हीं के साथ, उनकी तिश्नगी के साथ चल !

अनमोल वचन

''यदि ईश्वर लोगों की प्रार्थनाएं सुनता होता तो सभी लोग पल भर में ही तबाह हो जाते; क्योंकि वे हर समय एक-दूसरे के विरूद्ध ही प्रार्थनाएं करते हैं।''
एपिक्यूरियस

सत्य

–कर्नल इंगरसोल

गतांक से आगे.........

(2)

जो कुछ मैंने कहा है वह सच प्रतीत होता है, लगभग स्वयं-सिद्ध। तुम प्रश्न कर सकते हो कि कौन है जो कहता है कि गुलामी स्वतंत्रता से अच्छी है? मैं आपको बताता हूं-

जितने बड़े-बड़े महंत और पुरोहित हैं, जितने कट्टरपंथी धर्म हैं, जितने पुजारी हैं। वे सब कहते हैं कि उनके पास परमात्मा से प्राप्त किया हुआ 'इलहाम' (देववाणी, आकाशवाणी) है।

प्रोटैस्टैंट, मतवाले कहते हैं कि प्रत्येक आदमी का यह कर्त्तव्य है कि वह बाईबल को पढ़े, समझे और विश्वास करे कि वह 'इलहामी' किताब है। किन्तु यदि वह ईमानदारी से इस परिणाम पर पहुंचता है कि बाईबल 'इलहामी' किताब नहीं है और अपने दिमाग में इसी धारणा के लिए मर जाता है, तो वह सदैव के लिए दुख भोगेगा। वे कहते हैं कि पढ़ो, लेकिन साथ ही कहते हैं-या तो विश्वास करो, या सदा के लिए विनाश को प्राप्त होओ।

चाहे बाईबल आपको कितनी ही तर्क-विरुद्ध लगे, आपको उसे मानना ही होगा। चाहे उसमें वर्णित 'चमत्कार' कितने ही असंभव लगें, तो भी उन्हें मानना ही होगा। चाहे उसके नियम कितने ही निर्दयी लगें, तुन्हें स्वीकार करना होगा।

धर्म इसे 'विचार-स्वातंत्र्य' कहता है।

हम बाईबल पढ़ते हैं, किन्तु हम पर परमात्मा का भय और उसकी टेढ़ी नजर रहती है। हमें नरक की आग की चमक में बैठ कर पढ़ना होता है। एक ओर राक्षस है, जिसके हाथ में पीड़ा देने के अनेक साधन हैं, दूसरी ओर परमात्मा है, जो हमें अनंत काल के लिए विनाश के गड्ढे में धकेलने को तैयार है और धर्म कहता है कि-'तुम अपना चुनाव करने में स्वतंत्र हो। परमात्मा नेक है, वह तुम्हें अपना चुनाव करने की स्वतंत्रता देता है।'

बड़े-बड़े पोप और पादरी गरीब लोगों से कहते हैं-'तुम्हें बाईबल पढ़ने की आवश्यकता नहीं। तुम इसे समझ नहीं सकते। इसीलिए इसे इलहामी किताब कहा गया है। हम इसे तुम्हारे लिए पढ़ देंगे। जो हम कहें उसे तुम्हें मानना चाहिए। हमारे हाथ में नरक की चाबियां हैं। यदि हमारा खंडन करोगे, तो तुम सदा के लिए परमात्मा के जेलखाने के बंदी हो जाओगे।'

यह कैथोलिक धर्म की 'स्वतंत्रता' है।

ये जितने भी पादरी और पुजारी हैं, इन सबका आग्रह है कि बाईबल का दर्जा मानवी तर्क के ऊपर है और प्रत्येक आदमी का कर्त्तव्य है कि वह इसे माने-चाहे वह इसे सच्चा चाहे न समझे, बिना इस बात का तनिक भी विचार किए कि यह तर्कानुकूल तथा बुद्धिगम्य है या नहीं।

उसका कर्त्तव्य है कि वह अपने आत्म मंदिर में से बुद्धि की देवी को निकाल कर बाहर करे और भयरूपी नाग के सामने जो कुण्डली लगाए बैठा है, सिर झुका दे।

इसे धर्म 'सदाचार' कहता है।

ऐसी अवस्था में विचार का क्या मूल्य हो सकता है? परमात्मा के शापरूपी लू के झोंके में दिमाग रेगिस्तान बन जाता है।

लेकिन, इतना ही नहीं है। आदमी से तर्क का आधार छुड़ा देने के लिए 'मजहब' केवल अनंत दुख-दर्द का भय ही नहीं दिखाता, किन्तु अनंत काल तक आनंदपूर्वक रहने का पुरस्कार मिलने की भी बात कहता है।

जो विश्वास करते हैं, उन्हें यह स्वर्ग के अनंत मजों की बात कहता है। यदि डरा नहीं सकता, तो यह रिश्वत देता है। इसे भय और लालच का भरोसा है।

बुद्धिमान आदमियों द्वारा आदृत होने के

लिए किसी भी धर्म का आधार सुनिश्चित बातें होनी चाहिएं। उसे उत्तेजना अथवा भय या लालच का नहीं, बुद्धि का सहारा लेना चाहिए। उसे कहना चाहिए कि मन की सारी शक्तियां और सारी इंद्रियां एक जगह इकट्ठी विचार करें और जो कुछ भी धर्म का कथन है उस पर बिना पक्षपात के, बिना भय के सम्पूर्ण सच्चाई के साथ विचार करें।

लेकिन ईसाई–मजहब कहता है–'भगवान ईसा मसीह पर विश्वास लाओ और तुम मुक्त हो जाओगे।' बिना इस विश्वास के मोक्ष नहीं। मोक्ष विश्वास का पुरस्कार है।

विश्वास का आधार होता है और सदैव होना चाहिए प्रमाण। पुरस्कार मिलने की आशा प्रमाण नहीं है। इससे कोई नया प्रकाश नहीं मिलेगा। इससे कोई बात सिद्ध नहीं होती। किसी शंका का समाधान नहीं होता। किसी संदेह की निवृत्ति नहीं होती।

क्या यह ईमानदारी की बात है कि किसी को किसी बात का विश्वासी बनाने के लिए पुरस्कार मिलने की आशा दिलाई जाए?

यदि कोई आदमी किसी न्यायाध्यक्ष को कोई फैसला करने के लिए अथवा कोई निर्णय देने के लिए कुछ देता है तो वह अपराधी गिना जाता है। क्यों? क्योंकि वह न्यायाध्यक्ष को इस बात की प्रेरणा देता है कि वह कानून के अनुसार, वास्तविकता के अनुसार, उचित निर्णय न देकर रिश्वत के अनुसर निर्णय दे।

रिश्वत कोई 'प्रमाण' नहीं है।

इसी प्रकार ईसा मसीह के बारे में यह कहना कि वह विश्वासियों को पुरस्कृत करेंगे, रिश्वत देना है। जो कहता है कि वह विश्वास करता है और करता इसलिए है कि उसे पुरस्कृत होने की आशा है, वह अपनी आत्मा को मलिन करता है।

उदारहण के लिए यदि मैं कहूं कि पृथ्वी के मध्य में एक हीरा है, जो सौ मील लंबा–चौड़ा है और कि मैं अपनी इस बात में विश्वास करने वाले को दस हजार डालर दूंगा, तो क्या मेरा ऐसा वादा 'प्रमाण' समझा जाएगा?

बुद्धिमान आदमी पुरस्कार नहीं, तर्क चाहेंगे। केवल ढोंगी आदमी धन की ओर देखेंगे।

इतना होने पर भी 'न्यू टैस्टेमेंट' के अनुसार ईसा ने विश्वासियों को पुरस्कृत करने की बात कही। यह पुरस्कार ही प्रमाण का स्थान लेने वाला था। जिस समय ईसा ने यह पुरस्कृत करने का वचन दिया। उस समय उसने एक वीर, स्वतंत्र, सच्ची आत्मा को भुला दिया, उसकी अवहेलना की, उसे घृणा की दृष्टि से देखा।

यह घोषणा कि मुक्ति 'विश्वासी' बनने से मिलती है, मानसिक स्वातांत्र्य के साथ मेल नहीं खाती। कोई भी आदमी जो 'विश्वास' और 'प्रमाण' के सबंध में थोड़ा भी विचार करता, ऐसी घोषणा नहीं करता।

वे तमाम 'प्रवचन' जिनमें कहा गया है कि आदमी 'विश्वास' द्वारा अपना उद्धार कर सकता है, हानिकर सिद्ध हुए हैं। ऐसे प्रवचनों से नैतिकता का ह्रास होता है और सदाचार तथा कर्त्तव्य की सच्ची कल्पना उलट–पलट जाती है।

सच्चे आदमी से जब विश्वास करने के लिए कहा जाता है, तो वह प्रमाण मांगता है। सच्चा आदमी जब किसी दूसरे को विश्वास करने के लिए कहता है, तो वह प्रमाण देता है।

लेकिन, यह इतना ही नहीं है।

अनंतकालीन पीड़ा के डर और सदाकालिक आनंद के वादों के बावजूद जब अविश्वासियों की संख्या बढ़ी, तब ईसाई मजहब ने दूसरा उपाय किया।

ईसाई मजहब के पादरियों ने अविश्वासियों से, नास्तिकों से कहा–यद्यपि ईश्वर तुम्हें परलोक में अनंत सजा देगा–जेल में डाल कर रखेगा, उस जेल में जिसके दरवाजे केवल लोगों को अंदर लेने के लिए खुलते हैं, तो भी जब तक तुम विश्वासी नहीं बनते, तब तक हम तुम्हें यहां कष्ट देंगे।

तब उन सब संप्रदाय के लोगों ने, जिनके नेता महंत, पुरोहित और पुजारी थे, अपने अविश्वासी पड़ोसियों को ढूंढ निकाला, उन्हें जेलखानों में बेड़ियां पहना कर डाल दिया, शिकंजों पर कसा, हड्डियां तोड़ डाली, जिह्वा खींच ली, आंखें निकाल डालीं, चमड़ी उधेड़ डाली और आग में जला दिया।

यह सब केवल इसलिए किया गया क्योंकि ये जंगली ईसाई 'अनंतपीड़न' के सिद्धांत में विश्वास करते थे और क्योंकि वे यह विश्वास करते थे कि स्वर्ग विश्वास का पुरस्कार है। इस प्रकार का विश्वास करने के कारण, वे विचार और वाणी की स्वतंत्रता के शत्रु बने। उन्हें अंतरात्मा की आवाज की किंचित परवाह नहीं थी। उन्हें आत्मा की सच्चाई की किंचित परवाह न थी। उन्हें मनुष्य की मनुष्यता की परवाह न थी।

सभी युगों में अधिकांश पुरोहित निर्दयी हुए हैं और (दूसरों के दुख-सुख की ओर से) लापरवाह। उन्होंने आदमियों पर झूठे दोषारोपण करके उन्हें पीड़ा पहुंचाई है। जब वे हार गए हैं, तब रेंगने लगे और गिड़गिड़ाने लगे हैं, परन्तु जब जीते हैं, तब उन्होंनें दूसरों को जान से मारा है। उनके दिल और दिमाग में दया का फूल कभी खिला ही नहीं। न्याय कभी उगा ही नहीं। अब वे इतने निर्दयी नहीं हैं। अब उनके हाथ से शक्ति जाती रही है, लेकिन अभी जो असंभव है, उसे संभव बनाने का प्रयत्न करते हैं। वे 'मूर्खों के धन' से अपनी जेबें भर लेते हैं। वे गलत बातों से अपना दिमाग भर लेते हैं और समझते हैं कि वे बुद्धिमान हैं। वे पौराणिक कथाओं से तथा गपोड़ों से अपनी आत्म-तुष्टि कर लेते हैं। वे भूत-प्रेतों में विश्वास करते हैं और जो है ही नहीं, उससे सहायता की आशा लगाए बैठे रहते हैं।

वे एक राक्षस (एक स्वामी) को आकाश में बिठाते हैं और मानव बंधुओं को उसकी दासता सिखाते हैं। वे आदमियों को गुलामों की तरह रेंगना सिखाते हैं। उन्हें मानव के साहस से डर लगता है। वे विचारक को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। वे बदला लेने की इच्छा लिए रहते हैं।

वे काल्पनिक नरक की गर्मी से अपने हाथों को उष्ण रखना चाहते हैं।

मैं उन्हें बताता हूं कि कहीं कोई नरक नहीं है। वे मुझे गालियां देते हैं कि मैंने उनका संतोष हर लिया।

कथा है, होरेस ग्रीले एक दिन जब सर्दी पड़ रही थी गांव के एक भंडार गृह में गया और अपने कोट के बटन खोल कर तापने बैठ गया।

थोड़ी देर में एक लड़के ने चूल्हे की आग को कुरेद कर कहा-'मिस्टर ग्रीले, चूल्हे में आग तो है ही नहीं।'

ग्रीले बोला-'शैतान कहीं का। यह तूने मुझे क्यों बताया? मुझे तो अच्छी-खासी गर्मी लग रही थी। क्रमशः

(लेखक की पुस्तक 'स्वतंत्र चिंतन' में से)

वायु-प्रदूषण के कारण 66 करोड़ भारतीय अपने जीवन के 3 साल खो देते है

-एक अध्ययन

वाशिंगटन, 21 फरवरी-यदि भारत वायु मानकों के अपने उद्देश्यों को पूरा कर सके तो तो 66 करोड़ भारतीय अपने आयु 3.2 वर्ष बढ़ जायेगी। यह बात एक खोज में बताई गई है और साथ ही यह कहा गया है कि यदि भारतीय वायु गुणवत्ता मानकों को पूरा करता है तो जीवन के 2.1 बिलियन वर्ष और जुड़ सकते हैं।

शिकागो, हार्वर्ड और येल विश्वविद्यालयों की एक टीम जिसमें कई भारतीय मूल के खोजकर्ता भी शामिल हैं, ने भारत में उच्च वायु प्रदूषण को, जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विश्व में सब से ज्यादा प्रदूषित स्थानों में से एक माना है, को जीवन की अवधि पर उल्ट प्रभाव डालने वाला पाया है।

शिकागों विश्वविद्यालय के एनर्जी पोलिसी इंस्टीच्यूट में लीड स्टडी के लेखक व डायरैक्टर माईकल ग्रीनस्टोन ने एक प्रैस विज्ञप्ति में कहा है 'भारत का ध्यान अधिकतर वृद्धि पर केंद्रित है। परन्तु 'वृद्धि' की पारम्परिक परिभाषा ने वायु प्रदूषण से स्वास्थ्य पर होने वाले दीर्घकालीन प्रभावों को अनदेखा किया है।'

नये आंकड़े तब आये जब विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने अनुमान में प्रकट किया कि विश्व के सर्वाधिक प्रदूषित 20 नगरों में से 13 भारत में हैं

महाराष्ट्र का जादूटोना विरोधी कानून 2013

- एस.एस. चौहान
09422131605

धारा-1 : भूत उतारने के बहाने व्यक्ति को रस्सी या लोहे की चेन से बांध कर मारना या डंडा या चाबुक से मारना, उसे चप्पल या जूता भिगोकर पानी पिलाना, मिरची जलाकर धुआं देना, छत से टांगना, रस्सी या बालों से बांधना, बाल उखाड़ना व्यक्ति के शरीर पर या किसी अंग पर गर्म लोहे से दागकर क्षति पहुंचाना, व्यक्ति को खुले में लैंगिक संबंध स्थापित करने के लिए बाध्य करना, व्यक्ति पर अमानुष कुकृत्य करना, व्यक्ति के मुंह में जबरदस्ती पेशाब डालना या मल डालना या इसी प्रकार की हरकत करना। दंडनीय अपराध माना जाएगा।

धारा-2 : किसी व्यक्ति का चमत्कार के प्रयोग द्वारा आर्थिक प्राप्ति करना और इसी प्रकार के प्रयोगों द्वारा लोगों को बेवकूफ बनाकर दहशत फैलाना भी अब दंडनीय अपराध माना जाएगा।

धारा-3 : आलौकिक शक्ति की कृपा प्राप्त करने हेतु, जान को खतरा हो सकता है अथवा शरीर को जानलेवा जख्म हो सकता है। ऐसी अमानुष, अनिष्ट और अघोरी प्रथाओं को अपनाना और इसी प्रकार की प्रथाओं को मानने के लिए प्रोत्साहित करना, उत्तेजना देना अथवा जबरदस्ती करना दंडनीय अपराध माना जाएगा।

विशेष नोट : *जैन लोगों का केशवपन और बाल खींचना, पोतराज का स्वयं के शरीर को रस्सी से मारना, सुन्ता, खत्ना करना, जलता कपूर खाना, आग पर चलना आदि प्रकार इसमें नहीं आएंगे।*

धारा-4 : मूल्यवान चीज, गड़ा हुआ धन और जलभंडार को ढूंढने के बहाने से या ऐसे ही किसी कारण से किया-कराया, भानुमती, पोल्टरजिस्ट के नाम से कोई भी अमानुष, अनिष्ट या अघोरी करतूत और जादू टोना करने और जारणमारण, टोना-टोटका के नाम से या इसी प्रकार के अन्य कारणों से नरबली देना अथवा देने का प्रयास करना अथवा ऐसी अमानुष घटना करने की सलाह देना, उसके लिए प्रोत्साहित करना अपराध है।

यवतमाल जिले में घांटजी तहसील के पास के एक गांव में सपना पलसकर नाम के 7 साल की बालिका को बलि चढ़ाया गया था। इसी प्रकार से अनेक बच्चों की आज तक बलि चढ़ाई गई है। इसे रोकने के लिए यह कानून प्रभावी सिद्ध होगा।

धारा-5 : अपने शरीर में अतिंद्रिय शक्ति होने के बहाने या किसी व्यक्ति के शरीर में अतिंद्रिय शक्ति होने का दावा करके अन्य लोगों के मन में डर पैदा करना अथवा उस व्यक्ति का कहना न मानने पर गंभीर परिणाम हो सकते हैं। ऐसी धमकी देना, बेवकूफ बनाना और लूटना, धोखाधड़ी करना अपराध है।

उदाहरणः भारत के ग्रामीण इलाकों में अनेक महिलाओं के शरीर में देवी-देवता प्रवेश करते हैं, ऐसी अंधविश्वासी लोगों की धारणा है, लेकिन देवी-देवता किसी भी व्यक्ति के शरीर में प्रवेश नहीं करते। सूचना, ढोंग या मानसिक रूग्णता के कारण उनके शरीर में किसी का संचार हुआ है ऐसा उनको लगता है। ऐसे लोगों को मानसोपचार तज्ञ के पास लेकर जाना चाहिए, जिनके शरीर में यदि कोई भी अतिंद्रिय शक्ति है, उनको नोट नंबर या अपनी जन्म तिथि पूछने पर वह बता नहीं सकती।

धारा-6 : कोई विशेष व्यक्ति करणी/टोना टोटका करती है, जादू टोना करती है अथवा भूत लगाती है अथवा तंत्र-मंत्र से जानवरों के आंचल से दूध समाप्त करती है, ऐसा बताकर उस व्यक्ति के बारे में गलतफहमी पैदा करना अथवा वह बीमारी फैला रही है, ऐसी अफवाह फैलाना, उस व्यक्ति का जीना

मुश्किल करना, परेशान करना या कठिन करना, कोई व्यक्ति शैतान होने का अथवा वह शैतान का अवतार है, ऐसा ऐलान करना।

यदि किसी मंत्र में शक्ति होती तो भारतीय सीमाओं पर सैनिकों को रखने की क्या जरूरत है। किसी मांत्रिक के हाथों में नींबू देकर वह मंत्र मारता और कहता...आतंकवादी चिपक जाओ, सरकार के करोड़ों रुपए बच जाते। तंत्र-मंत्र या जादू टोना से किसी को मारना है तो पहले डेंगू, मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों को मारना चाहिए या किसी अंधश्रद्धा निर्मूलन करने वाले कार्यकर्त्ता को जादूटोना अथवा मंत्र-तंत्र करके मारकर दिखाओ और करोड़ों का इनाम पाओ।...है किसी में हिम्मत....बेकार में बकवास करते हैं। दोस्तो, जो डर गया वह मर गया। इस बात को ध्यान में रखकर अपना जीवन निर्भयता से जीना चाहिए।

धारा-7 : जारणमारण, करनी/टोना टोटका अथवा चेटूक करने के नाम पर किसी व्यक्ति को मारपीट करना, उसे नंगा करके घुमाना अथवा उसके दैनिक व्यवहार पर पाबंदी लगाना, ऐसा करना कानूनन अपराध है।

कुछ लोग अपने दुश्मन के मकान के सामने नींबू काट कर उस पर सिंदूर लगाकर या आलपिन/कांटे चूभोकर रख देते हैं। उनको लगता है कि ऐसा करने से अपना दुश्मन मर जाएगा, लेकिन यह उनकी गलत धारणा है। इसलिए इस प्रकार की चीजों से किसी को डरने की बिल्कुल जरूरत नहीं है।

धारा-8 : भूत पिशाच्चों को आह्वान करके अथवा भूत पिशाच्चों को आह्वान करूंगा/बुलाऊंगा, ऐसी धमकी देकर आम जनता के मन में डर पैदा करना। किसी व्यक्ति को शारीरिक नुक्सान होने के पीछे भूत अथवा अतिंद्रिय शक्ति का हाथ/गुस्सा होने का कारण बताकर गलतफहमी फैलाना और उसे डाक्टरी इलाज लेने से रोककर उसके बजाए उसे अमानुष, अनिष्ट या अघोरी करतूत अथवा इलाज करने के लिए बाध्य करना, जादू टोना अथवा अमानुष करतूत करके अथवा ऐसा भ्रम पैदा करके किसी व्यक्ति को मरने का डर बताना, शारीरिक कष्ट पहुंचाने की अथवा उसका आर्थिक नुक्सान करने की धमकी देना।

उदाहरण- लोगों की अज्ञानता/अंधश्रद्धा के आड़ में दहशत फैलाकर लूटने वालों के खिलाफ यह धारा है। वास्तुशास्त्र का डर बताकर मकानों की तोड़फोड़ करना, ऐसा न करने पर आपका आर्थिक नुक्सान हो सकता है, ऐसा बताना। कालसर्प विधि करो, नहीं तो अंजाम बुरा होगा, ऐसा बताना। हैंडबिल या अखबारों, पत्रों द्वारा चमत्कारिक बातें छाप कर समाज में डर फैलाना आदि बातें इसमें आती हैं।

धारा-9 : कुत्ता, सांप, बिच्छु के काटने पर उस व्यक्ति को डाक्टरी इलाज/उपचार लेने से रोक कर अथवा प्रतिबंध लगाकर, उसके बजाए तंत्र-मंत्र, गंडादोरा आदि के द्वारा उपचार करना गलत है। इस प्रकार के उपचार करने पर उन लोगों पर कार्रवाई होती है, क्योंकि जहरीले सांप के काटने पर कोई भी मर सकता है। समय पर ऍन्ट नेक वेनम लगाने से मरीज बच सकता है। पागल कुत्ते के काटने से रेबीज होता और व्यक्ति की मौत हो जाती है। कोकण में पाए जाने वाले बिच्छु के काटने से भी आदमी मर सकता है। इसलिए कुत्ता, सांप या बिच्छू के काटने पर किसी प्रकार का जोखिम नहीं लेना चाहिए। कुछ ग्रामीण लोग सांप का जहर उतारने के लिए व्यक्ति को किसी बाबा, महाराज के मंदिर या थाने पर ले जाते हैं और सर्पी बारी/गाने गाते हैं। बिना जहर के सांप के काटने पर वह मरीज बच जाता और बाबा, तांत्रिक या महाराज ने बचाया ऐसी अफवाहें फैलाई जाती हैं, लेकिन अंदर की बात यह है कि साधारण सांप के काटने पर कोई भी मर नहीं सकता। डाक्टर के पास लेकर जाओ और बाद में कहीं भी लेकर जाओ।

धारा-10 : उंगलियों से आप्रेशन करने का वायदा

करना अथवा प्रेगनेंट महिला के पेट में पल रहे बच्चे के लिंग को बदलने का दावा करना....कानूनी अपराध माना जाएगा, क्योंकि कुछ साल पहले असलम बाबा ने इस प्रकार का दावा किया था। वह लोगों के पेट पर अखबार के कागज रखता था और उसके अंदर पोलिथीन में मूर्गियों की अंतड़ियां और लाल रंग छुपाकर रखता था और अपनी उंगलियों से आप्रेशन करने का नाटक करता था। उसका भंडाफोड़ अंनिस ने किया था। नैनोद मध्य प्रदेश का महाराज भी अनेक प्रेग्नेंट महिला के पेट में पल रहे बच्चे के लिंग को बदलने का दावा करता था। उसका भंडाफोड़ अंनिस के संस्थापक संघटक प्रा. श्याम मानव ने किया था। वह तो हर प्रेग्नेंट महिला को कहता था बेटी, तेरे पेट में लड़की है, लेकिन तू घबरा मत मैं तुझे दवाई देता हूं उसे समय पर लेना लड़की का लड़का बन जाएगा। ऐसा बेवकूफ बनाता था। मान लीजिए उसके पास 10 प्रेग्नेंट महिलाएं गई, उसमे से नैसर्गिक नियम के द्वारा 5 या 7 महिलाओं को लड़का होने पर बाबा के आर्शीवाद से ही लड़का हुआ है। ऐसा उनको लगता था, ऐसी महिलाएं बाबा का प्रचार दूर-दूर तक करती हैं और जिनको लड़कियां हुई है, वह महिलाएं अपने ही भाग्य को कोस कर चुप बैठ जाती हैं। यह सब शक्य अशक्यता के नियम से होता है। जैसे किसी मंतिमंद बालक को यदि हमने कहा कि निम्नलिखित प्रश्नों के जवाब हां या न में लिखो, उस बालक ने बिना सोचे-समझे सभी जवाब हां, हां, हां में लिखने पर उसे 30 से 70 प्रतिशत अंक मिल सकते हैं यह सब अंदर की बात है। दोस्तो, अपनी माता-बहनों को ऐसे पाखंडी महाराज, बाबा या बापू के पास मत भेजना। डाक्टरी इलाज कराना बहुत जरूरी है। महिलाओं के पास एक्स एक्स अंडबीज और पुरुषों के पास एक्स वाई शुक्राणू होते हैं। लड़के के लिए पुरुषों ने अपना वाई शुक्राणु डोनेट करना चाहिए तब लड़का हो सकता है, लेकिन यह उनके हाथ में नहीं है। महिलाओं को दोष देना गलत है। भारत की 10 प्रतिशत महिलाओं को बच्चे नहीं होते, उन्हें दत्तक लेकर अपना जीवन सफल बनाना चाहिए।

धारा-11 : स्वयं में विशेष आलौकिक शक्ति होने का अथवा किसी का अवतार होने का या खुद मैं ही पवित्र आत्मा हूं, ऐसा बताकर अथवा उसको मानने वाले/अनुयायी/भक्त को पिछले जन्म में तूं मेरी बीवी, पति या मंगेतर था/थी ऐसा बताकर उससे अनैतिक संबंध रखना, संतान न होने वाली महिला को आलौकिक शक्ति द्वारा संतान होने की गारंटी देकर उससे अनैतिक संबंध स्थापित करना। यह कानूनन अपराध माना जाएगा।.....विश्व में किसी के भी पास आलौकिक/दैविय शक्ति नहीं होती। आत्मा भी नहीं होता, आध्यात्मिक क्षेत्र में काम करने वाले या सामान्य लोग अपने मन को ही आत्मा मानते हैं। हमारे समाज में ऐसी मान्यता है कि हर महिला को संतान होना आवश्यक है। विवाह के एक या दो साल बाद उस स्त्री को यदि संतान नहीं हुई, तो उसे दोषी मानकर किसी पाखंडी बाबा, महाराज या गुरु या बापू के पास लेकर जाते हैं या कुछ महीने तक वहीं पर छोड़ कर आते हैं। इस सुनहरे अवसर का लाभ वह पाखंडी उठाता है। महिला को बाबा/महाराज/बापू से पुत्र प्राप्ति होने के बाद उस अभागन को बार-बार उनके आश्रम में बुलाया जाता है और उसका शोषण होता रहता है और हमारा समाज आंखें बंद करके यह सब देखता रहता है। यह कितनी बड़ी विडंबना है। सुरा, सुंदरी, पैसा और शौहरत पाखंडी लोगों का पसंदीदा शौक होता है। जब अंधविश्वासी अथवा मानसिक गुलाम लोग ही उनको चांस देते हें तो वे हरामखोर डांस क्यों नहीं करेंगे। संत तुकाराम जी मराठी में कहते हैं 'ही बुवाबाजी भुलवी जना, भ्रष्ट करी ग्रामजीवना। भुलवोनी भोलया भाबडयांना, भलत्या छंदा लाविती।'

धारा-12 : किसी मानसिक विकलांग/मतिमंद व्यक्ति में अमानवीय शक्ति होने का दावा करके उसके द्वारा अन्य लोगों को बेवकूफ बनाना/लूटना आदि....

जिनके दिमाग/बुद्धि का विकास ठीक से नहीं हुआ है, उनको खाने-पीने की सुध नहीं होती है वे अपना दैनिक कार्य ठीक से नहीं कर पाते हैं, ऐसे लोगों को बाबा या महाराज बनाकर धंधा करते हैं और भाविकों गुमराह करके आर्थिक शोषण करते हैं। इनके लिए यह कानून बनाया गया है। उदाहरण कुछ मतिमंद बाबा/महाराज गालियां देते हैं अपना शरीर खुजाते हैं, कुछ वस्तु फैंक कर मारते हैं, उनकी इस करतूत को आर्शीवाद समझ कर/अनुमान लगाकर उनके भक्त सट्टे का नंबर निकालते हैं। यह गलत बात है।

इस प्रकार से नरबलि और अन्य अमानुष, अनिष्ट व अघोरी प्रथा या जादू टोना के खिलाफ कानून में 12 धाराएं दी गई हैं। इस कानून का प्रचार महाराष्ट्र सरकार का सामाजिक न्याय विभाग अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के सहयोग से महाराष्ट्र के 34 जिलों में 10 दिसम्बर 2014 से 30 दिसम्बर तक किया गया था। वक्ता थे श्याम मानव पीआईएमसी के सहअध्यक्ष और अंनिस के संस्थापक संघटक हैं।

★★

---

23 मार्च, शहीदी दिवस परः

कुछ सच्चाइयां

-पाश

1
आदमी के ख़तम होने का फैसला
वक़्त नहीं करता
हालात नहीं करते
वह ख़ुद करता है
हमला और बचाव
दोनों आदमी ख़ुद करता है।

2
प्यार आदमी की दुनिया में
विचरने लायक बनाता है या नहीं
इतना ज़रूर है कि
हम प्यार के बहाने (सहारे)
दुनिया में विचर ही लेते हैं।

3
मुक्ति का जब कोई रास्ता न मिला
मैं लिखने बैठ गया हूँ
मैं लिखना चाहता हूं वृक्ष
जानते हुए
कि लिखना वृक्ष हो गया
मैं लिखना चाहता हूं पानी
'आदमी'-'आदमी' मैं लिखना चाहता हूं
किसी बच्चे का हाथ
किसी गोरी का मुख
मैं पूरे ज़ोर से
शब्दों को फेंकना चाहता हूं आदमी की ओर
यह जानते हुए भी कि आदमी को कुछ न होगा
हमें ऐसे रखवालों की ज़रूरत नहीं
जो हम पर अपने महलों से हुकूमत करें
हम मेहनकशों को उनके दान की ज़रूरत नहीं
हम आपस में ही सब फैसल करेंगे।

4
आ गए मेरे बीत चुके पलों की गवाही देने वाले
आ गए क़ब्रों में से सोए हुए पलों को जगाने वाले
उनकी आदत है सागर से मोती चुग लाने की
उनका रोज़ का काम है, सितारों का दिल पढ़ना।

5
मेरे पास चेहरा
संबोधक कोई नहीं
धरती का पागल इश्क शायद मेरा है
और तभी जान पड़ता है
मैं हर चीज पर हवा की तरह सरसराता हुआ गुजर जाऊंगा
सज्जनो, मेरे चले जाने के बाद भी
मेरी चिंता की बांह पकड़े रहना।

निरीश्वरवाद की परम्परा

डॉ० रणजीत

दर्शन के क्षेत्र में नास्तिकता या निरीश्वरवाद एशिया और यूरोप में छठी सदी ईसा पूर्व में शुरू हुआ लगता है। बिलड्यूरां बताते हैं कि अफ्रीका की कुछ पिग्मी जनजातियों में कोई निश्चित प्रथाएं या अनुष्ठान नहीं दिखाई देते। वे न किन्हीं दैवी शक्तियों या आत्माओं आदि में विश्वास करती थीं, न उनके कोई टोटेम थे। वे अपने मुर्दे बिना किन्हीं विशेष अनुष्ठानों के गाड़ देते थे और उसके बाद उन पर कोई ध्यान नहीं देते थे। उनमें सामान्य अंधविश्वास भी नहीं थे। श्रीलंका के वेदाह लोग सिर्फ यह मानते थे कि कुछ देवियां हो सकती है। पर न प्रार्थना की और न उन्हें खुश रखने के लिए कुर्बानी की कोई धारणा उनमें थी।

यूरोप के बौद्धिक क्षेत्रों में नास्तिकता की धारणा रिनेसां और सुधार के दिनों में सशक्त हुई। फ्रांसीसी क्रांति ने फ्रांस को धर्म के प्रभाव से मुक्त करने की कोशिश की। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद सोवियत क्रांति ने बकायदा नास्तिकता का राज्य प्रायोजित प्रचार शुरू किया।

पूर्व में ईश्वर की धारणा से मुक्त एक चिंतनशील जीवन पद्धति का प्रारंभ छटी शताब्दी ईसा पूर्व में भारत में बौद्ध धर्म, जैन धर्म और लोकायत के रूप में तथा चीन में ताओवाद के रूप में हुआ। हालांकि इन धर्मो ने लोक में प्रचलित देवी-देवताओं, आत्माओं, स्वर्ग-नरक आदि के अस्तित्व से सीधे इंकार नहीं किया, पर उनसे निरपेक्ष एक नैतिक जीवन पद्धति का रास्ता जरूर दिखाया।

जैन धर्म संसार को पदार्थ और आत्माओं से बना हुआ मानता है, जोकि दोनों ही अनादि है और उनका कोई सृष्टिकर्ता नहीं है। बौद्ध धर्म की परवर्ती शाखा महायान में अवश्य एक अनंत सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, स्वयंभू धर्मधातू को मान्यता दी गई, जो कि बौद्धिचित्त है और जिसे स्वयं बुद्ध की ही धर्मकाया कहा गया।

523 ईसा पूर्व में जन्में अजितकेश कंबल के संबंध में महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक दर्शन-दिग्दर्शन में लिखा है कि बुद्ध के समय वह एक सम्मानित तीर्थंकर (सम्प्रदाय प्रवर्तक) था। उसकी मान्यता थी कि दान, यज्ञ, हवन निरर्थक हैं। अच्छे-बुरे कर्मो के फल की बात झूठी है। परलोक मिथ्या कल्पना है। अयोनिज देवता कहीं नहीं है। सत्य को जानने वाले ऐसे श्रमण-ब्राह्मण लोक में कहीं नहीं है, जो उसका साक्षात्कार कर चुके हों। मनुष्य चार महाभूतों का बना है, जब वह मरता है तो पृथ्वी पृथ्वी में, पानी पानी में, अग्नि अग्नि में और हवा हवा में मिल जाती है। मरने के बाद कुछ नहीं रहता। स्पष्ट ही अजितकेश कंबल गौतम बुद्ध का एक समकालीन निरीश्वरवादी भौतिकवादी था, जबकि राहुल जी के शब्दों में गौतम बुद्ध अभौतिक क्षणिकवादी, अनात्मवादी और अनीश्वरवादी थे।

भारत में नास्तिक शब्द के तीनों अर्थो (परलोक को नहीं मानने वाला, वेद को प्रामाणिक नहीं मानने वाला, ईश्वर को नहीं मानने वाला) में यदि कोई नास्तिक विचारधारा थी तो वह थी चार्वाक या लोकायत। प्राचीन भारतीय दर्शन की नौ शाखाओं में लोकायत ही एकमात्र ऐसा दर्शन है जिसे सही अर्थो में दर्शन कहा जा सकता है।

लोकायत दर्शन के अंतर्गत स्वर्ग और मुक्ति जैसे काल्पनिक नैतिक लक्ष्यों को अस्वीकार

किया गया है और मानव सुख को जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य माना गया है। लोकायत दर्शन में यह स्पष्ट तौर से कहा गया है कि न तो मृत्यु के बाद कोई जीवन है और न ही कोई पुनर्जन्म। लोकायत दर्शन के अनुसार, यह जगत ही एकमात्र जगत है, यह जीवन ही एकमात्र जीवन है और हमें इसे सर्वश्रेष्ठ तरीके से जीने का प्रयत्न करना चाहिए। हमें इसलिए जीवन से दूर नहीं भागना चाहिए क्योंकि जीवन में सुख के साथ दुख भी मिले हुए हैं।

इस तरह, लोकायत दर्शन में बुद्धिवादी, मानवतावादी, सुखवादी, प्रकृतिवादी, भौतिकवादी और निरीश्वरवादी प्रवृतियां मिलती हैं। इसके अलावा इसमें ब्राह्मणवाद का तीखा विरोध किया गया है। लोकायत दर्शन की प्रामाणिक लोकगाथा के कुछ अंशों का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है :

'जब तक जियो सुख से जियो

मृत्यु की निगाहों से कोई नहीं बच सकता

एक बार जब शरीर जल कर राख हो जाएगा

फिर पुनर्जन्म कैसे होगा ?'

सुख के साथ दुख भी मिश्रित है, इसलिए हमें सुख को त्याग देना चाहिए, ऐसा मूर्खों का विचार है। अपना भला चाहने वाला कौन इन्सान धूल और भूसी के कारण उत्कृष्ट सफेद अनाज वाले धान को फैंक देगा ? न कोई स्वर्ग है, न कोई मोक्ष, न आत्मा किसी परलोक में जाती है।

वर्णाश्रम धर्मों के पालन से भी कोई फल प्राप्त नहीं होता।

मोर को रंग किसने दिए है या कोयल से गीत कौन गवाता है ?

इसका प्रकृति के सिवा और कोई कारण नहीं है।

हिन्दू षडदर्शनों में से दो, सांख्य और मीमांसा स्पष्ट रूप से निरीश्वरवादी थे। वे किसी सृष्टिकर्ता ईश्वर को स्वीकार नहीं करते थे। सांख्य दर्शन की प्रमुख पुस्तक 'सांख्यसारिका' चौथी शताब्दी में लिखी गई थी। यह दर्शन प्रकृति और पुरुष के द्वैत को मानता है पर ईश्वर को स्वीकार नहीं करता। मीमांसा दर्शन का मूल आधार जैमिनी की 'पूर्व मीमांसा सूत्र' है, जिसका समय तीसरी से पहली सदी ई०पू० माना जाता है। यह दर्शन धर्म के स्वरूप का विमर्श करता है। इसमें अनुष्ठानों और रहस्यवाद का विरोध है। इसमें कर्म के बंधन में बंधे एक 'अदृष्ट' की अवधारणा तो है, पर इसने किसी 'ईश्वर' की आवश्यकता अनुभव नहीं की।

छह सौ ईस्वी में चोल प्रांत (वर्तमान तमिल प्रदेश) के तिरूमलै गांव में जन्में धर्मकीर्ति बौद्ध परम्परा के प्रखर नास्तिक दार्शनिक थे। उन्हें डा० श्वेर्वास्की ने भारतीय कांट की उपाधि दी है। उनका प्रसिद्ध ग्रंथ है प्रमाणवार्तिक। उनका एक बहुउद्धृत श्लोक है–

वेद प्रामाण्यम कस्यचित कतृवादः

स्नाने धर्मेच्छा जातिवादावलेपः।

सन्तापरंभ पापहानाय चेति

ध्वस्त प्रज्ञानां पंचलिंगानि.जाड्ये।।

अर्थात वेद को प्रामाणिक करना, किसी ईश्वर को सृष्टि का कर्ता समझना, स्नान करने में धर्म होता है, ऐसा मानना, ऊंची जाति का घमंड करना और पाप दूर करने के लिए शरीर को संताप देना (उपवास आदि तपस्याएं करना), ये पांचों अकल मारे लोगों की मूर्खता की निशानियां हैं।

फिर आधुनिक युग में ज्योतिबा फूले, राधामोहन गोकुलजी, पेरियार रामासामी, स्वामी अछूतानंद, मानवेंद्रनाथ राय, लाला हरदयाल, प्रेम चंद, स्वामी सहजानंद, जवाहर लाल नेहरू, भीमराव अम्बेडकर, जे.बी.एस. हाल्डेन, राहुल सांकृत्यायन, अब्राहम कोवूर, के.शिवराम कारन्त, यशपाल, शहीदे आजम भगत सिंह, दामोदर धर्मानंद कौशाम्बी, मख्दूम, विट्ठल महादेव तारकुंडे, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, फैज़ अहमद फैज़, रामविलास शर्मा, सरदार जाफरी,

मुक्तिबोध, बलराज साहनी, राम मनोहर लोहिया, मधु लिमये, ज्योति बसु, नम्बूदिरीपाद, महाश्वेता देवी, राही मासूम रज़ा, श्री राम लागू, किशन पटनायक, शंकर नियोगी, जावेद अख्तर, कमल हासन, विजय तेंडुलकर, विनायक सेन, अमर्त्य सेन, सत्यजीत राय, नरेन्द्र दाभोलकर जैसे सैंकड़ों प्राख्यात स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, राजनेताओं, समाज सुधारकों, क्रांतिकारियों, लेखकों, साहित्यकारों, फिल्मी हस्तियों और संस्कृतिकर्मियों ने नास्तिकता को अपना जीवन दर्शन बनाया है।

पश्चिमी दर्शन का विकास छटी शताब्दी ई०पू० के आसपास यूनान में प्रारंभ हुआ। शुरूआती विचारक यद्यपि नास्तिक नहीं थे, पर उनमें संसार की व्याख्या प्रकृति की स्वाभाविक प्रक्रियाओं के रूप में, न कि दैवीय रूप में, करने की प्रबल प्रवृत्ति थी। जैसे आकाशीय विद्युत का हवा के द्वारा बादलों को फाड़ देने का परिणाम मानना। प्रारंभिक यूनानी दार्शनिकों ने परम्परागत आस्तिक धारणाओं की आलोचना की, जैसे छटी शती ई०पू० के ज़ेनोफनेस का प्रसिद्ध वाक्य है कि यदि घोड़ों और गायों के हाथ होते तो वे ईश्वर को घोड़े या गाय के रूप में ही चित्रित करते। यूरिपिटीज (480 से 408 ई०पू०) के नाटक का मुख्य पात्र घोषित करता है- कौन कहता है कि आसपान में देवता है ? कोई देवता नहीं है, कोई नहीं।

छटी से चौथी शताब्दी ई०पू० में यूनानी दर्शन की तत्ववादी यूनीक शाखा विकसित हुई। थेल, अनिक्स भंदर आदि दार्शनिकों ने इस दुनिया का मूल तत्व क्या है, इस पर विचार-विमर्श किया। कोई पानी को न तो कोई अग्नि को मूल तत्व ठहराता था, पर किसी ने इस संसार या उसके मूल तत्वों के किसी सृष्टा की कल्पना नहीं की। भारत के उनके समकालीन बुद्ध और चार्वाकों की तरह ही इनको किसी सृष्टिकर्ता की जरूरत महसूस नहीं हुई।

इनके बाद सुकरात (469 से 399 ई०पू०) आया, जिसका प्रसिद्ध वाक्य है-'सही करने के लिए सही सोचना जरूरी है।' वह सदाचार और ज्ञान पर जोर देता था और सादे जीवन का पक्षपाती था। सृष्टि कैसे अस्तित्व में आई आदि प्रश्नों पर बहस को वह मूर्खो की क्रीड़ा कहता था। ज्ञान का संग्रह और प्रसार ही उसके जीवन का मुख्य लक्ष्य था तरुणों को बिगाड़ने, देवनिंदक और नास्तिक होने का आरोप लगाकर एथेन्स के शासकों ने उसे जहर का प्याला पीने की सजा दी थी, जिसे उसने खुशी-खुशी पी लिया।

प्रबोधन या नवजागरण काल में रूसो ने इस ईसाई विश्वास का खंडन किया कि अदन के बाग की घटना से ही मानव जाति पाप पंकिल है। बल्कि प्रस्ताव किया किया कि मनुष्य मूलतः अच्छे थे पर 'सभ्यता' ने उन्हें भ्रष्ट कर दिया। हालांकि **वाल्टेयर को फ्रांसीसी क्रांति और उसमें उभरे नास्तिकतावाद का जिम्मेदार ठहराया गया, पर तथ्य यह भी है कि वह यह मानता था कि एक अव्यवस्थित संसार में ईश्वर का भय एक पुलिस के सिपाही की भूमिका निभाता है और इसीलिए उसने कहा-यदि ईश्वर नही है तो उसका आविष्कार किया जाना चाहिए।**

निर्विवाद रूप से आधुनिक युग में नास्तिकता को बढ़ावा देने वाली पहली पुस्तक फ्रांसीसी कैथोलिक पादरी ज्यों मेक्लियर (1664-1729) ने लिखी थी। वह थी 'संसार के सभी धर्मो के दंभ और झूठ का निरूपण'। उसके बाद दूसरी ऐसी पुस्तक बेरोन द होलबाख (1723-1789) ने 1770 में प्रकाशित की, नाम था 'प्रकृति की व्यवस्था'। होलबाख ने एक सम्मेलन आयोजित किया था, जिसमें उसके समय के महत्वपूर्ण प्रबुद्ध लोगों-दिदरो, डेविड ह्यूम, एडम स्मिथ और बेंजामिन फ्रेंकलिन ने भागीदारी की थी। पर यह पुस्तक छद्म नाम से प्रकाशित हुई थी और न केवल प्रतिबंधित की गई, बल्कि जलायी भी गई। इस बीच इतिहासकार डेविड ह्यूम का निवास नगर

स्काटलैंड का एडिनबर्ग 'नास्तिकों का स्वर्ग' कहा जाने लगा था।

नास्तिकता ने फ्रांसीसी क्रांति के दौरान मंच छीन लिया था। चर्चों को 'विवेक के स्मारकों' में बदल दिया गया और सलीबों की जगह धर्म निरपेक्ष प्रतीकों ने ले ली। चर्चों की सम्पतियों का अधिग्रहण कर लिया गया।

ब्रिटेन में और अंग्रेजी भाषा में नास्तिकता का पहला प्रकाशित घोषणा पत्र लिवरपूल के चिकित्सा विज्ञानी मैथ्यू टर्मर द्वारा लिखा हुआ 'डा० प्रीस्टले के एक अविश्वासी को लिखे गए पत्रों का उत्तर' माना जाता है, जिसे उसने बिना अपना नाम दिए लिखा था।

1789 की फ्रांसीसी क्रांति ने यूरोप के कई देशों में निरीश्वरवाद को किंचित स्वीकार्य बनाते हुए विवेकवाद, मुक्त विचार और उदारतावाद के आंदोलनों को आगे बढ़ाया। अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध रूमानी कवि शेली को 1811 में अपने लिखे हुए एक अनाम पम्फलेट 'नास्तिकता की आवश्यकता' को आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के डीन को भेजने के कारण यूनिवर्सिटी से निकाल बाहर किया गया। जर्मनी में लुडविग फेयरबारा ने इसके कुछ ही वर्षो बाद 'ईसाइयत का सार' नामक पुस्तक लिखी, जिसने उन्नीसवीं सदी के जर्मनी के अन्य युगांतकारी विचारकों, कार्ल मार्क्स, मैक्स स्टर्नर, आर्थर शापनहावर और फ्रेडरिक नीट्शे को प्रभावित किया। **मुक्त विचारक और मजदूर नेता चार्ल्स ब्रेडला तीन बार ब्रिटिश पार्लियामैंट के लिए चुने गए और तीनों बार ईश्वर के नाम पर सदस्यता की शपथ लेने से इंकार करने पर सदस्यता से वंचित किए गए। जब वे चौथी बार सांसद चुने गए, तब संसद के नए स्पीकर ने उन्हें ईश्वर के बजाए सत्यनिष्ठा की शपथ लेकिर सदस्य बनने दिया।** ब्रेडला पहले घोषित नास्तिक थे, जो ब्रिटिश संसद में बैठ सके और शपथ अधिनियम को बदल सके। कार्ल मार्क्स ने 1844 में हेगेल की फिलोस्फी पर लिखी अपनी पुस्तक में धर्म के बारे में अपना वह प्रसिद्ध वाक्य लिखा-'धार्मिक कष्ट-भोग एक साथ वास्तविक कष्ट भोग की अभिव्यक्ति भी है और उसका विरोध भी। धर्म शोषित पीड़ित जनता की कराह है, हृदयहीन संसार का हृदय है, आत्महीन परिस्थितियों की आत्मा है। यह जनता की अफीम है।'

बीसवीं और इक्कीसवीं सदी में निरीश्वरवाद ने अन्य अनेक दर्शनों में व्यापक स्वीकृति प्राप्त की कि जैसे मार्क्सवाद, लेनिनवाद, माओवाद, अस्तित्ववाद, वास्तविकतावाद, धर्म निरपेक्ष, मानववाद, तार्किक प्रत्यक्षवाद, निषेद्धवाद, अराजकतावाद और स्त्रीवाद।

पश्चिमी दुनिया के विख्यात नास्तिक विचारकों, लेखकों और क्रांतिकारियों की एक छोटी सी सूची बनाई जाए तो उसमें ये नाम अवश्य शामिल किए जाएंगे-

1. *लिक्जिन्स्की (1634-89) - पोललिथुआनी दार्शनिक जिसे अपनी पुस्तक 'ईश्वर का अनस्तित्व' के कारण जघन्यतापूर्वक मार डाला गया।*

2. *ज्यां फ्रेंकोइस दलाबेरी (1745-1766) - फ्रांसीसी भद्रपुरुष जिसे 1766 में क्रूरतापूर्वक मारा गया और वाल्टेयर ने उसकी सजा रद्द करने की असफल कोशिश की। वह ईसाई धार्मिक असहिष्णुता का शिकार हुआ। 3.डेनिस दिदरो (1713-84) - 'एन्साइक्लोपीडिया' का सम्पादक। 4.जेरेमी बेन्थम (1748-1832)-अंग्रेज लेखक, न्यायशास्त्री, समाज सुधारक, उपयोगितावाद का प्रवक्ता।5.जान स्टुअर्ट मिल (1806-1873) प्रख्यात दार्शनिक, उपयोगितावादी नीति शास्त्री)। 6.ब्रूनो बाउर (1809-1882) - जर्मन दार्शनिक, इतिहासकार। 7. मिखाइल बाकूनिन (1814-76) - रूसी क्रांतिकारी, अराजकतावादी। 8. कार्ल मार्कस -दार्शिनिक समाज शास्त्री, राजनीति अर्थ शास्त्री, मानववादी, साम्यवाद का जन्मदाता।*

शेष पृष्ठ 43 पर..........

किस्त नं-8

ब्रह्मांड यात्रा

-डा. अवतार सिंह ढींढसा
094634-89789

प्रिय मित्रो, प्रथम चार ग्रह पृथ्वी, शुक्र, बुध, मंगल एवं एस्ट्रायड पट्टी पथरीले थे अर्थात इन ग्रहों पर ठोस भूमि है तथा हम इन पर चल फिर भी सकते हैं।

उपग्रह चंद्रमा एवं हमारे सर्वाधिक निकट के तारे सूर्य की यात्रा पूर्ण करने के पश्चात् आओ चलें एस्ट्रायड पट्टी से आगामी ग्रह की ओर....वो देखो, सामने नज़र आ रहा है...एक बड़ा तारा..परन्तु यह तारा नहीं है।

बृहस्पति एवं शनि ग्रह तक तो हड़प्पा, मेसोपोटामिया, चीनी एवं सुमेरियन सभ्यताओं को भी ज्ञात था, क्योंकि इनकी स्थिति तारों की स्थिति के अनुसार प्रति वर्ष बदल जाती थी। उस समय इनको केवल नंगी आंखों के साथ ही देखा जाता था, परन्तु गैलीलियो की दूरबीन ने उनके बारे में नए ज्ञान को एकत्र करना प्रारंभ कर दिया था। यह सूर्य से 7.78 गुना 10^8 कि.मी. की दूरी पर है, परन्तु इसकी पृथ्वी से दूरी 62 करोड़ 80 लाख कि.मी. के लगभग है। यदि हमारा अंतरिक्ष यान 12 कि.मी. प्रति सैकिंड (!) की गति से चले तो भी इसको बृहस्पति तक पहुंचने के लिए 2 वर्ष का समय तो लग ही जाएगा। पृथ्वी से सूर्य लगभग 15 करोड़ कि.मी. की दूरी पर है। दोस्तो, सूर्य का प्रभाव तो हमारे ऊपर इतना अधिक है कि हम मई से जुलाई के महीनों की गर्मी से भलीभांति परिचित हैं, परन्तु बृहस्पति ग्रह के प्रभाव का अनुमान तो तुम स्वयं ही लगा लो, जो सूर्य एवं पृथ्वी के मध्य की दूरी से भी लगभग चार गुना से भी अधिक दूरी पर स्थित है तथा सूर्य से आकार में भी काफी छोटा है, हमारे ऊपर क्या प्रभाव डालता होगा। तथा और सुनो, जब यह एक महीने के लिए सूर्य के दूसरी ओर चला जाता है, तो इसकी पृथ्वी से दूरी 92 करोड़ 50 लाख कि.मी. हो जाती है.... परन्तु ज्योतिष एक ऐसा विज्ञान कहलाता है, जिसमें दूरी के साथ न तो प्रभाव कम होता है और न ही बढ़ता है। अतः स्पष्ट है कि ज्योतिष विज्ञान नहीं है।

दोस्तो, पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से बाहर आने के लिए हमारे अंतरिक्ष यान को एक सैकिंड में 12 कि.मी. का पथ तय करना पड़ा था, परन्तु बृहस्पति के गुरुत्वाकर्षण से बाहर निकलने के लिए एक सैकिंड में 60 कि.मी. का पथ तय करना पड़ेगा। शायद आपको अब तो अनुमान हो ही गया होगा कि बृहस्पति हमारी पृथ्वी से कितना विशालकाय है। आकार का अनुमान लगाने के लिए आपकी थोड़ी और सहायता कर दें...हमारी पृथ्वी पर यदि एक वायुयान जोकि 700 कि.मी. प्रति घंटे की गति से चलता हो तो भूमध्य रेखा पर उड़ते हुए एक चक्कर पूरा करने के लिए दो दिन लग जाएंगे, परन्तु इसी गति से चलने वाले वायुयान को बृहस्पति का एक चक्कर पूरा करने के लिए 27 दिन का समय लग जाएगा!!! इसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति 24.8 मी/सैकिंड^2 है जोकि पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति 9.8 मी./सैकिंड से अढ़ाई गुणा अधिक है अर्थात पृथ्वी पर 50 कि.ग्रा. वज़न वाले मनुष्य का वजन बृहस्पति पर 125 किलोग्राम होगा।

दोस्तो, ऐसी आश्चर्यजनक परिस्थितियों वाले ग्रह पर उतरने एवं चलने-फिरने को तो आपका मन ललचा ही रहा होगा, परन्तु हम इस ग्रह पर न तो उतर सकते हैं और न ही पैदल चल फिर सकते हैं। बुध, शुक्र, पृथ्वी एवं मंगल उन तत्वों के बने हुए हैं, जोकि उच्च तापमान पर ठोस अथवा तरल रह सकते हैं, परन्तु बृहस्पति तो गैसों का ही गोला है।

आकार अत्यंत बड़ा....एक गैसीय दानव। आकार के अनुसार सूर्य के पश्चात इसी का नंबर आता है तथा इसे तारा बनने के लिए बस थोड़े से और पुँज की जरूरत थी....अपने 63 चंद्रमाओं को अपने गिर्द घुमाता हुआ यह भी एक अन्य हमारा पड़ौसी 'तारा परिवार' होता, जिस प्रकार 'सौर परिवार'। परन्तु क्योंकि यह तारा नहीं बन सका, इसलिए यह स्वयं सूर्य (तारे) का एक ग्रह बनकर ही रह गया और अत्यंत ठंडा भी है।

साथियो, आओ इसके और समीप चलें, परन्तु गैसों के बारे में तुम्हारी जिज्ञासा का जवाब मैं दे ही दूं, तो उचित होगा? मुख्य रूप से यह हाईड्रोजन एवं हीलियम गैसों से निर्मित है। सूर्य के बनने के पश्चात सूर्य में से ऊर्जा रूप में निकली 'सौर आंधी' ने बहुत सी गैसों को बाहर की ओर बिखेर दिया, जिसमें से कुछ गैसों को बृहस्पति एवं शनि ने अपने गुरुत्व के कारण अपने पास पकड़ लिया तथा बन बैठे गैसीय दानव।

परन्तु बड़ा आकार होने के कारण, इसके केंद्र पर इतना अधिक दबाव उत्पन्न हो गया कि हाईड्रोजन गैस भी तरल धातु के रूप में परिवर्तित हो गई। यह हाईड्रोजन हमारी पृथ्वी पर भी मिलती है? मेलों में ऊपर की ओर उड़ते हुए गुबारों में हाईड्रोजन गैस ही तो होती है। हाईड्रोजन गैस शेष गैसों से हल्की गैस है, इसलिए पृथ्वी पर इसकी कुछ मात्रा वायुमंडल की ऊपर वाली तहों में ही मिलती है।

साथियो, ठोस पथरीले ग्रहों के इर्द-गिर्द तो गैसीय आवरण अर्थात वायुमंडल होता है, परन्तु इस गैसीय दानव बृहस्पति के वायुमंडल के बारे में आपका क्या विचार है? हां, इसका भी अपना वायमुंडल है....एक तरह से ....गैस की रंगदार पट्टियों में बंटा हुआ है तथा इन ग्रहों का कारण कुछ ऐसे तत्व हैं जिनके बारे में अभी तक पूर्ण रूप में जानकारी नहीं है। जरा ध्यान से देखो, रंगदार पट्टियों में वो एक गोलाकार 'आंख के समान' चक्कर सा दिखाई देता है। यह एक बहुत बड़ा 'चक्करदार तूफान' है, जिसका आकार हमारी पृथ्वी से भी बड़ा है। बृहस्पति की 'कोर' अभी भी गर्म है। अतः गैस गर्म होकर ऊपर उठती रहती है। अतः इस चक्रवात में गैस अंदर से बाहर की ओर चक्कर लगाती है, जिसको 'विपरीत चक्रीय तूफान' भी कहा जाता है। आपके दिमाग में चल रहे प्रश्न रूपी एक अन्य तूफान का उत्तर यह है कि बृहस्पति पर कई स्थानों पर ऐसे तूफान चल रहे हैं, परन्तु ये आकार में छोटे हैं तथा जल्दी खत्म भी हो जाते हैं, परन्तु आंख जैसा यह तूफान सदियो ंसे इसी प्रकार से चल रहा है!!!

दोस्तो हमारी पृथ्वी छोटी है। इसके पास एक चंद्रमा है। ब्रहस्पति ग्रह हमारी पृथ्वी से 318 गुना बड़ा है। फिर इसके पास कितने चंद्रमा होंगे? आपकी इस जिज्ञासा का मुझे ख्याल है....लो नोट करो.... अभी तक बृहस्पति के 63 चंद्रमाओं का पता लगाया जा चुका है। इनमें से चार चंद्रमा वे भी हैं, जोकि गैलीलियो ने खोजे थे। वास्तव में कुछ चट्टानी टुकड़े जोकि इसके समीप से गुजर रहे थे.... इसके गुरुत्वाकर्षण ने उन्हें अपना बना लिया। अर्थात् उनको अपने गिर्द घूमते हुए चंद्रमा बना लिया।

इस प्रकार बृहस्पति के पास गैलीलियो वाले चार बड़े चंद्रमाओं को छोड़ कर शेष सभी 'पकड़े' हुए चंद्रमा ही हैं। इन चंद्रमाओं का घनत्व.. ..बृहस्पति से बाहर की ओर दूरी के अनुसार घटता भी जाता है, परन्तु इसके सघन घनत्व वाले चंद्रमा तो 'ज्वारीय-उष्मा' (Tidal Heating) से प्रभावित हैं।

बृहस्पति का सर्वाधिक निकट का गैलीलियन चंद्रमा 'लो'(Lo) है। यह गंधक के जबरदस्त ज्वालामुखियों से उबल रहा है। आगामी चंद्रमा 'यूरोपा' कुछ शांत है। 'गेनिमेड' एवं 'कैलिस्टो' दोनों पर ज्वालामुखियों के गहरे गड्ढे हैं, परन्तु अब इन पर कोई भी हलचल नहीं है, परन्तु इन गड्ढों से अनुमान लगाया गया है कि कभी इन पर भी खूब

ज्वालामुखी विस्फोट हुए होंगे।

दोस्तो, बृहस्पति के जन्त्री/जन्म कुंडी में योगदान बाबत अंधविश्वास के बारे में चर्चा भी कर लें। ज्योतिष के द्वारा बनाई गई जन्म कुंडलियों का असली मकसद तो जन्म तिथि को याद रखना ही था। इसकी शुरूआत इस प्रकार हुई कि पुरातन समय में पंडितों-ब्राह्मणों के बगैर किसी अन्य वर्ग को पढ़ने-लिखने की अनुमति नहीं थी। तारा विज्ञान इस ग्रह 'पृथ्वी' पर सर्वाधिक प्राचीन विज्ञान है अर्थात् तारों एवं ग्रहों के बारे में बहुत सा ज्ञान था। प्राचीन युग में सूर्य दिन के समय में तथा सितारों की स्थिति रात्रि के समय में घड़ी का कार्य करते थे। तारों की स्थिति ऋतुओं की शुरुआत के बारे में भी बताती। यह सभी कुछ आज भी सही है। व्यक्ति का पृथ्वी पर समय अर्थात् उसकी आयु को याद रखना जितना जरूरी था, परन्तु अशिक्षित व्यक्तियों के उतना ही कठिन भी था। बस हो गई जन्म कुंडली की शुरुआत। बृहस्पति की स्थिति से 12 वर्षों के लंबे समय को नोट किया जाता था। बृहस्पति ग्रह लगभग एक वर्ष तक एक ही राशि में रहता है। राशियां 12 हैं। वास्तव में बृहस्पति सूर्य का एक चक्कर 11.86 वर्षों में (लगभग 12 वर्षों में) लगाता है तथा बृहस्पति के 5 चक्रों अर्थात् 60 वर्षों को 'युग' भी कहा जाता था। बस, किसी व्यक्ति की आयु ज्ञात करने के लिए बृहस्पति ग्रह की राशि में स्थिति को नोट कर लिया जाता था। बस पता चल जाता था कि व्यक्ति की आयु कितनी हो गई। यह है लाभ हमें बृहस्पति ग्रह का। परन्तु ज्योतिषी कभी भी ऐसी बात नहीं बताते।

एक अन्य महत्वपूर्ण लाभ....हमारी पृथ्वी के निवासियों का रखवाला....ग्रहों के अतिरिक्त सौर परिवार के अन्य सदस्य हैं....जोकि सूर्य के गिर्द घूमते हैं जैसे धूमकेतु के बर्फीले पिंड जिन्हें आम बोलचाल में पुच्छल तारे कहा जाता है। इनमें से कुछ हमारी पृथ्वी के साथ टकरा सकते हैं, परन्तु बृहस्पति, शनि, यूरेनस एवं नैपच्यून हमारे रक्षक हैं। ये इन धूमकेतुओं को अपनी ओर खींच कर अपने ऊपर ही गिरा लेते हैं। अतः डरने की जरूरत नहीं है। ये हमारे लिए खतरनाक नहीं, अपितु हमारे रक्षक हैं।

साथियो इसके अत्यंत निकट हम पहुंच ही चुके हैं। देखो तनिक इसकी गति की ओर....एक सैकिंड में 13 किलोमीटर!!! तथा जब तक ज्योतिषी जी महाराज अपना पत्रा खोलते-खोलते दो मिनट का समय लगा देता है। यह ग्रह उन दो मिनटों में 1560 किलोमीटर आगे निकल जाता है। अतः ज्योतिष कितना वैज्ञानिक है इसका आप स्वयं ही अनुमान लगा लें।

साथियो, इसके पुँज के बारे में आपने मुझ से अभी तक कोई प्रश्न ही नहीं पूछा....इसका पुँज 1.8981 गुना 10^{27} किलोग्राम है। इस गैसीय ग्रह का घनत्व केवल 1 होता है, परन्तु इस दानव का दिन अत्यंत छोटा केवल 9 घंटे 55 मिनटों का अर्थात् लगभग 10 घंटे का ही होता है। इतना बड़ा दानव और घूमने में उतना ही तेज। दोस्तो, यदि हम बृहस्पति पर रह रहे होते (परन्तु यह संभव नहीं) तो हमें मौज हो जाती। 10 घंटे के दिन में 5 घंटे कार्य करने के लिए होते तथा शेष 5 घंटे सोने के लिए मिल जाते।भला इतने छोटे दिन -रात वाले बृहस्पति पर गर्मी कितनी होती होगी? बहुत थोड़ी सी....मंगल ग्रह के बाद...गर्मी का नामोनिशान भी नहीं। बृहस्पति पर तापमान -120 दर्जे सैल्सियस रहता है, जहां पर जीवन बिल्कुल भी संभव नहीं है। अतः टी.वी. चैनलों द्वारा 'एलियन्स' के बारे में फैलाए जा रहे अफवाही भ्रमजाल से सावधान रहते हुए मेरे साथ शनि ग्रह की यात्रा पर जाने के लिए समय अवश्य ही सुरक्षित रख लेना.. ..यात्रा जारी है....

हिन्दी अनुवाद

बलवंत सिंह लैक्चरार

★★

मानव मस्तिष्क का विकास एवं बुद्धि

-डा. हरचंद सिंह सरहिन्दी

मस्तिष्क शरीर के विभिन्न अंगों की क्रियाएं करता है तथा उनमें आपसी तालमेल भी बनाए रखता है। भिन्न-भिन्न अंगों की क्रियाओं को नियंत्रित रखने के लिए मस्तिष्क में अलग-अलग केंद्र स्थित होते हैं। दिमाग की शक्ल एवं बनावट अखरोट की गिरी के समान होती है तथा उसी ही प्रकार से उसमें झुरियां होती हैं।

जन्म के समय बच्चे के दिमाग का आकार प्रौढ़ दिमाग का चौथाई भाग होता है, परन्तु इतना छोटा होने के बावजूद यह किसी भी पक्ष से अधूरा नहीं होता। नवजात शिशू का दिमाग एक अरब कोशिकाओं द्वारा निर्मित होता है। आयु के बढ़ने से इसके आकार एवं बुद्धि में वृद्धि होती रहती है।

एक व्यस्क मनुष्य का मस्तिष्क औसतन वजन 1200 ग्राम से 1400 ग्राम होता है तथा इसमें दस हजार मिलियन से अधिक कोशिकाएं समाई होती हैं। इन कोशिकाओं से कई बिलियन कोशिका तन्तुओं का फुटाव होता है। दिमाग की समस्त कारगुजारी इन कोशिका तंतुओं के फुटाव पर निर्भर करती है, क्योंकि ये तंतु श्रृखलाएं मस्तिष्क की कोशिकाओं को आपस में जोड़ने का कार्य करती हैं (इन कोशिका तंतुओं को वैज्ञानिक शब्दावली में एक्सोन्स एवं डेंडरीटिस कहा जाता है)

व्यस्कों की तुलना में बच्चों का दिमाग अधिक फुर्तीला होता है, क्योंकि पांच से नौ वर्ष की आयु में दिमाग की कोशिकाओं को जोड़ कर रखने वाले तंतु अधिक अंकुरित होते हैं। यही कारण है कि इस अर्से के दौरान बच्चे के दिमाग का विकास अत्यंत तीव्रता के साथ होता है। एक अनुमान के अनुसार मानव मस्तिष्क का 35 से 40 प्रतिशत विकास 5 से 9 वर्ष की आयु तक हो जाता है तथा विकास का यह सिलसिला 35 वर्ष की आयु तक निरंतर जारी रहता है। एक नई खोज भी यही बताती है कि मानव मस्तिष्क प्रौढ़ होने के लिए 40 वर्ष की आयु तक सीखता रहता है। यूनिवर्सिटी कालेज लंदन में किए गए खोज के कार्य से यह तथ्य सामने आया है कि मानव मस्तिष्क तब तक विकास करना बंद नहीं करता, जब तक मनुष्य 30-40 वर्ष की आयु तक नहीं पहुंच जाता। 16 दिसमबर 2010 को लंदन से जारी की गई एक रिपोर्ट के अनुसार मुख्य खोजकर्ता प्रो. साराह जेन ब्लैकमोर ने कहा कि लगभग 10 वर्ष पूर्व तक यह माना जाता था कि मानव मस्तिष्क बचपन के आरंभ में ही विकास करना बंद कर देता है, परन्तु अब यह जानते हैं कि मानव मस्तिष्क के अधिकतर हिस्से कई दशकों तक लगातार विकास करते रहते हैं।

वैज्ञानिकों ने दिमाग को मोटे तौर पर तीन भागों में बांटा हुआ है : दिमाग का अगला भाग, मध्य भाग तथा पिछला भाग। दिमाग के अगले भाग के एक हिस्से को सेरिबर्म के नाम से जाना जाता है। सेरिबर्म, दिमाग का सब से महत्वपूर्ण हिस्सा है, क्योंकि यहां पर स्मृति के अलावा अन्य कई महत्वपूर्ण केंद्र स्थित होते हैं, जिनके द्वारा हम सोच-विचार करते हैं, कुछ नया सीखते हैं और फैसले लेते हैं इत्यादि। दूसरा, हमारे मन में किसी के प्रति श्रृद्धा, प्रेम, घृणा, क्रोध, भय, दया आदि जैसी भावनाएं भी इसी क्षेत्र में जन्म लेती हैं। जाहिर है कि किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में सेरिबर्म मुख्य भूमिका निभाता है।

निस्संदेह, सेरिबर्म को किसी व्यक्ति के ज्ञान का स्रोत एवं पहरेदार माना जाता है, परन्तु हाल ही में एक सांझा खोज में बताया गया है कि ज्ञान वास्तव में उम्र के साथ आता है, कम से कम भावनाओं के मामले में तो ऐसा ही है। अलबर्टा यूनिवर्सिटी के खोजियों एवं ड्यूक यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने दिमाग के उस पैटर्न का पता लगाया है,

जिससे स्वस्थ वृद्धों को नौजवानों के मुकाबले में अपनी भावनाओं को दिशा प्रदान करने एवं नियंत्रित करने में मदद मिलती है। अलबर्टा यूनिवर्सिटी के मनोविज्ञान एवं न्यूरोसाईंस के सहायक प्रो. फ्लोरिन डोल्कोस का कहना है कि 60 वर्ष से अधिक की आयु के व्यक्ति का दिमाग, भावुक चुनौती पूर्ण हालत का मुकाबला अधिक आसानी के साथ कर सकता है। उसका कहना है, ''पिछली खोजों से भी प्रमाण मिले हें कि स्वस्थ वृद्ध व्यक्ति का झुकाव सकारात्मक होता है तथा उन्हें ज्ञात होता है कि नकारात्मक स्थितियों की ओर उन्होंने वास्तव में कितना ध्यान देना है। इसलिए वे ऐसी स्थितियों से कम परेशान होते हैं।'' संयोगवश एक नई खोज से यह बात सामने आई है कि तेज दिमाग वाले व्यक्तियों की 15 वर्ष तक अधिक जीवन जीने की संभावना होता है। इटली की कालाब्रिया यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि 'अक्लमंदी' के लिए जिम्मेवार जीन एसएसएडीएच के कारण दिमाग के वृद्ध होने की प्रक्रिया धीमी हो जाती है। खोजियों के अनुसार जिन व्यक्तियों में यह जीन अधिक सक्रिय होता है, उनके 100 वर्ष तक जीवित रहने की संभावना होती है।

मस्तिष्क की जटिल एवं रहस्यमय बनावट तथा इसकी कार्यशैली निश्चय ही हैरान करने वाली है। उदाहरणस्वरूप, मस्तिष्क में स्मृतियों को संभाल कर रखने की योग्यता, आधुनिक युग के सबसे बड़े आविष्कार-कम्पयूटर को भी मात देती है। निस्संदेह, मस्तिष्क एक ऐसा चमत्कारिक यंत्र है, जिसे विश्व की सबसे अद्वितीय रचना होने का गौरव प्राप्त है। संयोगवश, जानवर जगत में से बनमानुषों की चिम्पाजी नस्ल का दिमागी सामर्थ्य मनुष्य की भांति ही है। वास्तव में, चिम्पाजी मानव का सबसे नजदीकी पूर्वज है। मनुष्य एवं चिम्पाजी के डीएनए में केवल 1.24 प्रतिशत का अंतर है।

मस्तिष्क के बारे में हमारा ज्ञान अभी भी अधूरा है। इस के अबूझ रहस्यों का पता लगाने के लिए विज्ञानी निरंतर प्रयत्नशील है। बर्तानवी खोजियों द्वारा किए गए एक ताजा अध्ययन के अनुसार बीते 20 हजार वर्षो को छोड़ कर उससे पूर्व लगभग 20 लाख वर्षो के दौरान मानव के दिमाग का विकास हुआ तथा इसका आकार तीव्र गति से बढ़ा। उसके पश्चात् बीते 20 हजार वर्षो से यह सिंकुड़ रहा है तथा ऐसा समस्त विश्व में दोनों लिंगों में और समस्त नस्लों में हो रहा है। विस्कानसिन यूनिवर्सिटी से संबंधित खोजी डा. जॉन हाक्स का कहना है कि 'बीते 20 हजार वर्षो के दौरान पुरुषों के दिमाग का औसत आकार लगभग 1500 क्यूबिक सैंटीमीटर से 1350 क्यूबिक सै.मी. कम हुआ है। इस प्रकार मानव के मस्तिष्क का आकार लगभग एक टैनिस बाल जितना कम हो गया है। महिलाओं का दिमाग भी लगभग इस अनुपात में सिंकुड़ा है। उसने यह भी कहा कि मानव मस्तिष्क का आकार कम होने से यह आवश्यक नहीं है कि उसकी अक्ल भी घट रही है। दिमाग के सिंकुड़ने से संबंधित भी उसने कई सिद्धांत पेश किए हैं, जिनमें से प्रमुख यह हैं कि पाषाण युग के दौरान मानव को बड़े दिमाग की आवश्यकता थी, क्योंकि उसको उस समय सर्दी-गर्मी जैसे विकट हालात का अधिक सामना करना पड़ता था।

यद्यपि मानव इतिहास के वर्तमान दौर में मानव मस्तिष्क का आकार एक तरह से स्थिर है, परन्तु 20 वर्षो की आयु के पश्चात आमतौर पर दिमाग का वजन एक ग्राम प्रति वर्ष कम होता रहता है, फिर भी इसका यह मतलब नहीं है कि आयु के बढ़ने से दिमागी शक्ति कम होने लगती है, बल्कि दिमाग और भी तेजी के साथ कार्य करने लगता है, क्योंकि मनुष्य दिमागी तौर पर काफी प्रौढ़ हो जाता है। वैसे, पिछली उम्र में दिमाग को अचानक ही चुनौतियों का मुकाबला करने से मुक्त कर देने से दिमाग की कोशिकाओं का तीव्रता से पतन होने लगता है, जिसके परिणामस्वरूप दिमागी शक्ति कम होने लगती है। डा. बी. रामामूर्ति सलाह देते हैं कि ढलती आयु में दिमाग को तीक्ष्ण बुद्धि वाला रखने के लिए इसको बाह्य चुनौतियों का लगातार डट कर सामना करते रहने की आदत डालनी चाहिए। ध्यान

रहे, उम्र बढ़ने के साथ याद्दाश्त, खासकर शार्ट टर्म मैमोरी के बिना दिमाग का अन्य कोई भी हिस्सा प्रभावित नहीं होता। दरअसल, 65-70 वर्ष की आयु के पश्चात् दिमाग नया डाटा संभालने में कठिनाई महसूस करता है। इसीलिए, इस उम्र में कई अवसरों पर बात याद होते हुए भी व्यकित के गले में फंसी ही रहती है।

यह बात ठीक है कि अपने मनपसंद के किसी रचनात्मक कार्य में व्यस्त रहने वाले व्यक्ति को बढ़ती हुई आयु की दस्तक व्याकुल नहीं करती, परन्तु यह बात माननी पड़ेगी कि दिमाग भी शरीर के अन्य अंगों की भांति ही आयु के प्रभाव को ग्रहण करता है।

पहले यह समझा जाता था कि बड़े आकार के दिमाग वाला व्यक्ति अधिक बुद्धिमान होता है। इस परम्परागत सोच की पुष्टि करते हुए आस्ट्रिया का एक विज्ञानी डा. फ्रांज जोसेफ कहता है कि किसी व्यक्ति का बड़ा माथा, उसके बड़े दिमाग की सूचना देता है तथा इस प्रकार से स्वाभाविक है कि वह अधिक बुद्धिमान होगा। डा. जोसेफ ने यह सिद्धांत 19वीं शताब्दी के प्रथम दशक में प्रस्तुत किया, परन्तु मौजूदा दौर के वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया कि दिमाग के आकार अथवा वज़न से किसी व्यक्ति की बुद्धि का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। तजुर्बों से सिद्ध हो चुका है कि एक मूर्ख व्यक्ति के दिमाग का आकार बड़ा हो सकता है तथा एक प्रतिभाशाली व्यक्ति के दिमाग का आकार छोटा हो सकता है। जहां तक किसी व्यक्ति के दिमागी स्तर का प्रश्न है, यह उसके दिमाग की आंतरिक जटिल बनावट पर निर्भर करता है।

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि महिला एवं पुरुष की दिमागी बनावट में कोई अंतर नहीं होता। तो फिर महिला एवं पुरुष के व्यवहार में अंतर क्यों होता है? यह एक अलग विषय है। इसलिए यहां अत्यंत संक्षेप में बात की जाएगी। दिमाग दो अर्ध भागों में बंटा हुआ होता है। दिमाग का दायां आधा भाग, जज़्बाती सोच का केंद्र होता है, जबकि तर्क, दलील, हिसाब-किताब इत्यादि दिमाग के बाएं आधे भाग में अंकुरित होते हैं। महिलाएं क्योंकि दिमाग के बाएं अर्ध भाग में विचरती हैं, इसलिए वे अधिक संवेदनशील होती हैं। उनके लिए दो एवं दो का अर्थ 22 बन सकता है जबकि पुरुषों के लिए 2 एवं 2 का अर्थ 4 ही होता है, क्योंकि पुरुष दिमाग के दायें अर्ध भाग से प्रभावित होते हैं तथा तर्क की भाषा में बात करते हैं। इसी कारण, दोनों की सोच का दृष्टिकोण सदैव एक जैसा नहीं होता।

एक डैनिश खोजी बैंटो पैकनबर्ग ने हाल ही में पता लगाया है कि पुरुषों में महिलाओं से औसतन चार अरब दिमागी कोशिकाएं अधिक होती हैं। उसका कहना है कि पुरुषों में औसतन 23 अरब दिमागी कोशिकाएं होती हैं जबकि महिलाओं में 19 अरब कोशिकाएं होती हैं। एक अनुमान के अनुसार पुरुषों में महिलाओं के मुकाबले 16 प्रतिशत अधिक दिमागी कोशिकाएं होती हैं। दूसरे महिला का दिमाग पुरुष के दिमाग से आकार में छोटा एवं कम वजन का होता है, परन्तु पैकनबर्ग ने साथ ही साथ यह बात भी स्पष्ट कर दी है कि पुरुष के दिमाग का बड़ा आकार उसके अधिक अकलमंद होने का द्योतक नहीं होता। बात फिर से वहीं पर आकर समाप्त होती है। पुरुष हो अथवा महिला, उसका दिमागी स्तर उसके दिमाग की आंतरिक बनावट पर निर्भर करता है। वैज्ञानिक खोजों से यह सिद्ध हो चुका है कि महिला, जिसका दिमाग पुरुष के दिमाग से आकर में छोटा एवं कम वजन का होता है, अकलमंदी के दौर पर पुरुष को पछाड़ सकती है। दिमाग के आकार को किसी व्यक्ति की अकल का पैमाना मानने वाला आस्ट्रिया का प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. फ्रांज जोसेफ स्वयं छोटे आकार के दिमाग का स्वामी था। यह तथ्य उसकी मृत्यु के पश्चात सामने आया। उसका दिमाग औसत से 15 प्रतिशत छोटा था।

-हिन्दी अनुवाद

बलवंत सिंह लैक्चरार

★★

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

-अनघा लेले

8 मार्च, 1917- उस जमाने के रूसी कलेण्डर के अनुसार 23 फरवरी, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस! रूस की उस समय की राजधानी सेण्ट पीटर्सबर्ग में मजदूरसंगठनों ने महिला दिवस के उपलक्ष में कई कार्यक्रमों की जोरदार तैयारयां की थीं। जगह-जगह सभाओं, मीटिंगों, भाषणों का आयोजन किया गया था। पर्चे छपकर तैयार थे। इसके ज़रिये मजदूरों में राजनीतिक चेतना पैदा करने की कोशिश की जा रही थी।

रूस के राजा जार ने 1914 में शुरू हुए पहले महायुद्ध में रूस को भी धकेल दिया था। इस बहाने वह अपना साम्राज्य और अधिक बढ़ाने की कोशिश कर रहा था। उसके इस लालच की कीमत रूस की जनता को चुकानी पड़ रही थी। और वह भीषण परिस्थितियों से गुजर रही थीं। भारी संख्या में लोगों की जानें जा रही थीं, सम्पत्ति नष्ट हो रही थी। गाँव-गाँव और घर-घर से पुरुषों को जबर्दस्ती सेना में भर्ती किया जा रहा था। खेती के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले घोड़ों को भी पकड़-पकड़ कर युद्ध के मोर्चे पर भेजा जा रहा था। इन सैनिकों के पास न तो युद्ध का प्रशिक्षण था न ही ढंग के हथियार। बिना पर्याप्त साधन के ही उन्हें जंग में झोंका जा रहा था। इस तरह, खेती करने वाले लोगों और पशुओं की संख्या बेहद कम हो रही थी। इसका परिणाम हुआ कि रूस में अनाज की भरी कमी होने लगी। यह कमी इतने बड़े पैमाने की थी जिस पहले कभी नहीं देखा गया था।

उजाड़ गाँवों से स्त्री-पुरुष शहरों की ओर भाग रहे थे। काम करने वाले पुरुषों को सेना में जबरन भर्ती किये जाने से परिवार की सारी जिम्मेदारी महिलाओं पर आ गयी थी। इस कारण महिलाएं बड़े पैमाने पर कारखानों में मजदूरी करने लगी थीं।

अनाज की कमी के कारण दिन भर कारखानों में मेहनत करने के बाद भी उन्हें पेटभर खाना नहीं नसीब हो रहा था। उत्पादन भी मुख्यतः उन्हीं चीजों का हो रहा था जिनकी युद्ध के लिये जरूरत थी। इसके चलते जरूरत की अन्य चीजों की भी बेहद कमी हो गयी थी। ब्रेड के लिए कतार लगा-लगा कर लोग तंग आ चुके थे। इससे महिलाएं ही सबसे ज्यादा पिस रही थीं। लोगों का गुस्सा इतना अधिक बढ़ गया था कि बस एक चिंगारी से ही आग फूट पड़ने को तैयार थी। इस नाजुक हालत को देखते हुए मजदूर नेता कोई भी प्रोग्राम देखने से पहले सौ बार सोचते थे। वे कोई बड़ा आह्वान नहीं करना चाहते थे।

1905 में मजदूरों-किसानों द्वारा क्रान्ति की कोशिश को जार ने बुरी तरह से कुचल दिया था। उस प्रहार के बाद मजदूर संगठन और पार्टी धीरे-धीरे फिर से संभल रहे थे। एकभी गलत कदम से जार का आतंक फिर से बरपा हो सकता था और उन्हें खत्म किया जा सकता था। इसलिए नेताओं ने तय किया था कि उस दिन कोई बड़ा जुलूस या हड़ताल नहीं की जायेगी।

लेकिन इतिहास की योजना कुछ और ही थी। युद्ध की विभीषिका को सबसे ज्यादा महिलाएं झेल रही थीं। अनगिनत महिलाओं ने युद्ध में अपने प्रियतम खो दिये थे और जब नन्हे-मुन्ने बच्चों की जिम्मेदारी भी उन पर ही आ गई थी। उनके पास अब खोने के लिए कुछ नहीं बचा था। उन्हें इन्तजार कनना अब मंजूर नहीं था। आज का दिन उनका था। 8 मार्च को महिला दिवस मनाने के लिए औरतें इकट्ठा हुईं।

कपड़ा-उद्योग में काम करने वाली महिलाओं ने तय कर लिया कि वे इस दमघोंटू परिस्थिति को तोड़ कर ही दम लेंगी। जगह-जगह से महिलाएं स्वतः स्फूर्त तरीके से हड़ताल में शामिल होने के

लिए पहुंचने लगीं। उन्होंने मजदूर भाइयों से भी अपने साथ आने का आह्वान किया। देखते ही देखते सेंट पीटर्सबर्ग शहर के सारे उद्योग धड़ाधड़ बन्द होने लगे। उस दिन की हड़ताल में ९०,००० स्त्री-पुरुष शामिल हुए। उन्होंने सिर्फ हड़ताल ही नहीं की, बल्कि मुख्य शहर की ओर जाने वाले रास्तों पर बड़े-बड़े जुलूस निकाले। नारे लगाते हुए और गीत गाते हुए वे राजधानी की ओर बढ़ने लगे। दूसरे कारखानों में, स्कूल-कालेजों में जाकर वे सबको अपने साथ आने का आह्वान करने लगे। पाव रोटी की मांग करती महिलाओं का बहुत बड़ार जुलूस नगरपालिका के सामने आ गया। शहर के सभी महत्त्वपूर्ण स्थानों पर लोग इकट्ठा हो गये थे और नारे लगा रहे थे।

महिला दिवस के दिन महिलाओं द्वारा जलायी गयी यह चिंगारी आग बनकर फैल रही थी। अब जनता चुप रहने वाली नहीं थी। अपना लक्ष्य पायेबिना जन-उभार अब रुकने वाला नहीं था। 1905 की क्रांति को कुचलने के लिए जार ने सेना का उपयोग अपने ही देशवासियों के विरुद्ध किया था। इस बार भी जार और उसके अधिकारियों को सेना का भरोसा था। पीटर्सबर्ग की सेना की आरक्षित टुकड़ियों को इस काम के लिए तैनात कर दिया गया ।

लेकिन इस बार जार को पुराना किस्सा दोहराने देने के लिए जनता तैयार नहीं थी। आन्दोलन में बड़ी संख्या में शामिल औरतें यह सहने के लिए हरगिज तैयार नहीं थीं। आन्दोलन को कुचलने के लिए जो सैनिक तैनात किये गये थे, उनमें इन्हीं औरतों के पति, प्रियतम, भाई और बेटे थे। अपनी जान की परवाह किये बगैर वे उन सैनिकों के पास दौड़-दौड़ कर जातीं, उनके हथियार पकड़ उन्हें समझातीं, उनसे कहतीं कि ''देख भाई, देख! ये सब तेरे अपने हैं। तू किन पर गोलियां बरसायेगा? आ तू भी हमारे साथ हो ले, जनता की इस लड़ाई में तू भी शामिल हो जा।''

सालों से चल रही जंग, उसमें बार-बार होती पराजय, और जवानों की बेहद खराब हालत के कारण उनमें जार के प्रति असंतोष दहक रहा था। अपने परिवार से दूर, गांव-जमीन से कटकर जीते हुए ये जवान जंग से तंग आ चुके थे। वे घर जाना चाहते थे। उधर जार किसी भी हालत में जंग जारी रखने पर अड़ा हुआ था। इस वजह से उनके दिलों जार के प्रति नफरत भर चुकी थी। श्ऐसे में अपनी ही माँ-बहानों की गुहार का उन पर असर क्यों न होता? देखते ही देखते सेंट पीटर्सबर्ग की सेना जनता की ओर से लड़ने `लगी। मजदूर-किसान-जवान सभी ने मिलकर जार को पराजित कर दिया। इंकलाब सफल रहा।

5 दिनों के इस संघर्ष के बाद जारशाही बर्खास्त कर दी गयी। पूँजीपति वर्ग ने अवसर का फायदा उठाते हुए उस वक्त शासन अपने हाथों में ले लिया और जनता का राज स्थापित नहीं हो सका। लेकिन इन्हीं पांच दिनों के संघर्ष ने बाद में हुई अक्टूबर, 1917 की समजाजवादी क्रान्ति के लिए राह बनाई जिसके बाद वहां मेहनतकशों का राज कायम हुआ।

8 मार्च, महिला दिवस पर इंकलाब की नींव रखने वाली रूसी महिलाओं को सलाम!

महान विचार

यह उनका (ईसाईयों का) एक नियम हे कि अपने में कोई भी ऐसा व्यक्ति सम्मिलित न होने दो, जो विद्वान, बुद्धिमान अथवा चतुर हो, परन्तु यदि वह शिक्षित न हो, अज्ञानी अथवा मूर्ख हो तो उसे बेझिझक आने दो। इसलिए वे यह बात सरेआम कहते हैं कि केवल अनजान एवं जिन्हें समझ से शून्य रखा गया हो, गुलाम, महिलाएं एवं बच्चे ही ईश्वर के सच्चे भक्त हैं, जिन्हें वे पूजते हैं।

ऐलिस कोर्निलियस सैल्सस (25-50 ई.)

तर्कशील हलचल

ओडिशा में फीरा का 9वां अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

-हरचन्द भिंडर
09417923785

ओडिशा के बहरामनपरु शहर में फैडरेशन ऑफ इडियन रेशनलिस्ट एसोसियेशंज़ इंडिया का नौवां सम्मेलन 25-26 दिसंमबर, 2014 को संकल्प सीनियर सैकण्डरी स्कूल में आयोजित किया गया। जिस की अध्यक्षता डा. नरेन्द्र नायक मैंगलोर द्वारा की गई। अध्यक्ष एण्डल में डा. वियम विजयवाड़ा, डा. दानेश्वर साहू ओडिशा, हरीश देशमुख महाराष्ट्र, वी. कुमारसन केरला, रघुनाथ सिंह, अर्जक संघ उत्तर प्रदेश, मनोज कुमार, झारखण्ड शामिल रहे। श्री नायक ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में फीरा की गतिविधयों की जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान में सरकार के परिवर्तन के कारण तर्कशीलों के लिए हिन्दू शावनवाद (कट्रवाद) के विरुद्ध संघर्ष और भी कठिन हो गया है। सरकारी सरपरस्ती के कारण हिन्दुत्व एवं हिन्दू राष्ट्रवाद लोगों पर जबरदस्ती साथ थोपने के यत्न हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि फीरा को अब और भी मजबूती के साथ कार्य करना पड़ेगा। सम्मेलन में सारे भारत में से तीन सौ प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सम्मेलन के प्रथम सत्र में भारत के विभिन्न रारज्यों के संगठनों की ओर से अपने-अपने राज्यों में की जा रही सरगर्मियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। श्री बलविन्द्र, बरनाला द्वारा तर्कशील सोसायटी, पंजब की पंजाब में, राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर की जा रही गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। डा. नरेन्द्र नायक ने अपने पंजाब एवं हरियाणा के दौरे का हवाला देते हुए तर्कशील सोसायटी, पंजाब व इसके मुखपत्र 'तर्कशील' की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

सम्मेलन के दूसरे सत्र में डा. विजयम द्वारा 'तर्कशीलता एवं मानव जीवन के लिए वैज्ञानिक चिन्तन का महत्व' पर, श्री वेंकट सुबाहिया द्वारा 'अंधविश्वासों के हानिकारक प्रभाव' पर अपने वक्तव्य रखे गए।डा. दानेश्वर साहू द्वारा 'धर्मनिपेक्षता की सही परिभाषा' विषय पर तथा बलविन्द्र, बरनाला द्वारा 'धर्मनिरपेक्षता एवं सामाजिक विकास में इस का महत्व' विषय पर अपने विचार रखे गये।

सम्मेलन के दूसरे दिन संगठन के राष्ट्र महासचिव यू.कलानाथन, केरला द्वारा फीरा की समस्त रूप में गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।तत्पश्चात् महासचिव की रिपोर्ट पर पूरी बहस हुई।

सम्मेलन के अन्तिम सत्र में आगामी दो वर्षो के लिए फीरा की नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी का चुनाव वहां पर उपस्थित प्रतिनिधियों द्वारा किया गया।श्री नरेन्द्र नायक को पुनः संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री बलविन्द्र बरनाला राष्ट्रीय महासचिव, हरचंद भिंडर राष्ट्रीय वित्त सचिव चुने गये।हरीश देशमुख महाराष्ट्र, ई.टी.राव ओडिशा, ई.वी.राव, तमिलनाडू, उप-प्रधान चुने गए। श्री मनोज कुमार झारखण्ड सचिव, बी. रामाचन्द्रन, ओडिशा एवं वी. कुमारसन केरला संगठन सचिव चुने गए।इसके अतिरिक्त यू.कलानाथन केरला एवं डा. विजयम दोनों को सर्वसम्मति से संगठन के सरप्रस्त चुना गया।

अन्त में नवनिर्वाचित राष्ट्र महासचिव श्री बलविन्द्र, बरनाला व वितसचिव हरचन्द भिंडर ने समस्त प्रतिनिधियों का हार्दिक धन्यवाद किया। कार्यक्रम की समाप्ति पर राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. नरेन्द्र नायक ने सम्मेलन में उपस्थित समस्त प्रतिनिधियों का धन्यवाद किया।

विवाह का अविस्मरणीय कार्यक्रम

स्वस्थ सामाजिक परम्पराओं को कायम रखने के लिए युवा लड़के-लड़की के शादी विवाह का आयोजन करना सामाजिक रस्मों का एक आवश्यक अंग है। वर्तमान दौर में प्रायः शादी-विवाह के कार्यक्रमों में बेहद फूहड़ता, लचरता एवं अपमानजनक दिखावटी शानो-शौकत देखने को मिलती है, परन्तु कोई-कोई शादी विवाह लोगों को नई दिशाएं भी दे जाते हैं।

ऐसे ही एक कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 25-01-2015 को मनिन्द्र सिंह सुपुत्र श्री जगतार सिंह गांव नेसी जिला कुरुक्षेत्र एवं गुरप्रीत कौर सुपुत्री श्री रतन सिंह गांव नूरपुर बुच्वी, जिला कुरुक्षेत्र के विवाह दौरान समाज का पथ प्रदर्शित करते हुए नई दिशाएं दे गया। इस शादी में वर व वधु पक्ष की ओर से किसी प्रकार की कोई मिलनी इत्यादि की रस्म नहीं की गई तथा न ही किसी प्रकार के दान-दहेज का लेन-देन किया गया। शादी के आयोजन में दोनों पक्षों ने आर्केस्ट्रा वगैरह की लचरता एवं फूहड़ता को तिलांजलि देते हुए उसके स्थान पर एक तर्कशील कार्यक्रम का आयोजन करने के लिए तर्कशील सोसायटी हरियाणा, इस्माईलाबाद इकाई के सचिव कर्मजजीत सिंह ठसका के माध्यम से तर्कशील पथ पत्रिका के संपादक बलवंत सिंह से सम्पर्क किया। साथियों के प्रयत्नों से विवाह का वह आयोजन एक अविस्मरणीय कार्यक्रम बन गया।

विवाह के उस कार्यक्रम का आयोजन क्लासिक पैलेस इस्माईलाबाद जिला कुरुक्षेत्र में किया गया। उस कार्यक्रम में चेतना कला केंद्र, बरनाला की टीम ने दो नाटक एवं तीन कोरियोग्राफी के प्रस्तुतिकरण के माध्यम से आयोजन में सम्मिलित रिश्तेदारों, मित्रों एवं स्नेहियों को भावविभोर कर दिया। कार्यक्रम की शुरुआत कोरियोग्राफी 'अन्नदातिया जहान दिया जाग वे' से हुई, जिसमें भारतीय किसान की सच्ची तस्वीर जनता के सामने रखी गई। तत्पश्चात नाटक प्रेत के माध्यम से आम घरों में घटने वाली गैर वैज्ञानिक घटनाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण करके लोगों को वैज्ञानिक सोच अपनाने का संदेश दिया गया। इसी प्रकार सार्थक संदेश देती हुई कोरियोग्राफी 'छल्ला' एवं 'मैं धरती पंजाब दी' प्रस्ततु की गई। अंत में हास्य रस से भरपूर सामंती शोषण का प्रकटीकरण करता हुआ नाटक 'यह लहू किसका है' पेश किया गया।

कार्यक्रम का मंच संचालन मा. बलवंत सिंह द्वारा किया गया तथा उन्होंने बीच-बीच में जादू के विभिन्न ट्रिक दिखाकर तथा उनके रहस्यों के बारे में समझा कर आम लोगों को ढोंगी बाबाओं एवं तांत्रिक-मांत्रिकों से सावधान रहने की अपील की।

तर्कशील सोसायटी, हरियाणा की द्विमासिक बैठक सम्पन्न

तर्कशील सोसायटी, हरियाणा की द्विमासिक मीटिंग कुरुक्षेत्र में 11 जनवरी को सम्पन्न हुई। इस बैठक में राज्य के प्रतिनिधियों के अतिरक्त स्थानीय लोगों ने भी भग लिया। बैठक के प्रारम्भ में मा० बलजीत भारती ने सोसायटी की कार्यप्रणाली, संविधान व चुनौती को रेखांकित किया ताकि प्रथम बार मीटिंग में पंहुचे साथियों को जानकारी मिल सके। इसके बाद कृष्ण लाल राजौंद ने मानसिक रोगियों के लिए लगाए गए कैम्पों के बारे अपने अनुभव सांझे किए। जयदेव बदरपुर ने इस बात का खुलासा किया कि उन्होंने हरियाणा के पर्यावरण विभाग से आर.टी.आई. द्वारा मंदिरों व घरों में अगरबत्तियों के धुंए द्वारा होने वाले वायु प्रदुषण की मात्रा के बारे में जान कारी मांगी थी परन्तु संबंधित विभाग इस बारे में कोई जानकारी नहीं दे सका।सुभाष तीतरम में तर्कशील साहित्य की प्रदर्शनी लगाई। मा० बलवन्त सिंह ने तर्कशील आंदोलन को दरपेश चुनौतियों पर अपना वक्तव्य रखा और विभिन्न बाबाओं द्वारा सोसायटी के कार्यकर्ताओं पर बनाये गए झूठे मुकदमों का विवरण दिया। कार्यक्रम का संचालन महासचिव गुरमीत सिंह ने किया तथा साथ-साथ विभिन्न तर्कशील विषयों पर अपने विचार रखे। उपरान्त दर्शकों ने भी अपनी जिज्ञासाएं, सुझाव व अपने अनुभव सांझे किए।

बाबाओं के काले कारनामे

झाडफूंक से इलाज के बहाने वृद्ध से गहने ठगे

कुरुक्षेत्र - झाड़फूंक से पत्थरी का उपचार करने का झांसा देकर अस्पताल आई वृद्धा से एक युवक गहने लेकर फरार हो गया। शोरगुल मचान क `बाद लोगों को बुजुर्ग महिला ने घटना की जानकारी दी। समाचार लिखे जाने तक पुलिस को इस बारे में सूचित नहीं किया गया था र के लिए एल.एन.जे.पी अस्पताल आई थी। यहां उसे एक युवक मिला। उसने बताया कि वह झाड़फूंक कर पथरी का इलाज कर देगा। यह बुजुर्ग महिला उसकी बातों में आ गई और उसने उपचार के लिए कहा।

इस पर युवक ने पहले महिला को आभूषण निकालने को कहा। महिला ने कानों से टॉप्स, अंगूठी व गले में पहनी तबीती निकाल कर युवक को दे दी। गहने लेने के बाद महिला को युवक ने आंखें बंद करने को कहा और फिर वहां से फरार हो गया। इसके बाद जब महिला ने शोर मचाया और लोगों की भीड़ एकत्रित हो गई। महिला ने आपबीती बताई। वहीं दूसरी ओर ज्योतिसर से आई बिमला पत्नी रामनाथ गुर्जर के अस्पताल से ३०० रुपए चोरी हो गए। मामले में पुलिस को सूचना दिए जाने की खबर नहीं आई थी।फ

अमर उजाला 1-8-2014

तांत्रिक के घर में बंधक मिला युवक

जयपुर पुलिस ने छापामारी कर युवक को छुड़ाया

घरौंडा। यमुना के साथ सटे गाव में तांत्रिक के घर में बुधवार सुबह राजस्थान पुलिस ने छापामारी कर एक युवक को तांत्रिक के कब्जे से छुड़ाया। युवक करीब डेढ़ साल से तांत्रिक के कब्जे में था। राजस्थान पुलिस युवक को लेकर राजस्थान रवाना हो गई है। इस मामले में घरौंड़ा पुलिस तांत्रिक से पूछताछ कर रही है। बुधवार सुबह करीब ८.३० बजे राजस्थान के जिले जयपुर की थाना परागपुरा पुलिस ने घरौंडा के गांव गढ़ीभरल में घरौंडा पुलिस के साथ दबिश दी। परागपुरा थाने के हेड कांस्टेबल रतनसिंह के अनुसार परागपुरा थाने के तहत आने वाले गांव दांतिल निवासी कैलाश ने अपने बेटे राजकुमार के लापता होने के रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। मामले की जांच करने पर पता चला कि राजकुमार घरौंडा इलाके के एक गांव में तांत्रिक के कब्जे में है। इसके बाद ह रियाणा पुलिस के सहयोग से गांव में छापामारी की और युवक को तांत्रिक के घर से बरामद कर लिया। युवक से पूछताछ की जा रही है कि वह तांत्रिक के पास कैसे पहुंचा।

संदिग्ध हालात में लापताः-राजकुमार के पिता कैलाश ने बताया कि उन्होंने अपने बेटे को उच्च शिक्षा दिलाई है। पढ़ाई के बाद गांव में ही स्कूल खुलवाया ताकि वह आसपास के गांव के बच्चों को शिक्षित कर सके। करीब डेढ़ साल पहले राजकुमार संदिग्ध हालात में लापता हो गया। उन्होंने बताया कि राजकुमार की मां का रो-रोकर बुरा हाल है।

तंत्र विद्या का झांसा देकर बनाया बंधकः- आरोप है कि तांत्रिक ने राजकुमार को तंत्र विद्या सिखाने का झांसा देकर अपने पास रख लिया। तांत्रिक राजकुमार से घर काम और खेती करवाता था। युवक को कहीं भी आने-जाने की अनुमति नहीं दी जाती थी। राजकुमार कि पिता ने बताया कि कुछ दिन पहले जब उन्हें पता चला कि उनका बेटा तांत्रिक के पास है तो वे उसे लेने आए लेकिन तांत्रिक ने धमकाकर वापस भेज दिया।

अमर उजाला 2.5.2013

गांववासियों को ठग कर बाबे चलते बने

पत्र प्रेरक, गुहला चीका, 8 फरवरी–उपमंडल के गांव बदसूई में स्वामी प्यार गिरी एवं उसके शिष्य महंत जरनैल गिरि गांव वासियों को ठग गए। जानकारी के अनुसार 10 दिन पूर्व प्यार गिरि अपने शिष्य जरनैल गिरि को साथ लेकर गांव में आए तथा उसने सुख शांति हेतु यज्ञ करने का फैसला किया।

गांववासियों को विश्वास दिलवाया कि यज्ञ करने से गांव में सुख शांति की ऐसी लहर चलेगी तथा गांव पूरे हरियाणा में चमकेगा। गांव के सरपंच गुरनाम सिंह, नंबरदार मेल सिंह, पलविन्द्र सिंह, जय भगवान शर्मा, वीरभान नंबरदार, परमजीत सिंह, स्वरूप सिंह एवं जरनैल सिंह ने पत्रकारों को बताया कि तथाकथित साधुओं की बातों में आ गए एवं यज्ञ के साथ-साथ 8 फरवरी को कथित तौर पर होने वाले भंडारे के लिए नकदी एवं खाद्य सामग्री एकत्र करने में जुट गए। गांव वालों ने कहा कि 10 दिनों में उन्होंने हजारों रुपए एवं खाद्य सामग्री एकत्र करके तथाकथित बाबाओं के हवाले कर दी। गांव वासियों ने बताया कि आज सुबह जब वे बाबे की सेवा हेतु गांव से बाहर स्थित एक धार्मिक स्थान पर गए तो वहां जाकर पता चला कि बाबा अपने चेलों समेत सामान लेकर गांव से फरार हो गया। गांव वालों ने जब बाबे द्वारा पंजाब में बताए गए एक पते की पड़ताल की तो वह पता फर्जी निकला। बल्कि बाबा द्वारा दिया गया मोबाइल नंबर भी बंद हो गया। बाबे की करतूत के कारण गांव वाले हाथ मलते ही रह गए।

पंजाबी ट्रिब्यून

07-02-14

नासिक में नरबलि तांत्रिक महिला समेत 10 गिरफ्तार

नासिक 1 जनवरी- महाराष्टर में तंत्र साधना के लिये 2 महिलाओं की बलि देने का मामला सामने आया है। घोटी पुलिस ने तांत्रिक महिला वछीबाई खड़गे समेत 10 लोगों को गिरफ्तार किया है। बछीबाई ने पुलिस को बताया कि उसने अपने गुरु के कहने पर ये बलि दीं। घोटी पुलिस के मुताबिक इगतपुरी के पास एक आदिवासी गांव की महिला वछीबाई खड़गे तंत्र साधना करना चाहती थी और उसके गुरु ने उसे बताया कि इसके लिए उसे 7 महिलाओं की बलि देनी होगी।

इसके बाद वछीबाई ने मलिलाओं की तलाश शुरू कार दी। चूंकि वछीबाई तांत्रिक है इसलिए उसके पास आसपास के गांवों की गरीब महिलाएं अपनी समस्याएं लेकर आती थीं। वछीबाई की शिष्या बुगीबाई ने उसे बताया कि उसकी सास उसे काफी तंग करती है, इस पर वछी बाई ने कहा कि उसकी सास पर भूत का साया है और इसके बाद झाड़-फूंक के नाम पर वछी बाई ने सास की दर्दनाक हत्या कर दी और शव को दफना दिया। इसके बाद वछी बाई ने गांव के ही 2 भाइयों गोविंद और काशीनाथ को भी बरगलाकर उनकी मां को मौत के घट उतार दिया। इसके बाद उसने उनकी बहन को भी लपेटे में लेने की कोशिश की लेकिन बहन को इसकी भनक लग गई और वह किसी तरह पुल के चंगुल से निकल कर पुलिस थाने पहुंच गई और वछीबाई के कुकर्म का पर्दाफाश हुआ ।

पंजाब केसरीः जनवरी 2, 2015

स्वास्थ्य

1. ओट्स – सुबह के समय नाश्ते में ओट्स खाना स्वस्थ दिन की शुरूआत है। 6 हफते तक सुबह नाश्ते में प्रतिदिन ओट्स का दलिया लेने से एलडीएल को 5.3 प्रतिशत तक घटा सकते हैं।

2. रेड वाइन – जो लोग वाइन पीने का शौक रखते हैं, उनके लिए अच्छी खबर है हफते में 2 बार थोड़ी सी रेड ग्रेप वाइन पीना कोलेस्ट्रोल को कम करने में मदद करता है।

3. साल्मन फिश – जो लोग मछली खाते है। उनके लिए भी कोलेस्ट्रॉल को घटाना आसान है। दरअसल हमारे शरीर को स्वस्थ फैटी एसिड और अमीनो एसिड की जरूरत होती है। शरीर को एनर्जी और साल्मन फिश में स्वस्थ फैटी एसिड और अमीनो एसिड भरपूर मात्रा में होते हैं, जो कोलेस्ट्रॉल को कम करने में उपयोगी हैं।

4. ड्राई फ्रूट्स – अब आप हर रोज मुट्ठीभर सूखे मेवे बिना किसी चिंता के खा सकते हैं। अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन की मानें तो सूखे मेवे खाना हमारी सेहत के लिए बहुत जरूरी है, क्योंकि इनमें प्रोटीन फाइबर और विटामिन-ई भरपूर मात्रा में होते हैं। साथ ही मेवों में स्वस्थ फैटी एसिड भी पाया जाता है, जो कैमिकल्स में प्रोसेस नहीं होता है और कोलेस्ट्रोल को कम करने में काफी असरदार है।

5. अंकुरित दालें – अंकुरित दालों को अगर दिल का दोस्त कहा जाए तो गलत नहीं होगा। अपने दिन के खाने में कम से कम आधा कप बीन्स जैसे राजमा, चने, मूंग, सोयाबीन और उड़द को आप सूप, सलाद या सब्जी किसी भी रूप में ले सकते हैं। अंकुरित दालों का रोजाना सेवन बुरे कोलेस्ट्रॉल को घटाता है।

6. ग्रीन टी – ग्रीन टी में कॉफी की तुलना में काफी कम कैफीन पाई जाती है। साथ ही शरीर को चुस्त-दुरूस्त रखने और स्वस्थ रखने वाले एंटी-आक्सीडेंट भी ग्रीन टी में ज्यादा होते हैं। रोजाना ग्रीन टी पीने से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, जिससे बैड कोलेस्ट्रॉल को कम करना आसान हो जाता है।

7. डार्क चॉकलेट – डार्क चॉकलेट खाना भी कोलेस्ट्रोल कम करने में उपयोगी है, क्योंकि इसमें पाए जाने वाले एंटी-ऑक्सीडेंट से रक्त नलिकाएं मजबूत बनती हैं, जिससे दिल का दौरा पड़ने की आशंका कम होती है।

8. हरी पत्तेदार सब्जियां – हरी पत्तेदार सब्जियों का सेवन भी कोलेस्ट्रोल को कम करने में मदद करता है, क्योंकि ही पत्तेदार सब्जियों में विटामिन ए, बी, सी के साथ आयरन और कैल्शियम भी पाया जाता है। ये सभी पोषक तत्व शरीर को सेहतमंद बनाने के साथ-साथ रक्तसंचार दुरूस्त करते हैं, जिससे दिल सुगमता से अपना काम करता है।

9. ऑलिव ऑयल – ऑलिव यानि जैतून के तेल में पका हुआ खाना कोलेस्ट्रॉल के मरीजों के लिए सबसे उपयुक्त रहता है क्योंकि इसमें खाना हल्का और सुपाच्य होता है और साथ ही उसमें मोनो अनसैचुरेटेड फैटी एसिड पर्याप्त मात्रा में होते हैं जो कोलेस्ट्रोल को कम करने में मदद करते हैं।

10. लहसुन– लहसुन का नियमित सेवन रक्तचाप, रक्तसंचार और ब्लड शुगर स्तर को सामान्य रखने के अलावा बैड कोलस्ट्रॉल को घटाने में भी उपयोगी है।

बच्चों का कोना

एक गिलास की हवा दूसरे में उड़ेलिए

आप एक ग्लास की हवा दूसरे ग्लास में उड़ेल सकते हैं? आईए उड़ेल कर देखें

जरूरी सामानः

■ कांच का सामान

इस तरह से करेंः

■ सुविधा के लिए एक ग्लास को' 'क' कहेंगे और दूसरे को 'ख' । ग्लास क टब में डुबो कर पानी से भर लें। पानी में ही औंधा करके उसे सतह से इतना ऊपर उठाएं कि उसका मुंह पानी के भीतर ही बना रहे। चिंता न करें, ग्लास का पानी बाहर नहीं आएगा

■ अब ग्लास ख का मुंह नीचे रखते हुए उसे पानी में डुबोएं (ग्लास में पानी नहीं जाएगा) । पानी के भीतर ही ग्लास क के ठीक नीचे, ख को थोड़ा तिरछा कर दें। हवा के बुलबुल ख से निकल कर क में जाने लगते हैं। क का पानी कम होने लगता है और ख में पानी भरता जाता है । आपने ग्लास 'ख' की हवा ग्लास 'क' में उड़ेल ली।

■ अब ग्लास क में हवा है औार ग्लास ख में पानी । आपको क की हवा ख में उड़ेलनी है। स्वयं करके देखें।

अलग तरीके से मोमबत्ती बुझाएं

अक्सर हम फूंक कर मोमबत्ती बुझाते हैं, इस बार अलग ढंग से बुझाएंगे।

जरूरी सामानः

■ कांच की बोतल, लचीली प्लास्टिक ट्यूब और मोमबत्ती

इस तरह से करेंः

■ **बो**तल के ढक्कन में छेद करके ट्यूब का सिरा उसमें फंसा दें । टयूब के आसपास ढक्कन पर थोड़ी पुट्टी लगाकर एयर टाईट कर दें।

■ टयूब के जरिए, मुंह से बोतल में भरपूर हवा भरें और भरते-भरते ही टयूब को उंगली से दबा कर बंद कर दें। अब मोमबत्ती की लौ पर निशाना साधकर टयूब का मुंह खेल दें। लौ बुझ जाती है।

कारण : बोतल में अतिरिक्त हवा भरने पर बोतल में हवा का दबाव बढ़ गया टयूब का मुंह खुलते ही दबी हुई हवा को बाहर निकलने का रास्ता मिल जाता है। तेज गति से बाहर निकलती हवा लौ को बुझा देती है।

अनुचित परम्पराएं जो बन गई समस्याएं

-बलवंत सिंह, लैक्चरार

परम्पराएं एवं प्रथाएं किसी भी समाज का अभिन्न अंग होती हैं। ज्यों-ज्यों मानव समाज सभ्यता की सीढ़ियां चढ़ता चला जाता है, वह स्वस्थ परम्पराओं को तो अपनाए रखता है, परन्तु मानव समाज के विकास में आड़े आने वाली व अनुचित बन चुकी परम्पराओं को तिलांजलि देता चला जाता है। जैसे किसी समय हमारे सती प्रथा की परम्परा प्रचलित थी, परन्तु वर्तमान में सती प्रथा एक दंडनीय अपराध है। इसी प्रकार किसी समय की परम्परा के अनुसार किसी विधवा के पुनः विवाह की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, परन्तु वर्तमान दौर में विधवा विवाह होना साधारण सी बात हो गई है।

किसी दौर में यातायात की सुविधा न होने के कारण लड़के के विवाह के समय बारात को लड़के की ससुराल में कई-कई दिन तक ठहराया जाता था। फिर यातायात के साधन कुछ सुगम होने पर प्रायः बारात का ठहराव एक रात का हो गया, परन्तु फिर जब यातायात के साधन कुछ उन्नत हो गए, तो बारात दिन के दिन ही वापिस जाने लग गई, परन्तु आज के दौर में पैलेस-कल्चर हो जाने से विवाह की समस्त रस्में तीन-चार घंटों में ही पूर्ण कर दी जाती हैं।

पहले समय में जब बाल विवाह की प्रथा प्रचलन में थी तो छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं की शादी होना साधारण सी बात थी। उनकी शादी तो बचपन में ही कर दी जाती थी, परन्तु लड़की का गौना अथवा मुकलावा प्रायः उसके जवान होने पर ही किया जाता था। समय के साथ बाल विवाह पर तो प्रतिबंध कानूनी तौर पर लग गया, परन्तु चोरी-छिपे धार्मिक परम्पराओं के नाम पर बाल विवाह होने के समाचार आते ही रहते हैं। हमारे हरियाणा व पंजाब में वर्तमान दौर में वैसे तो बाल विवाह नहीं होते, परन्तु यदा-कदा किसी-किसी पिछड़े हुए ग्रामीण परिवार में एक भाई की शादी के समय बारात के लड़के के ससुराल में पहुंचने पर उसके छोटे भाई की वधू की छोटी बहन से अथवा उनके किसी अन्य रिश्तेदार की छोटी सी लड़की के साथ, दोनों परिवारों की सहमति से शादी कर दी जाती है तथा आपसी सहमति से तय कर लिया जाता है कि लड़की का मुकलावा अथवा गौना बाद में कर दिया जाएगा। ऐसे ही एक घटनाक्रम से गुजरे हुए परिवार का एक मामला मेरे सामने आया, जिसमें उस परिवार को ऐसी ही अनुचित परम्परा के कारण अत्यधिक कष्ट सहने पड़े थे।

राकेश और मीना की शादी को चार वर्ष बीत चुके थे। अभी तक वे संतान सुख से वंचित थे। एक बार मीना को गर्भ ठहरा था, परन्तु गर्भ में आई किसी विकृति के कारण उन्हें गर्भपात करवाना पड़ गया था। इसके कुछ समय के पश्चात मीना की मानसिक दशा खराब होनी शुरू हो गई। उसे दौरे से पड़ने शुरू हो गए। वह कई-कई घंटों तक बेहोश रहने लग गई। जब वह होश में होती तो बेसिर पैर की बातें बोलना शुरू कर देती।

उसकी ऐसी हालत देखकर घर वाले उसे बाबाओं की चौकियों पर ले गए। बाबाओं ने उस पर राकेश के मृत चाचा व चाची का साया बता दिया तथा उन मृत चाचा व चाची की आत्माओं की शांति के नाम पर उनका हजारों रुपया खर्च करवा दिया। परन्तु मीना की हालत और भी अधिक बिगड़ती चली गई। फिर एक के बाद दूसरे बाबा व

तांत्रिक-मांत्रिक के पास वे मीना को लेकर जाते रहे। अब मीना में राकेश का मृत चाचा संजय सरेआम बोलने लग गया कि 'मैं इसे अपने साथ ले जाऊंगा, मैं सारे परिवार को तबाह कर दूंगा।' अर्ध बेहोशी की हालत में मीना की जुबान से कही गई ऐसी बातें सुनकर घर वाले और अधिक डरने लग गए। डर की हालत में उनका कोई रिश्तेदार अथवा परिचित उन्हें जिस भी बाबा आदि के पास भेज देता वे उसी बाबा की शरण में पहुंच जाते, परन्तु जब हजारों रुपए खर्च करने के पश्चात भी मीना की हालत में कोई सुधार दिखाई नहीं दिया तो वे उसे लेकर किसी अन्य बाबा, मुल्ला-मौलवी, तांत्रिक-मांत्रिक इत्यादि की शरण में चले जाते। इस प्रकार बाबाओं की कथित आलौकिक कार्रवाईयों का तथा मीना के परिवार के आर्थिक शोषण का अंतहीन सिलसिला लगातार जारी रहा।

अंत में एक दिन उनके एक परिचित ने, जोकि तर्कशील सोसायटी द्वारा किए जा रहे समाजहित के कार्यों से परिचित था, उनकी दुख भरी दास्तान को सुनकर उन्हें मेरे पास रविवार के दिन लगने वाले मनोरोग परामर्श केंद्र में भेज दिया। मैंने जब मीना से बात करनी चाही तो वह दौरे की अवस्था में चली गई और बेसुध सी होकर पड़ गई। तब मैंने उसके सास-ससुर और पति राकेश से उसकी समस्या के बारे में मोटी-मोटी सी जानकारी प्राप्त कर ली। आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के पश्चात मैंने मीना की नाक पर थोड़ा दबाव डाला, तो वह उठ कर बैठ गई, परन्तु जब मेंने उससे बातचीत करने की कोशिश की तो वह मृतक संजय की आवाज में बोलने लग गई। ऐसी हालत में मैंने एक कैमिकल ट्रिक किया तो वह शांत होकर बैठ गई। फिर मैंने उसे विश्वास में लेकर सम्मोहित करना शुरू किया तो थोड़ी सी देर में वह गहरी निद्रा में चली गई। इस अवस्था में मैंने उसके मन में बसे हुए राकेश के मृत चाचा व चाची के डर को दूर कर दिया तथा उसे सार्थक सुझाव देकर उसका मनोबल बढ़ाया। जब उसे सम्मोहक निद्रा से उठाया तो वह अत्यंत प्रसन्न दिखाई दे रही थी। फिर उसे लगातार 5-7 बार परामर्श केंद्र में बुलाकर उसका मनोबल और बढ़ाकर उसे पूर्णतः निडर बने रहने के लिए प्रेरित किया। तब से वह सारा परिवार हंसी-खुशी के साथ अपना जीवन व्यतीत कर रहा है।

कारण : मीना की शादी के कुछ समय पश्चात उसे गर्भ ठहर गया था, परन्तु किसी विकृति के कारण उन्हें अबार्शन करवाना पड़ गया। जिस महिला चिकित्सक से गर्भपात करवाया गया, उसने अपना कार्य पूर्ण सावधानी के साथ नहीं किया तथा सफाई करने में कोई कमी छोड़ दी। जिसके कारण बाद में उसका गर्भ भी नहीं ठहर रहा था। उन्होंने कई अस्पतालों से रानी का इलाज करवाया, सभी डाक्टर उसके गर्भ में इन्फैक्शन बता देते तथा दवा-दारू शुरू कर देते, परन्तु आराम कहीं से भी नहीं आ रहा था।

मीना को जब डाक्टरी इलाज से आराम नहीं आ रहा था तो घर वाले आसपास के कुछ बाबा के पास पुच्छा लेने के लिए चले गए। उस बाबा को राकेश के चाचा व चाची की कई वर्ष पहले हुई दर्दनाक मौत के बारे में पता था। अतः उस बाबा ने मीना पर उनके चाचा व चाची की प्रेतात्माओं का असर बता दिया। उनके गांव वालों को तथा उनके सभी रिश्तेदारों को भी राकेश के चाचा व चाची की दर्दनाक मौत के बारे में पता था। अतः उनका कोई भी रिश्तेदार जब उनके घर में आता तो वे आपस में संजय व उसकी पत्नी की मृत्यु के बारे में बातें करते रहते। अब तक मीना को भी उनके चाचा व चाची की मृत्यु के बारे में सब कुछ पता चल चुका था। अतः उसके अवचेतन मन में उनके चाचा संजय की प्रेतात्मा का मनोभ्रम पूरी तरह से घर कर गया। अतः अब जब भी उसके मन पर किसी प्रकार का बोझ पड़ जाता तो वह संजय के रूप में आवाज बदल कर बातें करना शुरू कर देती।

वास्तव में राकेश के चाचा संजय की जब शादी हुई तो उन दोनों पति-पत्नी की आयु थोड़ी कम ही थी। दोनों परिवारों ने आपसी सहमति से यह तय करके ..कि उनका मुकलावा एक-दो साल

बाद में हो जाएगा, उनकी शादी करवा दी थी। संजय का ससुर अत्यधिक अंधविश्वासी एवं जिद्दी व्यक्ति था। उनकी शादी को दो वर्ष बीत चुके थे, लड़की का मुकलावा भेजने का समय आ चुका था। इसी दौरान कोई ज्योतिषी एक दिन उनके घर में आ गया। संजय के ससुर ने अपना तथा लड़की का हाथ उस ज्योतिषी को दिखाया तथा लड़की के मुकलावे का शुभ मुहूर्त बताने के लिए उससे प्रार्थना की। हाथ देखकर ज्योतिषी ने परम्पराओं का हवाला दे कर एक वर्ष ठहर कर उसका मुकलावा भेजने की बात कह दी। साथ ही यह डर भी बैठा दिया कि यदि एक वर्ष से पहले लड़की का मुकलावा भेजा तो वह ससुराल में जाते ही विधवा हो जाएगी।

अब जब संजय के घर वालों ने उसके ससुराल वालों से मुकलावा भेजने की प्रार्थना की तो उसके ससुर ने परम्पराओं का हवाला देकर एक वर्ष तक लड़की का मुकलावा न भेजने का आदेश सुना दिया। बाद में कई बार पंचायतें भी हुई परन्तु वह अपनी जिद्द पर अड़ा ही रहा। इसी दौरान संजय के मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया और वह पूरी तरह से भक्ति भाव में डूब गया। अब वह घरेलू एवं सामाजिक कार्यों के प्रति पूरी तरह से उदासीन हो गया तथा सारा-सारा दिन मंदिर में बैठ कर पूजा-पाठ करता रहता। धीरे-धीरे उसके मन में आलौकिक शक्तियों का स्वामी होने का भ्रम भी बैठता चला गया। ऐसी दशा में उसने अपनी आलौकिक शक्तियों का बखान करते हुए कई लेख भी लिख डाले तथा बाद में उन लेखों को छपवा कर अपनी अमूल्य सम्पति के तौर पर उन्हें कपड़ों में बांध कर संभाल कर रखने लग गया।

इसी बीच एक वर्ष बीतने पर उसके ससुराल वालों ने उसकी पत्नी का मुकलावा भी भेज दिया, परन्तु अब तक वह इस दुनियादारी से कोसों दूर जा चुका था। अब वह अपनी पत्नी के साथ बिल्कुल भी बातचीत नहीं करता था। उसकी पत्नी घर में रहती थी, परन्तु वह दिन-रात मंदिर में ही पड़ा रहता था। उसकी यह हालत देखकर उसके घर वालों के लिए एक नई मुसीबत खड़ी हो गई थी। काफी समय तक इसी प्रकार चलता रहा। किसी भी तरह से वह घर में रहकर अपनी पत्नी के साथ बोलने के तैयार नहीं हो रहा था। फिर घर वालों तथा रिश्तेदारों के दबाव में वह घर में अपनी पत्नी के साथ रहने के लिए सहमत हो गया।

अब वह घर में आने तो लग गया, परन्तु खुल कर बातचीत किसी के साथ भी नहीं करता था। अचानक एक दिन जब घर वाले प्रातःकाल को सो कर उठे तो उन्होंने देखा कि संजय के कमरे का दरवाजा खुला हुआ था और उसकी पत्नी फर्श पर मृत पड़ी हुई थी तथा उसके शरीर के साथ बिजली की तारें लगी हुई थी। उससे साफ था कि उसे बिजली लगाकर मारा गया है। संजय का कहीं अता-पता नहीं था। जब वे उसे ढूंढते हुए मंदिर में गए तो पाया कि मंदिर के अंदर संजय मृत पड़ा था। उसके हाथ में तथा मुंह में कोई जहरीला पदार्थ लगा हुआ था। पुलिस की कार्रवाई में भी यह साफ हो गया कि संजय ने पहले तो अपनी पत्नी को बिजली की तार लगाकर मारा है तथा बाद में मंदिर में जाकर जहरीला पदार्थ खाकर आत्महत्या कर ली थी।

अब यदि संजय एवं उसकी पत्नी की शादी पूरी तरह से जवान होने पर की जाती तो एक या दो साल बाद मुकलावा भेजने की नौबत ही न आती अथवा यदि संजय का ससुर ज्योतिषी का मूर्खतापूर्ण कहा न मानकर अनुचित परम्पराओं में न फंसता तथा सही समय पर अपनी लड़की का मुकलावा भेज देता तो संजय भी एक सम्मानपूर्ण गृहस्थ जीवन व्यतीत करता तथा व्यर्थ के पूजा पाठ में न फंसकर पागलपन की हद तक न जा पहुंचता।

हमारे समाज में एक अंधविश्वास यह भी प्रचलित है कि यदि किसी की असामयिक मृत्यु हो जाए तो उसकी कथित आत्मा की मुक्ति नहीं होती तथ वह प्रेत योनि में चला जाता है और प्रेतात्मा के रूप में भटकता रहता है। इन अंधविश्वासपूर्ण बातों को फैलाने में छोटे से लेकर बड़े-बड़े बाबा, संत-महंत, मुल्ला-मौलवी, तांत्रिक-मांत्रिक, कथावाचक तथा ज्योतिष लोग मुख्य तौर पर जिम्मेदार हैं।

संजय व उसकी पत्नी की अकाल मृत्यु का सारे गांव एवं आसपास को पता था। प्रत्येक महिला मातृत्व सुख प्राप्त करना चाहती है। चिकित्सीय मजबूरी के कारण मीना द्वारा एक बार गर्भपात करवाने के बाद किसी भी कारण से गर्भ न ठहरने से मानसिक उलझन आ जाना स्वाभाविक सी बात है। इस उलझी हुई मानसिकता के चलते व किसी बाबा ने यह बता दिया कि इसके ऊपर संजय व उसकी पत्नी की प्रेतात्मा का साया है तो मीना का मानसिक तौर पर कुंठित हो जाना साधारण सी बात है। फिर ज्यों-ज्यों वे एक के बाद दूसरे बाबा के पास जाते गए तो यह अंधविश्वास और पक्का होता गया और मीना पूरी तरह से मनोरोगी होती चली गई।

यदि सही समय पर मीना को वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार उचित मनोवैज्ञानिक मार्गदर्शन न मिलता तो पता नहीं उसका भी क्या हाल हो गया होता

नोट : *यह एक सत्य घटना है, गोपनीयता रखने हेतु पात्रों के नाम बदल दिए गए हैं।* ★★

कॉमरेड गोविन्द पानसरे को 'तकशील सोसायटी हरियाणा' की तरफ से आदरांजलि

16 फरवरी, 2015 को कोल्हापुर में फासीवादी गुण्डा तत्वों ने कामरेड गोविन्द पंसारे व उनकी पत्नी पर जानलेवा हमला किया जिसमें वे बुरी तरह से घायल हो गये और दिनांक 20 फरवरी, 2015 को कॉमरेड गोविन्द पानसरे की मुम्बई में मृत्यु हो गई। कॉ. पानसरे का जाना देश के जनवादी व तर्कशील आन्दोलनों के लिए एक बड़ी क्षति हैं। कॉ. पानसरे ने महाराष्ट्र की जनता के बीच जनवादी अधिकारों के लिये लड़ाई के साथ-साथ अधविश्वासों के खिलाफ भी लगातार तार्किक विचारों का प्रचार-प्रसार किया। उनकी सक्रियता ही फासीवादी ताकतों की आंख की किरकिरी बनी हुई थी। डेढ़ साल पहले अन्धश्रद्धा निर्मूलन समिति के डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर की भी इसी तरह से हत्या कर दी गई थी। जांच की तमाम दिखावटों के बावजूद आज तक उनके हत्यारे पकड़े नहीं गए हैं। कॉ. पानसरे के केस में जिस ढंग से जांच की जा रहीं है, उससे उसके परिणाम क्या होगा इसका अन्दाजा लगाया जा सकता है।

पहले कॉ. दाभोलकर और अब कॉ. पानसरे की हत्या ने एक बार फिर से सिद्ध कर दिया है कि फासीवादी ताकतों का असली मुकाबला इस देश के मजदूर आन्दोलन. छात्र-युवा आन्दोलन को अपनी ताकत के दम पर सड़कों पर निकल कर करना होगा। निश्चित रूप से कोर्ट-कचहरी की लड़ाई भी लड़ी जानी चाहिए परन्तु 67 साल के इतिहास ने यह दिखा दिया है कि फासीवाद के विरूद्ध कोर्ट-कचहरी और अदालतों की लड़ाई से काम नही चल सकता क्योंकि उसकी अपनी सीमाएं हैं। संवैधानिक दायरे के भीतर मौजूद जनवादी 'स्पेस' का भी हमें अधिकतम् इस्तेमाल करना होगा। परन्तु यह जान लो कि यही मात्र पर्याप्त नहीं है।

आज दाभोलकर व कॉ पानसरे की मौत पर सिर्फ अफसोस जताने से काम नहीं चलेगा। बल्कि उनके जुझारू जीवन से प्रेरणा व ताकत लेकर व उनकी शहादत से सीख लेकर हमें फासीवादी गुण्डा गिरोहों के खिलाफ लम्बी लड़ाई की तैयारी करनी होगी।

कॉमरेड पानसरे की शहादत को लाल सलाम! उठो संघर्षशील मजदूरों और तर्कशील साथियो! आगे आओ, और लड़कर नये समाज का निर्माण करो।

फासीवाद का एक इलाज, इंकलाब जिन्दाबाद!

मैं तर्कशील कैसे बना

मेरा जन्म हरियाणा राज्य के हिसार जिले के बीड़ फार्म हांसी नाम के गांव में एक साधारण मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। परिवार में माता-पिता, दो बहनें व दो भाईयों सहित छह सदस्य थे। परिवार के लगभग सभी सदस्य अंधविश्वासी थे। प्रत्येक अमावस्या व प्रत्येक दशमी को पूजा-अर्चना की जाती थी। पिता जी पहले खेती करते थे। बाद में सरकारी नौकरी में लग गए। सरकारी नौकरी होने के कारण उनकी बदली इधर-उधर होती रहती थी और हमारा परिवार भी उनके साथ जाता था। इसी प्रकार जब अमावस्या के दिन घर पर अमावस्या पूजन की तैयारी की जा रही थी। जब पिता जी ने पूजा के सामान के लिए घर वालों से पूछताछ की तो घर वालों ने कहा कि सभी सामान पूरा है और पूजा की तैयारी पूरी हो गई, लेकिन यह क्या इधर पूजा शुरू हुई, उधर पिता जी को उल्टी दस्त शुरू हो गए। जब मैंने माता जी से इस बारे में पूछा तो माता जी ने मुझे संतुष्ट करने के लिए कहा, बेटा शायद हमसे कुछ गलती हो गई है, लेकिन तू ऐसी बकवास मत किया कर। नहीं तो कोई अनहोनी हो सकती है, लेकिन यह सिलसिला यहीं पर नहीं रूका रहा और दशमी के दिन भी जारी रहा। जब कई बार ऐसा हुआ तो मेरी माता जी के अंधविश्वासी मन ने घर से बाहर स्वामी तांत्रिकों के पास इसके इलाज के लिए कदम बढ़ाने शुरू कर दिए। मेरी माता जी ने जब एक ब्राह्मण से इस बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि आपके पितर नाराज हैं, तो उन्होंने कहा कि इसका इलाज केवल यही है कि आप आने वाली अमावस्या को 5 ब्राह्मण कन्याओं व दशमी के दिन 5 बच्चों सहित एक ब्राह्मण को खाना खिलाना होगा। जब अमावस्या तथा दशमी के दिन ब्राह्मण के आदेशानुसार सब कार्य किया गया, लेकिन परिणाम वही ढाक के तीन पात ही रहा और यह देखकर मेरी माता जी के सब्र का बांध टूट गया और उन्होंने पूजा के सारे सामान को बाहर गली में फैंक दिया और अपने पैरों से धोक के दीए को बिल्कुल मसल दिया। जब जाकर उन्हें कुछ संतोष हुआ, लेकिन इन दोनों ही घटनाओं की मुख्य वजह पिता जी का अधिक मात्रा में शराब पी लेना था। धीरे-धीरे स्थिति सामान्य होती गई और एक बार जब हिसार गए हुए थे तो वहां उन्होंने हिसार सच्चा सौदा वाले महाराज के प्रवचन सुने और बस धीरे-धीरे उसी के होकर रह गए और नाम धारण कर लिया। फिर धीरे-धीरे हमारा सारा परिवार भी सत्संग से जुड़ता चला गया। मैं भी इन अंधविश्वासों की दल दल में धंसता चला गया। मैं कभी भी इनके खंडन की कल्पना भी नहीं कर सका, लेकिन दूसरी घटना जो पड़ौस में घटित हुई, जिसने मुझे कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया। हुआ यूं कि पड़ौस में एक लड़की जोकि मानसिक रोग से ग्रस्त थी। उसके माता-पिता उसके ओपरी-पराई की कसर बताते हुए कुछ जरूरी सामान (एक कोली हांडी, बालू, रेता, ढक्कन) आदि मंगवाया। फिर उसने हांडी में बालू रेत डाल कर उसको ऊपर से बंद करके चूल्हे पर रखकर उसके नीचे आग जलानी शुरू कर दी, तो तांत्रिक ने परिवार के सदस्यों को बाहर बैठने के लिए कहा ऐसा इसलिए था कि कहीं जिन्न लड़की में से निकल कर जब हांडी में प्रवेश करे, तो परिवार के किसी

दूसरे सदस्य पर उसका प्रकोप न पड़े और वह भी जिन्न बाधा से ग्रस्त हो जाए। जब परिवार के सभी सदस्य बाहर चले गए, तो तांत्रिक ने हांडी में एक विशेष जानवर झापा को डाल दिया और हांडी को फिर बंद कर दिया (अब मैं पहले आपको झापा के बारे में बताना चाहता हूं।)

झापा एक ऐसा जानवर है, जो खेतों में भूमि के अंदर बिल बनाकर रहता है। इसके शरीर के ऊपर कांटे से होते हैं। यह अपनी रक्षा कछुए की भांति अपने शरीर को इक्ट्ठा करके करता है। इसका मुंह कान कुत्ते की भांति और चार पांव होते हैं। जब यह किसी प्रकार का संकट महसूस करता है तो बच्चे की भांति रोने लगता है। देखने वाले सोचते हैं कि शायद कोई बच्चा रो रहा है। इसी प्रकार गर्म रेत जब झापा के पैरों को सेंक पहुंचाने लगी तो वह बच्चे की भांति रोने लगा। गांव वाले इस बात से अन्जान होने के कारण इसे जिन्न ही समझ रहे थे, लेकिन जब यह आवाज गली से गुजर रहे एक व्यक्ति ने सुनी तो वह वहां पर आया और तांत्रिक से इस बारे में पूछा तो तांत्रिक ने उसे जिन्न बताया और कहा कि यदि तुम बीच में बाधा पैदा करोगे तो वह तुम्हें भी नुक्सान पहुंचा सकता है, पर वह व्यक्ति की तांत्रिक की सारी चालाकी समझ चुका था। धीरे-धीरे उसने वहां खड़े सभी लोगों को हांडी खोल कर दिखाई और तांत्रिक की सच्चाई बताई और उसी बात ने मेरे मन व दिमाग को कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया। थोड़े दिनों बाद मेरे पिता जी की बदली सनियाना हो गई और हम स्थाई रूप से सनियाना आकर बस गए। जिंदगी धीरे-धीरे बीतती जा रही थी और मुझे अपनी तार्किक जिज्ञासा शांत करने के लिए एक ऐसे मार्गदर्शक की तलाश थी जो मुझे अच्छी तरह से अंधविश्वास से निकालने में मेरी मदद कर सक। जल्दी ही मेरी यह इच्छा पूरी हुई और मुझे मार्गदर्शन दिया श्री फरियाद सिंह ने जो कुछ दिन पहले ही तर्कशील सोसायटी हरियाणा की भूना इकाई में सनियाना केस के बाद जुड़े थे। इसके बाद मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा और धीरे-धीरे तर्कशीलता की सीढ़ियों पर चढ़ता चला गया। सनियाना व कलायत में आयोजित कार्यक्रमों को देखकर मेरा मनोबल बढ़ता गया और मैं अंधविश्वास के चक्रव्यूह से बाहर निकलता गया। आज मैं पूरी तरह से तर्कशील बन गया हूं और हर प्रकार के तर्क-वितर्क करके लोगों को अंधविश्वासी घेरों से बाहर निकालने की कोशिश करता हूं। अब मैं तो सनियाना में लगने वाले मानसिक रोगियों के कैंप में उनका इलाज भी अपने साथियों के साथ मिलजुल कर करता हूं। अब मुझे मेरी जिंदगी पहले की अपेक्षा बहुत अच्छी लगती है। धीरे-धीरे मेरा परिवार भी अंधविश्वास को त्याग कर वैज्ञानिक चेतना की ओर बढ़ रहा है। मुझे विश्वास है कि तर्कशील सोसायटी हरियाणा रजि० व इसकी इकाईयां जिस तरह से समाज से अंधविश्वास मिटाकर वैज्ञानिक चेतना फैलाकर कर लोगों कर लोगों को जागृत कर रहे हैं, तो वह दिन दूर नहीं जब हमारे समाज में अंधविश्वास नाम की कोई चीज नहीं रह जाएगी। आज मैं एक तर्कशील कार्यकर्त्ता के रूप में तर्कशील सोसायटी हरियाणा की भूना इकाई मे तन-मन-धन से सहयोग करके अंधविश्वास फैलाने वाले लोगों के खिलाफ लड़ रही तर्कशील सोसायटी, हरियाणा का साथ देकर समाज के अन्धविश्वास समाप्त करने की कोशिश कर रहा हूं।

वेद प्रकाश तर्कशील सनियाना
तर्कशील सोसायटी हरियाणा
इकाई भूना (फतेहाबाद)

भारत में नकली दवाओं का कारोबार एवं सरकारी तंत्र की उदासीनता

–अकेश कुमार बरनाला

भारत भर में नकली दवाओं के कारोबार के कारण बेगुनाहों की मौत के मामले लगातार सामने आ रहे हैं, परन्तु सरकारी तंत्र केवल खानापूर्ति के अलावा कुछ नहीं करता और ज्यादा हैरानी तो तब होती है, जब नकली दवाएं बनाने वाली कम्पनी को ही उत्कृष्ठ दवा बनाने वाले का अवार्ड दिया जाता है। शायद यह अवार्ड का ही नतीजा है कि अवार्ड मिलने से कुछ महीने बाद ही इसी कम्पनी की नकली दवा के कारण कितने बेगुनाहों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है। इसके साथ सरकारी तंत्र पर भी बड़ा सवाल उठता है कि उसने कम्पनी को जो अवार्ड दिया था, वह सही दिया था या फिर वह भी भ्रष्टाचारी तंत्र का एक हिस्सा था। सरकार की तरफ से कम्पनी के मालिकों के साथ-साथ ऐसी कम्पनियों को अवार्ड देने वालों पर भी कार्यवाही की जानी चाहिए। दुनियाभर में नकली दवाओं के खतरनाक नतीजों के सामने आने के बावजूद यह धंधा लगातार बड़े लाभ वाले कारोबार का केंद्र बना हुआ है। आमतौर पर यह नकली दवाएं बीमारी पर कोई प्रभाव नहीं करती और कई जानलेवा भी साबित होती हैं। नकली दवा और डाक्टर की लापरवाही के कारण ही छत्तीसगढ़ के नसबंदी कैंप में इतना बड़ा हादसा हो गया।

छत्तीसगढ़ के नसबंदी कैंप में हुए हादसे ने यह साबित कर दिया है कि नकली और घटिया दवाओं के कारण किस तरह मनुष्य की जान के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है और सरकारी तंत्र लोगों की जान चले जाने के बाद ही कुछ दिन के लिए हरकत में आता है और फिर उसी तरह नकली दवाओं का धंधा ज़ोरों के साथ चल पड़ता है। छत्तीसगढ़ के नसबंदी कैंप के मामले में जहां दवा कम्पनी की लापरवाही सामने आती है, वहीं स्वास्थ्य विभाग भी जांच के घेरे में आता है कि किसी भी दवा का बिना जांच किए पूरा का पूरा बैच मार्किट में बिकने के लिए कैसे चला जाता है? नकली दवाओं की जांच करने और घटिया दवा की बिक्री और मार्कीटिंग रोकने के लिए बड़े सरकारी तंत्र होने के बावजूद ऐसी घटनाओं का होना समूची स्वास्थ्य प्रणाली पर प्रश्नचिन्ह लगाता है।

सैंट्रल ड्रग स्टैंडर्ड कंट्रोल आर्गेनाईजेशन की तरफ से कई दवाओं के साल्ट बैन होने के बावजूद वह खुलेआम मार्किट में बिक रहे हैं। साधारण जुकाम के लिए दवाओं में इस्तेमाल किए जाते साल्ट पीपीए के बैन होने के बावजूद कई नामी कम्पनियों की तरफ से यह साल्ट अपनी दवाओं में इस्तेमाल किया जा रहा है। सैंट्रल ड्रग स्टैंडर्ड कंट्रोल आर्गेनाईजेशन की तरफ से हर महीने अपनी वैबसाईट पर नकली, मिलावटी और घटिया दवाओं की लिस्ट डाली जाती है, परन्तु इस लिस्ट में दवा का नाम न डाल कर साल्ट, उसका कम्बीनेशन या मात्रा ही लिखा जाता है, जोकि आम व्यक्ति की समझ से परे होता है। स्वास्थ्य विभाग की ओर से समाचार पत्रों या अन्य किसी भी माध्यम के द्वारा लोगों को इन घटिया दवाओं के प्रति जागरूक करने के लिए भी कोई प्रयास नहीं किया जाता। जिससे इनको रोकने वाले विभाग के ही कई भ्रष्ट अधिकारियों की शह पर यह दवाएं बाजार में बिकती रहती हैं और जनता के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ होता रहता है।

दवाओं के कई साल्ट अकेले और कई कम्बीनेशन में बैन होते हैं जैसे कि फैनफलूरामाईन

और डैकसफनफलूरामाईन मोटापे के इलाज के लिए बनती दवाओं में इस साल्ट का प्रयोग कई कम्पनियां करती हैं और पतला करने वाले कई सैंटरों में इसका प्रयोग किया जाता है, परन्तु इसके साथ दिल पर बुरा प्रभाव पड़ता है और लंबे समय तक प्रयोग करने से व्यक्ति की मौत भी हो सकती है। इसी तरह वजन घटाने की दवाओं में इस्तेमाल होने वाला साल्ट रिमोनाबैंट दिमाग पर बुरा प्रभाव डालता है और अवसाद का कारण बनता है और सीबुट्रामाईन दिल पर बुरा प्रभाव डालता है। ऐसे और भी कितने साल्ट हैं जिनके प्रयोग पर प्रतिबंध है, परन्तु कई ऐसी प्रतिबंधित दवाएं भी हैं, जोकि विदेशो में प्रतिबंधित हैं। इन प्रतिबंधित दवाओं के घातक नतीजे बताए गए हैं परन्तु भारत में आसानी के साथ यह दवाएं मिल जाती हैं। भारत सरकार की तरफ से इन पर किसी तरह का प्रतिबंध न होने के कारण कई डाक्टर यह दवाएं मरीजों को लेने की सलाह देते हैं। जो दवाएं बाहर के देशों में प्रतिबंधित हैं, परन्तु फिर भी भारत में आसानी के साथ बिक रही हैं। यहां यह सवाल खड़ा होता है कि उन देशों की सरकारों की तरफ से जो दवाएं प्रतिबंधित की गई हैं, क्या वहां जांच करने वाली लैब गलत है या फिर भारत की जांच करने वाली लैब सही है। यह तो अब सरकार ने ही तय करना है।

आज के महंगाई के दौर में इलाज करवाना बहुत महंगा हो चुका है। एक तो डाक्टरों की भारी भरकम फीसें और फिर महंगी दवाएं। इस पर भी कई बार छोटी सी तकलीफ़ पर भी कई-कई दिन दवा लेने पर भी बीमारी दूर नहीं होती उल्टा बढ़ जाती है। कई मामलों में इसका कारण दवाओं का प्रभावी न होना या नकली होना ही होता है। इन दवाओं में कई बार चूना पाउडर, चारकोल आदि मिला होता है और कई बार साधारण पाउडर की गोलियां बनाकर बड़ी कम्पनियों के नाम से बाजार में बेची जाती हैं।

सरकारी रिपोर्ट भी इसका खुलासा करती है। हैल्थ मनीस्टरीज सैंट्रल ड्रगज़ स्टैंडर्ड कंट्रोल आर्गेनाईजेशन (सीडीएससीओ) की तरफ से जुलाई 2014 में भारत के अस्पतालों और दवाओं की दुकानों में बेची जाने वाली 21 दवाओं को निर्धारित मापक से निचले स्तर का पाया गया अर्थात् यह दवाएं घटिया स्तर की थी। इसी तरह अगस्त में 22 दवाएं घटिया थीं। यह सितम्बर में बढ़ कर 45 हो गई। यह सैंपलभारत के उत्तरी, पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी सभी ही जोन में से टैस्ट किए गए थे। रिपोर्ट से पता चलता है कि पैरोसिटामोल, इबूपरोफिन जैसी आम दवा और कई ऐंटीबाओटिक दवाएं जोकि आम ही बिना डाक्टर की पर्ची के भी आसानी से उपलब्ध हैं, वह भी घटिया स्तर की हो सकती हैं। ब्लड प्रेशर, डायबिटीज आदि के लिए जाने वाली कुछ दवाओं को भी सरकार की तरफ से हाई अर्ल्ट पर रखा गया है।

नकली और घटिया दवाओं के कारोबार में होने वाली असीमित कमाई का ही नतीजा है कि कई दवाओं के वितरकों ने अब अपनी जैनरिक दवाएं तैयार करवानी शुरू कर दी हैं। औद्योगिक संगठन ऐसोचैम की तरफ से जारी किए गए एक अध्ययन पत्र में यह बताया गया था कि देश में नकली दवाओं का कारोबार लगातार बढ़ता जा रहा है। इस समय देश में दवाओं का कुल कारोबार 14-17 अरब डालर का है, जिसमें सवा चार अरब डालर का हिस्सा नकली दवाओं का है और इसमें प्रतिवर्ष 25 प्रतिशत की दर के साथ बढ़ौतरी हो रही है और इस हिसाब के साथ 2017 तक यह नकली दवाओं का कारोबार 10 अरब डालर के आंकड़े को पार कर जाएगा। ऐसोचैम के मुताबिक भारत में बिक रही 25 प्रतिशत दवाएं या तो नकली हैं या घटिया स्तर की हैं। नकली दवाओं के कारोबार के फैलने का बड़ा कारण ड्रग इंस्पैक्टरों की कमी, प्रयोगशालाओं की कमी और प्रभावी नियमों की कमी है। ऐसोचैम के मुताबिक दिल्ली नकली दवाएं बनाने वालों का

मनपसंद गढ़ है और इसके बाद दिल्ली के निकट गाजियाबाद, भिवाड़ी, सोनीपत, हिसार और पंजाब में यह कम्पनियां अधिक फल फूल रही हैं। नकली दवाओं के कारोबारी न सिर्फ़ भारत अपितु विश्व को नकली दवाओं के बड़े सप्लायर बन रहे हैं। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार भी दुनिया भर में 75 प्रतिशत नकली दवाओं का ठिकाना भारत में है। पिछले साल यूएस के लिए दवाएं बनाने वाली एक बड़ी कम्पनी को घटिया और मिलावटी दवाएं बनाने के कारण एफडीए की तरफ से बड़ा जुर्माना लाया गया और उसकी दवाओं का आयात भी बंद कर दिया गया, जिस कारण उस कम्पनी को बंद करना पड़ा। यूएस में तो निगरानी के लिए एफडीए जैसे संगठन होने के कारण सुरक्षा कदम उठाए जाते हैं, परन्तु भारत का तंत्र तो ऐसा मज़बूत नहीं तो फिर ऐसी कम्पनियां भारत में क्या नहीं करती होंगी, परन्तु इन रिपोर्टों के बावजूद भारत की हैल्थ मनिस्टरी का यह मानना है कि मीडिया की तरफ से स्थिति को बड़ा कर पेश किया जाता है, जबकि स्थिति इतनी ख़राब नहीं है, जबकि यह बात तो अक्सर ही सामने आती रहती है कि जो कोई दवाएं विदेशों में प्रतिबंध हैं, वह भारत के बाज़ार में आम मिल जाती हैं।

***पृष्ठ का शेष......*(निरीश्वरवाद की...)**

9. हरबर्ट स्पेंसर (1820-1902) - अंग्रेज दार्शनिक, ससमाज शास्त्री, जीव विज्ञालनी। 10. फ्रेडिरिक नीट्से (1844-1900) - जर्मन दार्शनिक, जिसकी पुस्तक 'शुभ और अशुभ से परे' ने तहलका मचाया। 'ईश्वर मर गया' उसका प्रसिद्ध वाक्य है।

11. जान डेवेई (1859-1992) - अमेरिकी मनोविज्ञानी, शिक्षा विज्ञानी, प्रेग्मेटिज्म के प्रर्वतकों में से एक। 12.जार्ज सान्तमाना (1863-1952) - प्रकृतिवादी और प्रेग्मेटिक परम्परा का दार्शनिक। 'कैथोलिक नास्तिक'

13.बर्टेंड रसेल (1872-1970) - ब्रिटिश तर्कशास्त्री, गणितज्ञ, इतिहासज्ञ, दार्शनिकौर शांतियोद्धा। गणित और विश्व शांति के लिए दुहरे नोबेल पुरस्कार का विजेता। 14. ज्यां पाल सार्त्र (1905-1980) - फ्रांसीसी लेखक और वामपंथी आंदोलक, निरीश्वर अस्तित्ववादी। बारह वर्ष की उम्र में ही नास्तिक हो गया। उसे 1964 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार दिया गया पर उसने यह कहते हुए उसे लेने से इंकार कर दिया कि वह हमेशा सांस्थानिक सम्मानों से दूर रहा है और कि वह यह पुरस्कार लेकर पूर्व और पश्चिम में से पश्चिम का पक्ष नहीं लेना चाहता। सार्त्र नोबेल पुरस्कार को ठुकराने वाला संसार का पहला और अकेला व्यक्ति है। 15.सिमोन द बउआ (1908-86) - फ्रांसीसी लेखिका और अस्तित्ववादी, सार्त्र की मित्र और संगिनी। स्त्री पर और वृद्धावस्था पर महत्वपूर्ण विमर्शात्मक पुस्तकें लिखी। 16.पॉल एडवर्ड्स (1923-2004) - आस्ट्रेलियाई-अमेरिकन नीति दार्शनिक, 'एन्साइक्लोपीडिया ऑफ फिलास्फी' का सम्पादक। 17.पॉलकर्ज (1926-2012) - अमेरिकी मानववादी दार्शनिक, लेखक, प्रकाशक और अनेक मानववादी संस्थाओं के संस्थापक। अंतर्राष्ट्रीय नैतिक मानववादी संघ के 1986-94 तक सह अध्यक्ष रहे। 'प्रोमेथ्यूज बुक्स' प्रकाशन से हजारों मानववादी पुस्तकें प्रकाशित की।

पाश्चात्य जगत के प्राख्यात जीवित नास्तिक विचारकों में से हम डेविड सिल्वरमॅन, पॉल जाकरी, पाल टायनबी, अयान हिरसी अलजी, फिलिप पुलमॅन, जेनिफर माइकेल हॅच, रिचर्ड केरियर, स्टीवन पिंकर, अलेक्जेंडर रोजेनबर्ग, स्टीफॅन हाकिंग, स्टीफन वेनबर्ग, रिचर्ड डाकिंस और पेटर सिंगर के नाम गर्व से ले सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र - 9019303518

भारत का राष्ट्र–संविधान और धर्मान्तरण (घर वापसी)

— राम सिंह 'प्रेमी'

यों तो पिछले कई दशकों से कट्टर हिन्दूत्ववादी मानसिकता के लोग भारत में हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति तथा हिन्दुत्व का प्रचार–प्रसार करते रहे हैं, किंतु जब से केंद्र में आर.एस.एस द्वारा प्रशिक्षित नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की बहुमत वाली सरकार बनी है, तब से सभी हिन्दुत्ववादी संगठनों के नेताओं ने भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करने का युद्ध स्तर पर विशेष अभियान चला रखा है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघ चालक मोहन भागवत और विहिप के नेता अशोक सिंघल ने तो यहां तक ऐलान कर दिया कि वे भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करके ही दम लेंगे। कुछ नेता राम मंदिर निर्माण की जोर–शोर से वकालत कर रहे हैं, तो कुछ नेता विवादास्पद बयानों से सारे देश में हंगामा मचाकर सड़क से लेकर सदनों तक लोक व्यवस्था को अराजकता के रूप में बदल कर अपनी संकुचित मानसिकता को उजागर करने में लगे हैं।

इसी बीच इन हिन्दुत्ववादी लोगों ने धर्मांतरण का अभियान चलाकर गरीब, असहाय तथा वंचित मुसलमानों को हिन्दू बनाने का ठेका अपने हाथ में ले लिया और कहा कि यह धर्मांतरण नहीं घर वापसी है, जो आवश्यक है, अच्छा कार्य है, क्योंकि यह घर वापसी उन लोगों की है, जो पहले कभी हिन्दू रहे।

शासते येन इति शास्त्रः सूत्र के अनुसार जिससे शासन किया जाता है वही शास्त्र है अर्थात जिस ग्रंथ अथवा शासत्र में लिखित नियमों के अनुसार राष्ट्र का शास्त्र किया जाता है, वह ग्रंथ ही राष्ट्र ग्रंथ अथवा राष्ट्र शास्त्र कहा जाता है। इस आधार पर आज की विषम परिस्थितियों में भारत के राष्ट्र ग्रंथ राष्ट्रीय संविधान में झांक कर समझने की कोशिश करें कि यह हिन्दुओं द्वारा मुसलमानों का धर्मांतरण या घर वापसी कहां तक संगत और न्याय संगत है।

26 जनवरी सन् 1950 से हमारा राष्ट्रीय संविधान भारत को एक सम्प्रभुता सम्पन्न, समाजवादी, धर्म निरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित करता है। सम्प्रभुता का भाव है कि हमें सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त हैं कि हम अपने देश की शासन व्यवस्था स्वयं अपनी सूझबूझ एवं पारस्परिक सहयोग से स्वतंत्रता पूर्वक चलाने में सक्षम हैं। हम परमुखापेक्षी न बनें। समाजवादी शब्द का भाव है कि सभी नागरिकों को समता, समरसता, भाईचारा, समान न्याय, समान सम्मान, समान अधिकार तथा प्रगति के समान अवसर प्राप्त हों। धर्मनिरपेक्ष शब्द का अर्थ है कि देश में सभी धर्मो का बराबर सम्मान तथा सर्वधर्म समभाव हो। शासन की ओर से किसी भी विशेष धर्म को विशेष महत्व न दिया जाए। डा. सुरेन्द्र कुमार शर्मा अज्ञात ने अपने ग्रंथ–क्या बालू की भीत पर खड़ा है हिन्दू धर्म?–में स्पष्ट लिखा है–'धर्म निरपेक्षतावाद एक विशेष प्रकार का मानवतावादी दर्शन है, जो किसी भी धर्म या अध्यात्मवाद का निषेध करते हुए नैतिकता, शिक्षा, राजनीति, प्रशासन, कानून आदि को इन दोनों से पूर्णतः आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देकर उसके वैयक्तिक तथा सामाजिक कल्याण के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। धर्मनिरपेक्षतावाद में ही ईश्वर के नाम पर शपथ लेने की बाध्यता खत्म करके ईश्वर की सत्ता में विश्वास न करने वालों को सत्यनिष्ठा के नाम पर शपथ लेना संभव हो सका। लोकतांत्रिक शब्द का भाव है कि एक व्यक्ति–एक वोट और एक वोट–एक मूल्य तथा सबको सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक

अधिकार बराबर प्राप्त हों।

इसके अतिरिक्त संविधान के अनुच्छेद 15(1) में निर्देश हैं कि राज्य किसी भी नागरिक के विरुद्ध केवल धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान या इनमें से किसी के आधार पर कोई विभेद नहीं करेगा। अनु. 13 (1) तथा (111) में स्पष्ट उल्लेख है कि संविधान के पहले से चले आ रहे रूढ़िगत रीति-रिवाज, कानून या नियम, जो संविधान के विरुद्ध होंगे, सब अवैध होंगे अर्थात् तर्कहीन रूढ़ियां, रीति-रिवाज सब जीरो और संविधान हीरो। धारा 51 (ए) में वैज्ञानिक सोच तथा तर्कसंगत व्यवहार का निर्देश है। संविधान के अनुच्छेद 25 में स्पष्ट लिखा है कि लोक व्यवस्था, सदाचार, स्वास्थ्य तथा सभी व्यक्तियों के अंतःकरण की स्वतंत्रता का और धर्म के अबाध रूप से मानने तथा प्रचार करने का सभी को समान हक होगा। अनुः 29 में अल्पसंख्यकों को विशेष संरक्षण देने की बात स्पष्ट रूप से अंकित है।

अब हम कट्टर हिन्दुत्ववादी मानसिकता के लोगों द्वारा चलाए गए घर वापसी के अभियान पर एक नजर डालने के साथ-साथ हिन्दू धर्म एवं हिन्दू संस्कृति के भीतर भी झांकते चलें। जब तक भारत पराधीन रहा, हिन्दुत्ववादी लोग आत्मवंचना के शिकार रहे। उनकी मान्यता रही कि अन्य देशों के लोग चाहे जितना ज्ञान-विज्ञान में विकास कर लें, किंतु उनके पुरखों के स्तर तक नहीं पहुंच पाएंगे। शायद आज भी वे वही दोहरा रहे हैं। देखिए न-

वे हवाई जहाज के लिए पुष्पक विमान, टेलीविजन के लिए संजय का आख्यान, रेडियो को ग्रंथों में वर्णित आकाशवाणी, मोबाइल को मंत्र शक्ति, टेस्ट ट्यूब बेबी को कुश की उत्पत्ति, शल्य चिकित्सा के लिए गणेश के हाथी का सिर जैसे उदाहरण प्रस्तुत करने में नहीं अघाते। शायद इस भारत की नियति ही ऐसी काल्पनिक कुलांचे भरने की रही है।

आज भारत में खाद्य पदार्थों की कमी, कुपोषण, बेरोजगारी, पर्यावरण प्रदूषण, अशिक्षा, नैतिकता का पतन, भ्रष्टाचार, शोषण, गैर बराबरी, ऊंच नीच, छुआछूत की भावना तथा नारी की अस्मिता पर डाका जैसी मानव जीवन से सीधे संबंध रखने वाली समस्याओं पर तो हिन्दूवादी लोग मौन हैं, किन्तु चौरासी कोसी परिक्रमा, मंदिर निर्माण, वेद मंत्रों का पठन-पाठन, चारों धामों की यात्रा, महाकुंभ, अंधविश्वासी धार्मिक कर्मकांड, धार्मिक ग्रंथों को राष्ट्र ग्रंथ घोषित करना, भागवत तथा रामचरित मानस के पाठों जैसे कार्यों के लिए वे लोग जी जान से जुटे हैं। इसी बीच धर्मांतरण को घर वापसी का जामा पहनाकर उसके लिए अभियान चला रखा है।

वस्तुतः हिन्दू धर्म जैसा कोई धर्म ही नहीं है। हां हिन्दू संस्कृति है जो आचार-विचार, संस्कार और त्यौहार के रूप में भारतीय खून में घुलमिल गई है, जिसे हम ब्राह्मणवाद या ब्राह्मणी संस्कृति कह सकते हैं। यदि चाहें तों इसी को ही हम ब्राह्मण धर्म भी कह सकते हैं जिसको ही लोग हिन्दू धर्म कहते हैं। इस हिन्दू धर्म या ब्राह्मणवाद को ही अर्जक संघ ने एक वृक्ष के प्रतीक से विश्लेषण करने का प्रयास किया है। ब्राह्मणवाद रूपी वृक्ष की जड़ है पुनर्जन्म, भाग्यवाद या प्रारब्ध तना है, वर्ण व्यवस्था उसकी डालें है, जाति-पाति उसके फल हैं। इस हिन्दू धर्म रूपी वृक्ष की जड़ को सींचने और पोषण के लिए ईश्वर, आत्मा में अंधविश्वास तथा चमत्कार के तत्व सतत् सक्रिय रहते हैं। इस हिन्दू धर्म के कारण ही भारत को हजारों वर्षो तक दासता झेलनी पड़ी क्योंकि गैर बराबरी, ऊंच-नीच, छूआछूत, गरीबी और सवर्णो द्वारा अवर्णो का शोषण इस धर्म का मौलिक तत्व है। यह धर्म अल्पजन सुखाये और बहुजन दुःखाय है यानि कुछ लोग सर्वाधिकार सम्पन्न और अधिकांश लागे पूर्णत ः विपन्न तथा शोषित हैं।

ऐसे हिन्दू धर्म से पूर्णतः उत्पीड़ित, अपमानित

तथा अभिशप्त लोग, जिन्होंने सैंकड़ों साल पहले इस्लाम या ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया था, आज अपने-अपने धर्मों में पारस्परिक प्रेम, समता एवं बंधुत्व से रहते चले आ रहे हैं। आज धर्म निरपेक्ष भारत-राष्ट्र की हिन्दुत्ववादी सरकार के शासन में जो कट्टर हिन्दूवादी मानसिकता के लोग धर्मांतरण को घर वापसी कहकर मुसलमानों या ईसाईयों को भय, भ्रम, लोभ अथवा अन्य किसी असंवैधानिक तरीके से पुनः हिन्दू बनाने का अभियान चला रहे हैं, उनको यह स्पष्ट जान लेना चाहिए कि अधिकांश मुसलमान या ईसाई हिन्दू सामाजिक व्यवस्था से ऊब कर स्वेच्छा से मुसलमान या ईसाई बने थे, क्योंकि हिन्दू धर्म में शुद्ध वर्ण के लोगों को इन्सान की बात तो दूर पशु भी गया गुजरा माना जाता है।

यही कारण रहा जब डा. अम्बेडकर के साथ 14 अप्रैल 1956 को 5 लाख से भी अधिक लोगों ने संवैधानिक तरीके से अपने-अपने अंतकरण की स्वतंत्र आवाज पर हिन्दू धर्म को छोड़ कर बौद्ध धम्म, जो मानवतावादी जीवन पद्धति है, को स्वीकार कर लिया था। आज भी भारत में लाखों लोग हिन्दू धर्म की विषमतावादी संकीर्ण मानसिकता की पोगापंथी जंजीरों को तोड़ कर बौद्ध धम्म की मानवतावादी जीवन शैली को अपने आचरण द्वारा स्वीकार कर रहे हैं।

आज संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत जब घर वापसी के नाम पर लूटा हुआ माल वापस लाने की बात करते हैं, तो उनके इस कथन में विधर्मियों के प्रति उनकी क्षुद्र तथा संकीर्ण मानसिकता उजागर होती है। वे जानते हैं कि वे घर वापसी करा रहे हैं। वे सभी हिन्दू धर्म के शुद्र हैं और उन्हें आदमी (इन्सान) कैसे मान लिया जाए। इसके साथ ही जब विहिप नेता अशोक सिंघल कहते हैं कि हमारी संस्कृति और धर्म को कुचला गया और हमें संघर्ष करना पड़ा।........हम अजेय हिन्दू साम्राज्य चाहते हैं। हम दुनिया में धर्मांतरण के लिए बाहर नहीं गए, बल्कि उनका दिल जीतने के लिए गए। (अमर उजाला कानपुर 22/12/14)

शायद विहिप नेता को आज भी वही भ्रम है कि भारत का आम आदमी मेहनतकाश, अर्जक आज भी उनकी झूठ बात को सच मान लेगा। यदि हिन्दुओं द्वारा अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्ष करने की बात है तो हमारा भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत कभी एक राष्ट्र नहीं रहा, कभी हिन्दू राष्ट्र नहीं रहा और न कभी सवर्णो ने (हिन्दुओं ने) बाहरी लोगों को रोकने के लिए संघर्ष ही किया, बल्कि उन्होंने भारत के साथ गद्दारी की, जिसके कारण हिन्दुस्तान परकीयों का गुलाम बना। इसके तत्यों की जानकारी के लिए मेरा लेख-क्या भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करना सभी समस्याओं का हल है? मेरी वेबसाइट डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.एएमबीईडीकेएआरपीआरईएमआई. काम पर पीडीएफ में देखें।

जहां तक हिन्दू धर्म एवं संस्कृति की रक्षा करने की बात है तो जब गुरु गोबिन्द सिंह ने धर्म की रक्षा हेुत लोगों की बलिदानी भावना की परीक्षा लेने के लिए एक महासभा बुलाई। उसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र आए। सभी जातियों तथा सम्प्रदायों के लोगों ने हिस्सा लिया। गुरु गोबिन्द सिंह ने नंगी तलवार लेकर कहा-आज देश-धर्म की रक्षा के लिए दुर्गा देवी ने बलिदान मांगा है, क्या आप में से कोई ऐसा बलिदानी वीर है, जो अपने प्राण दे सकता है। कुछ देर सन्नाटे के बाद 30 वर्षीय दयाराम खत्री (लाहौर) आए। गुरु ने उसे तम्बू के अंदर ले जाकर अपनी तलवार से वार किया। खच्च की ध्वनि के साथ रक्त की धार बाहर निकली। सभी सहम गए। गुरु ने पुनः बाहर आकर एक और सिर की मांग की। इस बार 33 वर्षीय धर्म सिंह जाट (दिल्ली) अपना सिर देने के लिए हंसते हुए बाहर निकले। गुरु ने उन्हें भी तम्बू में ले जाकर तलवार से वार किया। पुनः खच्च के शब्द के साथ खून बहा। लोग आश्चर्य करते रहे। गुरु ने इसी तरह 3 और सिर मांगे तो

क्रमशः 36 वर्षीय मोहकम चंद धोबी, 37 वर्षीय साहब चंद नाई और 38 वर्षीय हिम्मतराय कुम्हार आते रहे और हर बार तलवार के प्रहार से खच्च की ध्वनि के साथ तम्बू के बाहर खून की धार निकलती रही। थोड़ी देर बाद गुरु जी के साथ पांचों वीर बलिदानी तलवार लिए सभी मंच पर आ गए। वास्तविकता यह थी कि गुरु जी ने 5 बकरों के सिर काटे थे। उन्होंने देश के जनमानस के धैर्य और दृढ़ता, देशभक्ति और बलिदान की परीक्षा ली थी। गुरु जी ने मंच से कहा-'राष्ट्र धर्म के लिए पांचों सच्चे बलिदानी हैं। इनका रूपांतरण हो गया है, ये जाति, वर्ण, धर्म से ऊपर इन्सान बन गए हैं। इनमें मानवता के सारे श्रेष्ठतम गुण समा गए हैं, क्योंकि ये इन्सानियत के लिए बलिदान की परीक्षा में 100 प्रतिशत अंक पाकर उत्तीर्ण हो चुके हैं। गुरु जी ने उन्हें पंच प्यारे कहा और वही पांचों भारत के सच्चे सपूत कहलाने के अधिकारी हैं।

अब सवाल उठता है कि वे पंच प्यारे कौन थे? वे पंच प्यारे भारत के वीर सपूत तथाकथित शूद्र वर्ण के भारत के मूल निवासी थे। ऐसे बलिदानी क्षणवर देश-धर्म की आन-बान-शान रखने के लिए कोई भी स्वर्ण हिन्दू (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य) नहीं आया। कारण यही रहा कि हिन्दू समाज कोई समाज नहीं, क्योंकि एक सवर्ण हिन्दू एक अवर्ण हिन्दू से इतना दुराव रखता है जितना एक पशु से भी नहीं रखा जाता। हिन्दू समाज को विभिन्न वर्णों, जातियों एवं सम्प्रदायों का झुंड कह सकते हैं। यदि कोई हिन्दू समाज सुधारक जाति-भेद मिटाने की बात भी करता है तो वह खानपान में भेद करेगा। कच्ची-पक्की रोटी में भेद करेगा, शादी-ब्याह में भेद करेगा, यदि होटल में भेद नहीं करेगा, तो घर में खाने में भेद करेगा। यदि शादी भेद नहीं करेगा तो पति-पत्नी की जातीयता अलग-अलग ही कायम रखेगा। कुछ विशेष अपवादों को छोड़ कर हिन्दू धर्म में यह विषमता मिटना संभव नहीं है।

इसलिए इन कट्टर हिन्दुत्ववादियों को गंभीरता से विचार करना पड़ेगा कि आखिर मुट्ठीभर हमलावरों के आगे हम क्यों घूटने टेकते रहे? हम हजारों साल गुलाम क्यों रहे? हम अपने मंदिरों, मूर्तियों और भगवानों की सुरक्षा क्यों नहीं कर पाए? यहां के बच्चों एवं स्त्रियों को हमलावर क्यों गुलाम बनाकर ले जाते रहे और उन्हें गजनी के बाजारों में पशुओं की तरह बेचते रहे? हम एक समाज के रूप में मोहम्मद बिन कासिम से लेकर अंग्रेजों तक सभी विदेशियों द्वारा क्यों रौंदे जाते रहे और अपमानित किए जाते रहे?

इन सभी प्रश्नों के उत्तर की पृष्ठभूमि में हिन्दू धर्म और हिन्दू धर्म-ग्रंथ है, जो आज भी पूरे हिन्दू समाज में असमानता, छूआछूत, ऊंच-नीच, दासता, फूट, घृणा, अशिक्षा, अन्याय, अवैज्ञानिकता, अंधश्रद्धा, अंधविश्वास, ठगहाई, अत्याचार, अपमान, उत्पीड़न और शोषण के बढ़ावे के लिए ईश्वर, आत्मा, पुनर्जन्म, प्रारब्ध, स्वर्ग-नरक, मोक्ष, वर्ण व्यवस्था, जातिवाद तथा चमत्कार जैसे मनघड़ंत प्रत्ययों का मकड़जाल तैयार किया गया है, जिसके प्रचार-प्रसार के लिए साधु संतों, मंदिरों के पुजारियों, कथावाचकों, उपदेशकों के जत्थे पूर्णकालिक सेवा में लगे हैं तथा सरकारी तंत्र, रेडियो, टेलीविजन एवं मीडिया भी पूरा सहयोग कर रहे हैं। परिणामतः आम आदमी को गुमराह करके उनकी आस्था और श्रद्धा का दोहन करके स्वयं तो मौज मस्ती भोगते हैं किंतु आम आदमी को अभावग्रस्त पशुवत जिंदगी जीने को मजबूर करते हैं। ऐसे हिन्दू धर्म के लिए यही कहा जा सकता है कि-

'कैसा हिन्दू धर्म कि जिसमें इन्सानों से प्यार नहीं है।
जहां विधर्मी, नारि, दलित को जीने का अधिकार नहीं है।'

अमर उजाला कानपुर दिनांक 18/01/15 के अनुसार विहिप नेता तोगड़िया ने केंद्र सरकार को अल्टीमेटम दिया कि या तो सरकार धर्मांतरण पर सख्त प्रतिबंध लगाए अथवा घर वापसी की इजाजत दे। प्रश्न यह उठता है कि जब हमारे राष्ट्र, संविधान

में स्वयं धर्मांतरण पर प्रतिबंध है कि भ्रम, भय, दबाव, लोभ या अन्य किसी असंवैधानिक तरीके से किसी व्यक्ति का धर्मांतरण करना अपराध है, तब फिर नए सख्त कानून की जरूरत किस लिए? शायद इसके पीछे भी उनकी साजिश छिपी है कि संविधान से अलग कानून बनाकर भारत के वंचित, शोषित तथा घृणित जीवन काट रहे अवर्ण हिन्दुओं को हिन्दू धर्म छोड़ कर स्वेच्छा से भी दूसरे किसी धर्म में जाने न दिया जाए।

आज के इस वैज्ञानिक प्रगतिशील युग में हिन्दू धर्म एवं संस्कृति के जीवन मूल्य न तो तर्क की कसौटी पर, न विज्ञान की कसौटी पर और न समय तथा परस्थिति की ही कसौटी पर खरे उतरते हैं, क्योंकि क्या कभी ये हिन्दू नेता उन दलितों, निरीहों, असहायों, शोषितों एवं घृणितों जो अभावग्रस्त जिन्दगी जीते हुए सड़ी-गली गलियों, फुटपाथों और झुग्गी झोपड़ियों में बसते हैं और जिन्हें हिन्दू धर्म के महाजाल में फंसा कर हिन्दू होने पर गर्व करने का लुभावना उद्घोष सुनाया जाता है, को मुड़कर देखने तक की इच्छा होती है? वे बेचारे आर्थिक रूप से तो बीमार हैं ही, सामाजिक अपमानों का भी घूंट पीते-पीते और हिन्दू कहलाते-कहलाते मर जाते हैं। वे 33 करोड़ देवी-देवताओं की मिन्नतें करते, तथाकथित अवतारों, भगवानों तथा झूठे एवं पतित साधू संतों से दया की भीख मांगते, राम-कृष्ण की माला जपते, गंगा नहाते, तीर्थों में जाकर और घरों में दान-दक्षिणा, चढ़ावा चढ़ाते एक दिन अंतिम सांस छोड़ कर इस दुनिया से विदा ले लेते हैं, किंतु उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में कोई बदलाव नहीं आता।

जिस संस्कृति में मेहनतकश अर्जक श्रमशील नीच, अधम, पापी कहलाता है और कामचोर, निकम्मा, मुफतखोर उच्च, पूज्य, पुण्यात्मा कहा जाता है, उस विषमतावादी संस्कृति से पूरे राष्ट्र का क्या, एक छोटे से गांव का भी भला नहीं हो सकता है।

सच यह है कि भारत में रहने वाले जितने भी मुसलमान या ईसाई हैं, उनमें से कुछ अपवादों को छोड़ कर अधिकांश हिन्दू धर्म की रूढ़िवादिता, विषमता, अन्याय, घृणा तथा उत्पीड़न से ऊबकर ही अन्य धर्मों में खप गए। क्या आज के हिन्दू नेता विधर्मियों को हिन्दू बनाने के बाद घर वापसी करके उन्हें आदर, सत्कार, प्रेम, समता, समरसता और बंधुत्व के भाव से पूरे समाज में सदैव स्वीकार करते रहेंगे? क्या हिन्दू नेता घर वापसी के बाद विधर्मियों को मानवीय सम्मान एवं अधिकार दे पाएंगे?

जहां तक घर वापसी की बात है तो किसी एक धर्म (पूजा पद्धति) से दूसरी पूजा पद्धति में आना घर वापसी नहीं कहा जा सकता। सच्चाई यह है कि भारत के मूल निवासी ही भारत के मौलिक मालिक हैं। आर्य भारत के बाहर से आए थे उनका घर भारत नहीं है। जब वे अपने मूल स्थान को भारत से दूर चले जाएंगे, तब वह उनकी असली घर वापसी होगी। किसका मूल स्थान कहां है, इसके लिए बामसेफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष बामन मेश्राम का कथन देखिए जो उन्होंने पूवोत्तर राज्य सिक्किम की राजधानी गंगटोक के पलजोर स्टेडियम में जून 2011 में कहा था-'अमेरिका के उताह विश्वविद्यालय वांशिगटन के माइकल बामशाद द्वारा विशाखापटनम विश्वविद्यालय तथा चेन्नइ विश्वविद्यालय के साथ मानव वंश के बारे में शोध करने वाली भारत की सबसे बड़ी संस्था 'एंथ्रोपालिजिकल सर्वे आफ इंडिया' के तत्वाधान में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र वर्णों की डीएनए टेस्ट करके निष्कर्ष निकाला कि ब्राह्मणों का डीएनए 99.99 प्रतिशत, क्षत्रियों का 99.88 प्रतिशत, वैश्यों का 99.86 प्रतिशत यूरेशियन लोगों से मेल खाता है तथा पिछड़े एवं दलित लगभग 6 हजार जातियों का डीएनए एक-दूसरे से मिला, लेकिन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य से बिल्कुल मेल नहीं खाया। इसके अतिरिक्त भारत की सभी महिलाओं (चारों वर्णों की) का डीएनए समान निकला।

असल बात यह है कि जब तक ईश्वर,

धर्म और धर्म के ठेकेदार रहेंगे, तब तक दंगे फसाद होते रहेंगे, क्योंकि धर्म मानव को मानव से तोड़ता है, जोड़ता नहीं, घृणा पैदा करता है, प्यार नहीं, शत्रुता पैदा करता है मित्रता नहीं। हम धर्म के प्रतीकों से बंधे हैं, धर्म के खूंटों से बंधे हैं, उसकी परिधि से बाहर जाना तो बहुत दूर, जाने की सोच तक नहीं सकते। अतः ऐसे धर्मों को तिलांजलि दिए बिना मानवता खुशहाल नहीं रह सकती। धार्मिक कट्टरता जेहादी जुनून पैदा कर देती है। सभी मानवों का एक धर्म है मानव धर्म जो सहज है, जिसका कोई प्रतीक नहीं जो ऊपर से थोपा जाए। मानव धर्म के पालन बिना हम मानव जिंदा नहीं रहेंगे, किन्तुइन प्रचलित धर्मो का चोला बदल कर भी हम जिंदा रहते हैं उस मानव धर्म के अपनाते ही हम प्रज्ञा, करूणा, संवेदनशीलता, मैत्री, बंधुत्व, समता एवं समरसता का अनुभव करेंगे, जो सचमुच धम्म की जीवन शैली है। चूंकि हम सभी लोग जानते हैं कि हमारा भारत देश विभिन्न प्रांतों, बोलियों, धर्मो, जीवन शैलियों, पर्वो, रीति-रिवाजों तथा मान्यताओं का देश है, इसलिए विविधता में एकता ही भारतीयता की असली पहचान है। यह विविधता में एकता का आदर्श ही हमें प्रेरणा देता है कि हम सब पहले भारतीय हैं, भारत के नागरिक है तथा उसके बाद कुछ और जैसे हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, पारसी, बौद्ध, जैन, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, उत्तर वासी, दक्षिणवासी, हिन्दी भाषी, मराठी भाषी इत्यादि। यह देश किसी एक व्यक्ति की बापौती नहीं है। भारत का बच्चा-बच्चा उतना ही अधिकार रखता है, जितना कि कोई एक व्यक्ति जो पूरे देश के लिए फतवा जारी करने का दुस्साहस कर सकता है।

सबसे दुखद बात तो यह है कि जब पूरे देश में असंवैधानिक (भय, भ्रम, लोभ) ढंग से हिन्दू धर्म में धर्मांतरण करने का हंगामामचा है और गणतंत्र दिवस पर मुख्यातिथि मा. बराक ओबामा ने भी स्पष्ट संकेत किया कि भारत को धार्मिक सहिष्णुता विकसित करनी चाहिए, अन्यथा भारत प्रगति नहीं कर पाएगा, तब भी हमारे प्रधानमंत्री मा. नरेन्द्र मोदी जी की इस विषय पर मौन साधना भंग नहीं हुई। ऐसा प्रतीत होता है कि या तो वे अपनी पुरानी कट्टर हिन्दूवादी मानसिकता के शिकार हैं अथवा वे कट्टर हिन्दूवादी संगठनों को रोक पाने में अपने को असमर्थ पाते हैं। कुछ भी हो, यदि इस दुष्प्रवृति में बदलाव नही आता, तो मा. नरेन्द्र मोदी के उद्घोष 'सबका साथ-सबका विकास' का दिखावा और झूठापन बेनकाब हो जाएगा।

अंततः यही आग्रह है कि जाति-पाति, सामाजिक, अन्याय, धार्मिक, अंधविश्वास, अंधश्रद्धा, क्षेत्रवाद, भाषावाद, लिंगगत भेदभाव तथा राजनीतिक विद्वेष आदि छोड़ना पड़ेगा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना होगा अन्यथा उपर्युक्त कुप्रवृतियां हमारी आजादी के लिए खतरा सिद्ध होंगी। इसलिए यह आवश्यक है कि हम सभी राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक स्वार्थो से ऊपर उठकर विभिन्न मतालम्बियों तथा विचारधाराओं में पारस्परिक सामंजस्य स्थापित करें। हमें हर प्रकार की पृथकतावादी प्रवृतियों को कुचलना होगा तथा धार्मिक एवं ऐतिहासिक पूर्वाग्रहों से जनमानस को मुक्त कराना होगा। भारतीय राष्ट्र संविधान में पूर्ण आस्था एवं विश्वास रखते हुए लोकतांत्रिक मान्यताओं एवं विश्वासों में निष्ठा बढ़ाने हेतु हमें मानवतावादी शिक्षा पद्धति तथा पाठ्यक्रम लाकर लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना होगा। हमें अतीतजीवी नहीं, भविष्योन्मुखी बनना पड़ेगा तथा भारत का भविष्य सुरक्षित, समृद्ध तथा शक्ति सम्पन्न हो सकेगा।

मो; 09450859504, 08574458504

विचार

जो लोग अपने-अपने सम्प्रदायों के गुलाम बने हुए हैं वे केवल वास्तविक ज्ञान से ही खाली नहीं, वे कभी भी सीखने का प्रयत्न नहीं करेंगे।

गेलन (129-199) रोमन लेखक

आईना

बच्चों की खातिर

-बलजीत भारती

वर्ष 2014 के लिए जब नोबल पुरस्कार (शांति) की घोषणा हुई तो यह देखकर बड़ा सुखद लगा कि जिन दो हस्तियों को इस बार के नोबेल के लिए चुना गया है, वे दोनों बच्चों के हकों की खातिर काम करते हैं। नोबेल कमेटी के चेयरमैन थोरबजोर्न जेगलैंड ने इस अवसर पर बिल्कुल सही कहा कि 'ये वास्तव में वे लोग हैं, जिन्हें अलफ्रेंड नोबेल ने अपनी वसीयत में शांति के मसीहा कहा था' यह और भी सुखद है कि पुरस्कार पाने वाली दोनों हस्तियों में एक भारत तथा दूसरी पाकिस्तान से है।

मलाला यूसफजई, जो पाकिस्तान में लड़कियों की शिक्षा की पैरोकार है, को महज 17 साल की उम्र में यह पुरस्कार दिया गया। यह पुरस्कार पाने वाली वह अब तक की सबसे कम उम्र की शख़्स हैं। आपको याद होगा कि वर्ष 2012 में मलाला को स्वात घाटी (पाकिस्तान) में तालिबान बंदूक धारियों ने स्कूल जाते हुए गोली मार दी थी। पुरस्कार लेने के दौरान दिए अपने भाषण में मलाला ने कहा कि 'पिताजी को धन्यवाद, उन्होंने मेरे पर नहीं कतरे, मुझे उड़ान भरने दी। मां को शुक्रिया, उन्होंने सब्र रखने और हमेशा सच बोलने की प्रेरणा दी। मैं साढ़े छह करोड़ लड़कियों की आवाज हूं। मैं अपनी कहानी बता रही हूं, इसलिए नहीं कि वह सबसे अलग है, बल्कि इसलिए कि वह सबसे अलग नहीं है। हर बच्चे को शिक्षा का अधिकार और महिला को बराबरी का हक मिले। मेरे पास दो विकल्प थे। या तो चुप रहो या आवाज उठाओ। मैंने दूसरा विकल्प चुना। हाथ में बंदूक देना आसान है, किताब देना मुश्किल है। टैंक खरीदना आसान है, किताब खरीदना मुश्किल है। दुनिया के देश लड़ाई के लिए तो ताकतवर हैं, लेकिन शांति के लिए कमजोर हैं'

> **मैं अपनी कहानी बता रही हूं, इसलिए नहीं कि वह सबसे अलग है, बल्कि इसलिए कि वह सबसे अलग नहीं है...*मलाला***

'बचपन बचाओ' आंदोलन के कैलाश सत्यार्थी को बाल अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए यह पुरस्कार दिया गया। उन्होंने अब तक 80 हजार बच्चें को आजादी दिलवाई है। उन्होंने इस अवसर पर कहा - 'मैं उन बच्चों का स्मरण करता हूं, जिनकी मुक्ति की पहली मुस्कराहट में मैंने उनके चेहरे पर ईश्वर को मुस्कराते हुए देखा है। गुलामी की जंज़ीरें आजादी की इच्छा से कभी भी मजबूत नहीं हो सकतीं। किसी भी सभ्य समाज में बच्चों के खिलाफ अपराधों के लिए कोई जगह नहीं है। हर बच्चा पूरी तरह से आजाद हो। खुलकर हंसने और रोने के लिए, बड़ा होने के लिए, स्कूल जाने और सपने देखने के लिए आजाद हो। बच्चे के सपनों को खारिज करने से बड़ी कोई हिंसा नहीं है। मैं नहीं जानता कि दुनिया इतनी गरीब है। दुनिया भर की सेनाओं पर एक हफते में होने वाला खर्च हमारे सभी बच्चों को क्लासरूम दिला सकता है।'

घर से मस्जिद है बहुत दूर
चलो यूं कर लें,
किसी रोते हुए बच्चे को हंसाया जाए

★★

23 मार्च शहीदी दिवस पर विशेष

भगत सिंह का ब्यान

रामधारी खटकड़

भगत सिंह न्यूं बोलया जज तै, फांसी तै न डरते रै
देश की खातिर जान देणिये, मरकै भी ना मरते रैं।

खून खराबा काम नहीं म्हारा, दूर जुल्म को करणा सै
देश की माटी लागै प्यारी, उसकी खातिर मरणा सै।
अंग्रजां तै ताज छीन कै, भारत–मां पै धरणा सै
बाजुआं मैं ताकत सै म्हारे, नहीं और का शरणा सै।
जुल्मी ते हम टक्कर लेंगे, ना घूंट सब्र का भरतें रै
देश की खातिर जान देणिये, मरकै भी ना मरते रै।

अंगेजां नै म्हारे देश की, कर दी रे–रे माटी रै
जुल्म देख कैं जनता ऊपर, मन मैं होई उचाटी रै।
ईब हुक्म ना चले तुम्हारा, सारी जनता नाटी रै
भारत माता रोएं जा ना बेड़ी उसकी काटी रै।
शोषण नै मिटावण का आह्वान जगत म्हं करते रै
देश की खातिर जान देणिये मरकै भी ना मरते रै।

माणस नै जो माणस लूट्टै, कती देश तै प्यार नहीं
जो जनता पै जुल्म करै सै, चाहिए वो सरकार नहीं।
आम आदमी सब समझै सै, मूर्ख कोय नर–नार नहीं
हिन्दू–मुस्लिम एक सैं सारे, आपस म्हं तकरार नहीं।
फूट गेर कै तुम जनता म्हं, फेर हकूमत करते रै
देश की खातिर जान देणिये, मरकै भी ना मरते रै।

किते–किते गोदाम भरे, किते भूखे बालक बिलखैं
कितनी कलियां मुरझाई सैं, बीच आधम म्हं खिलकैं।
बेचण लगे दलाल देश नै, इन गोरयां तै मिलकैं
विचार करो तुम देशवासियों 'तर्कशील' मंच पै चलकै।
'रामधारी' कह वीर बणो क्यूं ठण्डी आहें भरते रै
देश की खातिर जान देणिये, मरकै भी न मरते रैं।

लेखकों/पाठकों के लिए:–

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ–साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए ।
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता, अपनी राय e-mail : tarksheeleditor @gmail.com आदि पर भेजी जा सकती है। ई–मेल भेजते समयॅ ळ.4 हिन्दी टाईप का ही उपयोग करें।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/ अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा को सहयोग

1. मा. बलजीत सिंह ने अपनी स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति 31.1.2015 के अवस्र पर राज्य कमेटी को 1000/– रू0 एवं कुरुक्षेत्र इकाई को 500/– रू. (कुल 1500/– रू0) का सहयोग भेजा।
2. स. रतन सिंह, गांव नूरपुर बुच्ची, जिला कुरुक्षेत्र की सपुत्री गुरप्रीत कौर का विवाह दि: 25.1.2015 को मनिंदर सिंह सपुत्र स. जगतार सिंह, गांव नेसी, जिला कुरुक्षेत्र के साथ अनेक सामाजिक कुप्रथाओं को तिलांजलि देते हुए सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दोनों परिवारों ने सोसायटी को 1000/– रू. (500/– राज्य कमेटी व 500/– कुरुक्षेत्र इकाई) का सहयोग भेजा।
3. श्री हरबलास, गांव भड़ुंग पुर जिला अम्बाला ने अपने पौत्र हरजोत, सपुत्र स0 हरविंद्र सिंह के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 1000/– रू. का सहयोग भेजा।

सोसायटी सहयोग भेजने वाले सभी साथियों का हार्दिक धन्यवाद करती है ।

सम्मान

कृष्ण बरगाडी स्मृति समारोह में डा. बलवंत सिंह सिद्धु को 13वां कृष्ण बरगाडी स्मृति सम्मान प्रदान करते राज्य कार्यकारिणी सदस्य, समिती पदाधिकारी

बढ़ते कदम

संगरूर (पंजाब) में ज्योतिष विष्य पर आयोजित सैमिनार को सम्बोधित करते सुरजीत धोधर एवं उपस्थित दर्शक

भंगु ईकाई द्वारा तर्कशील साहित्य वाहन को प्रचार हित रवाना किया गया

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera Bye Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55

Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

आर. पी. गांधी प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 50, लक्ष्मी नगर, जिला यमुना नगर - 135001 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर -135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।